का आदमीज़ाद है कि इसके सानी न देखा न सुना ग़रज़ फ़िर उसी तरह से हातम को उस बूढ़े के पास पहुंचा
दिया वह उसी हालत में पड़ा था इतने में हातम नें पुकार कर कहा कि ऐ पीरमर्द में वह घास ले आया।
बूढ़े ने कहा शाबाश अब लाज़िम है कि तू अपने हाथों से इसको मल कर दो तीन क़तरे मेरी आंखों मे टपका
दे हातम ने वही किया पहले तो उसकी आंखें उबल आईं फिर नीली हो गईं आख़िर पानी ख़ुश्क गया औ
रौशनी हो गई वह हातम के पांव पर गिर पड़ा और मिन्नत करने लगा उसने भी उसे गले लगा लिया औ
र कहा भाई वास्ते ख़ुदा के क्या कहता है मैं ने ख़ुदा की राह में कमर बांधी है जो काम मेरे हाथ से निकलता
है मैं उसे ग़नीमत समझता हूं और अपनी बेहतरी समझता हूं पीरमर्द ने कहा कि ऐ जवांमर्द मेरे घर
में बहुतसा ज़र औ जवाहर है तू वहां चल और जिस क़दर चाहिये उसमें से ले हातम ने कहा कि मुझे
हरगिज़ ज़र औ जवाहर दर्कार नहीं ख़ुदा के फ़ज़्ल से मेरे घर में बेशुमार है मैं उसी को ख़ुदा की राह में
ख़र्च करता हूं तेरा माल ले कर क्या करूं यह कह कर वह पीरमर्द से रुख़सत हुआ और परीज़ादों के कं
धे पर सवार हो कर बाद दस रोज़ के शहर शाहाबाद में आया तब परीज़ादों ने कहा कि ख़ुदावन्द आप
अपनी मोहर से एक रसीद लिख दीजिये कि हम बादशाहज़ादी को दें कि उनकी दिलजमई होवे हातम ने
एक रसीद अपने अहवाल समेत लिख के उनके हवाले की वे उधर उड़े यह शहर में दाख़िल हुवा और
मुनिरशामी से मुलाक़ात कर के निहायत ख़ुश हुवा बाद दो चार घड़ी के दोनों मुत्तफ़िक़ होके हुस्नबानू के
घर आये वह एक मकाने पाकीज़ः में परदे डाल के बैठी और उनको बाहर जवाहर की चौकियों पर बड़ी इ
ज़्ज़त से बिठलाया और अहवाल पूछा हातम ने तमाम औ कमाल बयान किया हुस्नबानू ने उनकी ज़ियाफ़
त की तैयारी की दस्तरख़्वान बिछवा दिया तरह बतरह के खाने चुनवा दिये और क़िसम क़िसम के मेवे
रखवाये हंसी ख़ुशी उन्होंने खाना खाया और रात की रात वहीं आराम किया सुबह को हातम ने पूछा कि
ऐ हुस्नबानू अब कौनसा मतलब है उसने कहा कि एक शख़्स कहता है कि सच्चे को हमेशः राहत है वह
क्या सच बोला है और क्या आराम पाया है उसकी ख़बर ला हातम ने कहा कि तुम जानती हो वह किस
तरफ़ को है हुस्नबानू बोली कि मैंने अपनी दाई से सुना है कि शहर क़ुर्रम में है पर यह नहीं जा
नती कि वह शहर किस तरफ़ को है हातम ने कहा कि ख़ैर ख़ुदा यह भी मुश्किल आसान करेगा॥

॥चौथा सवाल हातम के जाने का और इस बात की ख़बर लाने का कि सच को हमेशः राहत है॥

अल्क़िस्सः हातम हुस्नबानू से रुख़सत हुवा और शहर से बाहर निकला बाद कई मंज़िलों के एक पहाड़
की तलहटी में जा पहुंचा वहां क्या देखता है कि एक दर्या बड़ा कोह से भरा हुवा निहायत ज़ोर औ शो
र से बह रहा है यह उसको देख कर मुतफ़िक्कर हुवा और अपने जी में कहने लगा कि मैं ने कभी खाल पा
नी का दर्या नहीं देखा इसको दर्याफ़्त किया चाहिये कि यह कहां से आता है और इसके बहने का सब
ब क्या है यह इरादा कर के उस तरफ़ को रवानः हुवा इतने में एक दरख़्त आलीशान साया देनेवाला

र पड़ा जब उसके पास पहुंचा देखा कि हरऐक डाली में उसके। सैकड़ों सिर आदमियों के लटकते हैं औ
र उसके नीचे ऐक तालाब निहायत ख़ुशक़ितः मुरब्बअ है और उसीका पानी जंगल की तरफ़ चला जाता
है यह उस दरख़्त के तले बैठ गया और जितने सिर उस दरख़्त के तले लटकते थे बेइख़्तियार खि
लखिला के हंसने लगे यह देख कर हैरान रहा कि कटे हुऐ सिर हंसते हैं और उन से क़तरे लोहू के
टपक टपक कर उसी तालाब में गिरते हैं और पानी ख़ूं आलूदः होकर दर्या में चला जाता है इतने में न
ज़र उसकी उस सिर पर जा पड़ी जो सब सिरों से ऊपर लटकता था यह उसको देखते ही बेहोश होगया
जब होश में आया अपने जी में कहने लगा कि इस हक़ीक़त को बेदर्याफ़्त किये मैं क्योंकर किसी के
साम्हने बयान करूंगा पस लाज़िम हैं कि थोड़े दिन यहां रहिये और इस अहवाल को बख़ूबी दर्या
फ़्त करिये कि यह क्या भेद है यह इसी फ़िकर में तमाम दिन वहां रहा इतने में रात हो गई यह ऐक को
ने में छिप कर बैठ रहा तो देखता क्या है कि सारे सिर टहनियों से छुट कर तालाब में गिर पड़े और।
हातम उस तालाब की तरफ़ देखता था कि उसमें ऐक निशस्तगाह निहायत पाकीज़ः थी फ़र्श बाद
शाहानः उस पर बिछ गया और ऐक तख़्त ज़र्री भी वहां पुरतकल्लुफ़ ऐक क़ायदे से रक्खा गया बाद
कई घड़ी के कितनी परियां नाज़नीं निकलीं उन्ह में ऐक परीज़ाद निहायत ख़ूबसूरत थी आते ही ना
ज़ओ ग़रूर से उस तख़्त पर बैठ गई हातम ने जो ग़ौर कर के देखा मालूम किया कि वही सिर है जो
सब से ऊंचा था फिर कितनी परियां गिर्द उसके कुर्सियों पर बैठ गईं और कितनी हाथ बांध कर बाअदब
खड़ी होरहीं इतने में ताइफ़ा साज़ मिला कर आ खड़ा हुआ और उस तख़्त के साम्हने नाचने लगा
हातमतमाशा देखता था और फ़िकर करता था कि इलाही यह क्या भेद है जब आधी रात गई दस्तरख़्वान बिछा औ
र क़िसम क़िसम के खाने उस पर चुने फिर उस तख़्त निशीन ने ऐक ख़वास से कहा कि तू ऐक ख़्वान खा
ने का तैयार कर के उस मुसाफ़िर को जो कोने में बैठा है दे आ वह उसी सूरत से तैयार कर सिर पर ।
धर हातम के पास ले गई और कहने लगी कि यह हमारे सरदार ने तुझे भेजा है हातम ने कहा कि तेरा
औ तेरे सरदार का क्या नाम है वह बोली कि तुझे मेरे औ मेरे सरदार के नाम से क्या काम है अगर भूखा
है तो खाना खा हातम बोला कि जब तक अपना नाम न बतलावेगी और अपने सरदार का । हरगिज़ न
खाऊंगा यह बात सुन कर वह फिर आई और मलकः से अर्ज़ करने लगी कि वह मुसाफ़िर खाना नहीं खा
ता और कहता है कि जब तक तू अपना नाम औ अपने सरदार का और अहवाल इस जमाअत का कि।
इस तालाब से निकली है ज़ाहिर न करेगी मैं तब तक कुछ न खाऊंगा मलकः ने कहा तू जा कर कह कि तू।
पहले खाना खा तो मैं भी कहूंगी जब वह खाना खाचुके कहियो आज नहीं कल्ह वह हातम के पास आई।
और जो कुछ बादशाहज़ादी ने कहा था अमल में लाई ग़रज़ हातम ने चाहा कि उसका हाथ पकड़ ले कि व
ह भाग कर तालाब में कूद पड़ी और मलकः के पास जा खड़ी हुई और शाहज़ादी तमाम रात नाच औ राग

में मशग़ूल रहीं जब सुबह हुई सब की सब तालाब में कूद पड़ीं बारे ऐक साअ़त के ओतने ही सिर पानी
पर तैरे आये और आपही आप तालाब में से उछल उछल कर दरख़्त की डालियों में लटक गये और व
ह सिर बदस्तूर सब से ऊंचा जा लटका फिर सब के सब हंस पड़े हातम भी उस कोने से देखता था लेकिन
सरदार के सिर से टकटकी लगाये था और दिलमें कहता था कि अगर इस भेद को पाऊं तो इस नाज़नी
न से निकाह करूं और कहता था कि इलाही यह क्या भेद है हर रात यह जीती हैं और दिन को इस दर
ख़्त में लटक जाती हैं शायद यह काम बसबब जादू के यानि तिलस्म से होता है इन्हीं सोचों में दिन आख़ि
र हो गया और शाम हुई रात के वक़्त वे सिर फिर तालाब में गिरे और बदस्तूर साबिक़ फ़र्श बिछ गया
और मजलिस आरास्तः होगई परीज़ादें और उनकी बादशाहज़ादी तख़्त ओ कुर्सियों पर जा बैठीं।
नाच शुरू हुआ और हातम मुन्तज़िर था कि आज की रात का वादा किया है देखिये आ कर पूरा कर
ती है या नहीं जब आधी रात हो गई तब उसी तरह से दस्तर ख़्वान बिछा खाना तरह बतरह का
चुना गया शाहज़ादी ने फिर ऐक ख़्वान खाने का उसी परी के हाथ भेजा वह ले कर हातम के पा
स गई वह उसको देखते ही कहने लगा कि ऐ परी तूने कहा था कि मैं कल आ कर अहवाल कहूं
गी और नाम बताऊंगी पस लाज़िम है तुझको आज अपना वादा पूरा कर कि मैं कई दिन का भू
खा हूं खाना खाना खाऊं उसने यह हक़ीक़त फिर जा के मल्कः से अर्ज़ की बादशाहज़ादी ने फ़र्मा
या उससे जा कर कह कि जब तू मल्कः के हुज़ूर में आवेगा उस वक़्त यह भेद खुल जायगा लेकिन।
पहले खाना खा बाद उसके मेरे साथ हो हातम ने यह बात सुन कर खाया और उसके साथ हो लिया।
वह ग़ोते मार बदस्तूर क़ायम उसी जगह जा के खड़ी हुई हातम ने भी आंखें बन्द कर के तालाब में
ग़ोता मारा और ज़मीन की तह को जो उसके पांव लगे आंखें खोल कर देखा कि न वह तालाब है न व
ह दरख़्त है न वह परियां हैं पर आप ऐक लक़ ओ दक़ जंगल में पड़ा है निदान नारः मारने लगा और
आहें भरने सिर पर ख़ाक डालने। ग़रज़ इसी हालत में सात रात दिन गुज़र गये कि ख़ुदाय करीम ने
अपने फ़ज़्ल ओ करम से हज़रत ख़्वाजः ख़िज़र को हुक्म किया कि तुम उस जंगल में जाओ जहां हात
म सौदाइयों की तरह से आहें भर भर कर रो रहा है मदद करो किस वास्ते कि आलम में वह बहुतसी
नेकी करेगा और नेक नामों में मशहूर होगा ख़्वाजः ख़िज़र सब्ज़ कपड़े पहने हुऐ और आसा हाथ में
लिये उसकी दाहनी तरफ़ से नमूद हुए हातम उनको देख कर और भी आहें भरने और नालः करने
लगा उन्होंने यह हाल देख कर अपना हाथ मेहरबानगी से उसके मुंह पर फेरा हातम हालत असल
ी पर आगया और कहने लगा कि पीर मुर्शिद यह कौन सा मकान है उन्होंने कहा कि इसको सहराए
बेख़बर बस कहते हैं वह फिर कहने लगा कि मैं इस जगह क्योंकर आ रहा हज़रत ने फ़र्माया कि तू
ने कल्लानी परी के साथ ग़ोता मारा था वह तालाब तिलस्म के हुक्म से बना है और असर उसका यही है

के जो आदमी उस में गोता मार सो वहां आ पड़े चुनांचि वह मकान इस जगह से तीन सै कोस है यह इस बात
के सुनते ही खाक पर गिर पड़ा और रो रो कर कहने लगा कि है है मेरे दिल को क्या हो गया और क्यों कर मैं वहां पहुंचूंगा अगर
मेरी मुराद न मिलेगी तो मैं तड़फ कर मर जाऊंगा ख़्वाजः ने पूछा तेरी मुराद क्या है उसने कहा कि जि
स जगह था मैं वहीं जा पहुंचूं उन्हों ने फ़र्माया कि तू मेरा आसा पकड़ और आंखें बंद कर ले उसने उ
न्हीं के कहने के मुवाफ़िक किया बाद ऐक दम के पांव उस्का ऐक तह पर लगा उसने अपनी आंखें
खोल कर देखा तो वही जंगल और वही दरख़्त और वही सिर डालियों पर लटकते हैं बेइख़्
तियार उस दरख़्त के पास आया और ऊपर चढ़ने का क़सद किया दरख़्त हिलने लगा बल्कि
नज़दीक था कि गिर पड़े हातम उस्की टहनी से लिपट गया पर वह उसी तरह से हिलता रहा यह
जो हुक वहां से और ऊपर बढ़ा ऐक तड़ाके की आवाज़ आई दरख़्त बीच से फट गया और हात
म कमर तक उस में समा गया जब देखा उसने कि अब कुछ नहीं हो सकता हैरान हुवा और डरा
कि यह क्या आफ़त पड़ी है ऐक मर्तबः मैं उनके लिये तालाब में गिरा तो इस मुसीबत में पड़ा अ
ब जो दरख़्त पर चढ़ने का क़सद किया तो यों फंसा जितना ज़ोर करता हूं कि ऊपर आऊं नीचे ही
चला जाता हूं आख़िर सब बदन उस्का दरख़्त के अंदर छिप गया फ़क़्त आंखें बाहर रह गईं उ
सी वक़्त हज़रत ख़्वाज़ख़िज़र फिर पहुंचे और कहने लगे कि ऐ जवान अपने तईं बला में क्यों डालता
है मगर ज़िन्दगी से सेर हो चुका है हातम का अहवाल तंग था कुछ न बोला तब ख़्वाज़ख़िज़र ने उ
सपर रहम खा कर ऐक आसा उस दरख़्त पर मारा कि वह मानिन्द मोम के हो गया हातम उसमें से
निकल पड़ा पर सुस्त था बाद कितनी देर के होश में आया हज़रत ख़्वाज़ख़िज़र ने फ़र्माया कि ऐ
हातम तू अपने ऊपर इस क़दर रंज उठाता है और मुसीबत डालता है तुझको उनसे क्या मुद्दा है उ
सने कहा कि मैं किसी सूरत से उनका अहवाल दर्याफ़्त करूं ख़्वाजः ने फ़र्माया कि यह सरदार शाम
अहमर जादू की बेटी है और इस मकान का नाम कोह अहमर है ऐक दिन इस लड़की ने अपने बा
प से ख़ाविन्द कर ने का ज़िकर किया था कि बाबा जान अब मैं जवान हुई हूं शादी कर दो इस बात को
सुन कर वह गुस्सः हुवा और उस लड़की को उस रोज़ से इस तिलस्म के दर्या में डाल दिया है और यह
तालाब और यह दरख़्त जादू का है और यह सिर जो सब सिरों से ऊपर लटकता है उस्की लड़की
का नाम मल्क ज़र्रींपोश है और वह कोह जादू यहां से तीन सौ कोस है पर यह जादू के ज़ोर से ऐक
ही दिन में वहां जा सकती है और शाम अहमर जादू जब तक जीता रहेगा तब तक उसको न ब्याहेगा औ
र यह भी तब तक इसी हालत में गिरफ़्तार रहेगी किसी के हाथ न लगेगी यह सुन कर हातम ने कहा
कि मालूम हुवा मेरी क़िस्मत में इसी जगह मरना लिखा है जो ख़ुदा ने मुझको यहां पहुंचा और शा
म अहमर जादू के जादू में फंसाया हज़रत ख़्वाज़ख़िज़र ने कहा कि जो तू उस्की बेटी की चाह रखता

है तो आपसे आप अपने तईं बला में डालना है जिस्से बेहतर यही है कि उस्का ख़याल छो
ड़दे हातम ने कहा कि मैं अपनी जान से हाथ धो चुका हूं जो होनी हो सो हो जब तक यह ना ज़
नीन मेरे हाथ न लगेगी तब तक मैं इस बात से बाज़ न आऊंगा ख़्वाज ख़िज़र ने कहा कि
आख़िर तेरी आर्ज़ू क्या है उसने कहा कि मतलब मेरा यह है कि इस दरख़्त पर च
ढूं और उनके बराबर पहुंच कर हमकलाम होऊं हज़रत ने फ़र्माया कि ऐ अज़ीज़
दीदः ओ दानिस्तः अपने तईं बला में लेजाने से क्या फ़ायदा है बाज़ आ हातम ने
अर्ज़ की कि नफ़ा मुझको इसी में है कि ऐकदम इन से जुदा न होऊं और जो पहले
रोज़ से मेरी क़िस्मत में यह मुसीबत ओ परेशानी लिखने वाले ने लिखदी
है तो सुख कहां से पाऊंगा इस बात को सुन कर हज़रत ख़्वाजः ख़िज़र ने अप
ना असा उस दरख़्त पर मारा और इस्मे आज़म पढ़ कर फ़र्माया कि ले अ
ब इस दरख़्त पर चढ़ जा यह कह कर आप उस्की नज़रों से ग़ायब हो गये हा
तम दरख़्त पर चढ़ गया जब उस नाज़नीन के सिर के बराबर पहुंचा तब
उस्का सिर भी उन्हीं सिरों के बराबर लटकने लगा और पेड़ तालाब में गिर
कर डूब गया आस्मान से ऐक गोगा उठा और ऐक शोर ज़मीन से बुलन्द हु
आ जब आफ़ताब छिपा और रात हो गई वे सिर सब के सब हातम के सिर समे
त उस तालाब मे गिर पड़े और बदस्तूर साबिक़ जिस्म पकड़ कर जमः होके
कारबार करने लगे फिर मल्कः भी तख़्त पर आ बैठी और हातम हाथ बांध
कर तख़्त के ऐक कोने मे लग कर खड़ा हो रहा पर बेहोश था यह न जानता था
कि मैं कहां आया हूं और कहां था और अब कहां जाऊंगा इतने में मल्कः ज़रीं
पोश ने मे कहा कि ऐ जवान सच कह कि तू कौन है और क्या नाम रखता है और
कहां से आया है उसने कहा कि मैं भी ऐक तेरे ख़ादिमों से हूं और इसी तालाब से
निकला हूं उसने उस्की बातों से मालूम किया कि यह मुझ पर आशिक़ हुआ
है इस बात को समझ कर कुछ न बोली और नाच रंग मे मश्ग़ूल हुई जब आ
धी रात गई तब ऐक दस्तरख़्वान आलीशान बिछा और खाने हर ऐक तरह के
मज़ेदार निमकी ओ शीरीं ओ मेवे रंग बिरंग के उस पर चुन दिये और उ
सने हातम को अपने पास बिठा लिया और सुथरे सुथरे खाने उस्के आगे
रख दिये और निहायत मेहरबानी से कहा कि ऐ जवान कुछ खा पानी पी हात
म खाना खाने लागा पर बेख़बर था कि मैं कौन हूं और किस वास्ते आया हूं

औरकहां जाऊंगा जब खाने से फ़ारागत हुए नाच रागरंगफिर होनेलगा औररात भर यही आलमरहा
जबसुबह हुई सबमिर हातमके सिरसमेत उस दरख़्त के डालियों पर फिर उसीसूरत से जा लटके औ
र धड़ उनके तालाब में ग़रक़ होगये इसी तरह से कईरोज़ गुज़रे एक दिन हज़रत ख़्वाजः ख़िज़र उ
स्की मदद को पहुंचे और उसके सिर को अपने आसे से उतारा और धड़ को तालाब से निकाला फि
र यहां तक इस्मे आज़म पढ़ा कि उसके तने बेजान में जान आई और जादू दूर होगया उसने आं
खें खोलकर देखा कि वही मर्द बुज़ुर्ग हाथमें आसा लिये सिरहाने खड़ा है उन के पांव पर गिर प
ड़ा और कहने लगा कि हज़रत सलामत इस हालत में तुम मुझे गिरफ़्तार देखते हो और कुछ ग़ौ
र नहीं करते उन्होंने कहा ऐ जवान तू अबतक कहां था वह बोला कि मैं इस दरख़्त पर उस ना
ज़नी के तमाशे में मशगूल था ख़्वाजः ने पूछा कि अबभी उस नाज़नीन की आरज़ू तेरे मन में है उस
ने कहा कि वास्ते ख़ुदा के इतनी दस्तगीरी करो कि मैं अपनी मुराद को पहुंचूं नहीं तो इसी बला में गि
रफ़्तार रहूंगा बल्कि मर जाऊंगा ख़्वाजः ख़िज़र ने कहा कि जबतक उसका बाप न मारा जायगा
तबतक इस गुलेख़ूबी को कोई न पावेगा क्योंकि वह जादूगर है उसने इसको जादू में गिरफ़्तार
कर रक्खा है और उस्का यह तौर है कि जो कुछ मैं कहूं तू उसको बजा ला उसने अर्ज़ की मैं आप
के हुक्म से बाहर नहीं और न होऊंगा यह सुनकर उन्होंने फ़र्माया कि मैं तुझे इस्मे आज़म
सिखला देता हूं चाहिये यों कि तू इहतयात से याद रक्खे और नापाकी से अपने तईं बचा
वे झूठ न बोले हररोज़ नहाया करे तमाम दिन रोज़े से रहे उसने यह सब बातें क़बूल कीं तब
उन्होंने इस्मे आज़म सिखला कर कहा उस पहाड़ की तरफ़ जा कुछ अंदेशा जी में मत ला वह
बोला कि मैं कोहे अहमर पर क्योंकर जाऊं ख़्वाजः ने कहा कि तू मेरा आसा पकड़ और आंखें अ
पनी बंद कर उसने उन्हों के कहने बमूजिब किया बाद ऐक दम के पांव उस्का ज़मीन पर जा ल
गा आंखें खोल कर जो देखा तो कोई चीज़ नज़र न पड़ी मगर ऐक पहाड़ आलीशान दिखा
ई दिया और उसपर लाला बेमौसम फूला हुवा है देखकर निहायत ख़ुश हुवा और उसपर च
ढ़ने लगा क़दम के रखते ही वहां के पथ्थरों ने उसके पांव ऐसे पकड़े कि फिर उठाना मुश्कि
ल होगया जब निहायत आजिज़ हुवा दिल में कहने लगा कि इस्मे आज़म पढ़ा चाहिये प
ढ़ते ही उसके पांव पत्थरों से छूट गए तब उसने मालूम किया कि कोहे अहमर यही है
फिर तो इस्म को पढ़ता हुवा चढ़ गया इतने में ऐक मैदान बड़ा नज़र आया आगे बढ़ा ऐक
तालाब पाकीज़ः निहायत साफ़ सुथरा देखलाई दिया गिर्द उसके बहुत से दरख़्त मेवेदार
कि कभी देखने में नहीं आये थे नज़र पड़े हातम ने कपड़े उतार कर उसमें ग़ुसल किया फि
र कपड़े पहन कर इस्मे आज़म पढ़ने लगा उस्की बरकत से तमाम जानवर जादू के क्या
दरिन्दे क्या परिन्दे भाग गये यह ख़बर शाम अहमर को पहुंची कि जानवर सब के सब
भागे हुए चले आते हैं उसने नजूम की किताब देखी मालूम किया कि एक दिन हातम

इसम इस पर आवेगा और तमाम जादू हमारा झूठा करेगा यह वहीहै जो कहां तालाबप
र बैठकर इस्मे आज़म पढताहै और कोई जादू उस इस्म के पढनेवाले को असर नहीं करता
क्या तदबीर कीजिये कि वह इस्म भूलजावे यह सोचकर एक मंत्र पढा और चारों तरफ़
फ़ूंका कि एक गर्द का गुब्बार परियों का नमूद हुवा उनमें एक परी मल्कः ज़रींपोश की सूरत
थी सुराही और प्याला हाथमें लिये हुवे दिखाई दी शाम अहमर जादू ने कहा कि तुम जा
ओ हातम को शराब का प्याला पिलाकर तमाम करो वह सूरत सब परियों समेत उस ता
लाबपर जापहुंची हातम देखकर हैरान हुवा कि यह सब तो उस रेगिस्तानमें लूटकनीं थीं
यहां क्योंकर आईं फिर दिलमे सोचा कि यह उसके बाप का मकान है आ निकली होंगी इन
नेमें सूरत मल्कः ज़रींपोश हातम के पास आई और कहने लगीं कि ऐ हातम तूने बहुत
सेरंज और दुख खींचीहैं आज मेरे बापने मुझे इस बाग़ की सैर को बुलवा भेजाहै मैं तुझे
देखकर निहायत खुश हुई यह बात कहकर उसके ज़ानू से लग बैठी और शराब की सुराही
से प्याला भरकर उसके हाथ में दिया हातमने प्याला उससे लेकर दिलमें कहा कि माशूक़ः की
सोहबत ग़नीमतहै हाथसे न दिया चाहिये आख़िर मुंहसे लगा दिया वह मदहूश वहीं
स्याह देव होकर हातम को बांधकर शाम अहमर जादू के पास लेगई उसने उसको देखते
ही सिर नीचा कर लिया और दिलमें कहा कि ऐसे जवान को मारना महज़ नादानी है लेकि
न यह दुश्मनहै इसे कुछ सज़ा दिया चाहिये नौकरों से फ़र्माया कि इसको चाहे आतशी
नेमें डालदो उसके चाकरों ने हातम को उसके कुवे में डाल दिया और हज़ार मनी एक सिल
लोहेकी लाल करके उसके मुंह पर ढांकदी ग़रज़ हातम लुढकता पुढकता चला जाता था
लेकिन वह मोहरा रीछ की बेटी का जो उसके मुंहमें था कुवा सिल समेत दमबदम सर्द हो
ता जाता था अल्क़िस्सः शाम अहमर के लोगों ने खबर की कि हातम चाह आतशीमें
जलकर खाक स्याह होगया तब उसने नजूम की किताब देखकर मालूम किया कि यह झूठ
कहतेहैं हातम एक मोहरे के सबबसे से ही और सलामत है उसको तो आंच भी न लगती
फिर सोचने लगा कि वह मोहरा किसी तरहसे लिया चाहिये जबतक वह उसके पास रहे
गा कोई आफ़त उसे न पहुंचेगी पर मुश्किल यहहै कि वह बज़ोर हाथ नहीं लग सक
ता मगर वह आपसे दे तो हाथ लगे यह अंदेशा करके तावेदारों से कहा कि जल्द उ
सको कुवेसे निकालकर उसी तालाबपर लेजावें बमूजिब हुक्मके उसको वहीं लेगये
हातमने आते ही ग़ुसल किया और उसी चश्मे के कनारे पर बैठकर इस्मे आज़म पढ
ना शुरू किया और सिजदे शुकर बजा लाया और उधर शाम अहमर जादूने मंत्र
पढना शुरू किया बाद एक साअतके वही परियां मल्कः ज़रींपोश की सूरत समेत हा
तमके सामने आईं उस मल्कः ज़रींपोश की सूरत ने आगे क़दम बढ़ाकर हातम से कहा

कि ऐ यार अब मैं तेरे पास न बैठूंगी दूरही से दीदार देखूंगी अस रोज़ जो मैं तेरे पास बैठी थी मेरे
बापने स्याहदेव को भेज कर तुझे पकड़वा मंगाया था ख़ुदा ने तुझे उस बला से नजात दी अगर मैं ते
रे पास बैठूं और बाबा जान सुने तो फिर तुझसे वैसाही सलूक करें हातम ने उसका हाथ पकड़कर
अपने पास बैठलाया तब वह नाज़नीन नाज़ो अदा से कहने लगी कि ऐ हातम तू मुझे सच मु
च चाहता है उसने कहा जान औ दिल से भी ज़ियादा अज़ीज़ रखता हूं तब वह बोली कि एक चीज़
मैं तुझसे मांगूं अगर देवे तो जानूं उसने कहा वह कौनसी चीज़ है मैं तो मुफ़्लिस हूं ज़र और ज
वाहिर कुछ अपने पास नहीं रखता यह सुनकर वह कहने लगी कि मैं उस लिये के बेठीका मुहरा
चाहती हूं ज़र औ जवाहिर की ख़्वाहिश नहीं रखती हातम ने कहा तूने क्योंकर जाना कि वह
मोहरा मेरे पास है वह बोली कि मेरे बापने नजूम के रू से बताया है हातम ने कहा वह मोहरा
दोस्त से ज़ियादा अज़ीज़ नहीं चाहता था कि निकालकर उसके हवाले करे कि एक पीर मु
र्द ने दाहिनी तरफ़ से डांटा कि ऐ नादान क्या करता है मोहरा देगा तो निहायत पशेमान होगा
बल्कि जान से भी जाता रहेगा यह बात सुनकर हातम ने कहा ऐ बुज़ुर्ग तू कौन है जो कार ख़ैर
से उज़र रखता है यह मोहरा मेरे किस काम आवेगा जो माशूक़ः को न दूं मसल मशहूर है फूल
वही है जो मुढ़े चढ़े उसने कहा कि मैं वही मर्द हूं कि जिसने तुझे इस्मे आज़म सिखाया था हा
तम उठकर उनके पांव पर गिर पड़ा और कहने लगा कि या हज़रत मैं जिस नाज़नीन को चाहता हूं
आपके तवज्जुह से हाथ लगी हज़रत ने फ़र्माया कि ऐ नादान यह क्या कहता है हरगिज़ इस बात
का ख़याल अपने दिल में न ला यह मल्कः ज़रींपोश नहीं नादान मत हो यह तसवीर जादू
की है पहिले इसी को शाम अहमर जादू ने तेरे पास भेजा था और इसी के हाथ से जादू के शराब
का प्याला पिलवाकर तुझे चाहे आतशीन में डलवा दिया था बदौलत इस मुहरे के तू जीता ब
चा और यह मूरतें जो तेरे पास आई हैं सिर्फ़ जादू की हैं इस्मे आज़म पढ़ अगर मल्कः ज़रींपोश
है तो बैठी रहेगी और अगर जादू की तसवीर है तो जल जायगी हातम ने उनके क़दम चूम लि
ये और तालाब से मुंह हाथ धो कुल्ली करके ज्योंहीं इस्मे आज़म पढ़ा वहीं उस जमाअत का
रंग ज़र्द हो गया और बदन थर्थराने लगा और मल्कः की तसवीर भी कांपने लगी आख़िर हर ए
क के सिर पर एक एक शोला आग का पैदा हुआ कि वह शमअ की तरह जलने लगीं बाद एक द
म के सब जलकर राख हो गईं हातम अफ़सोस करने लगा कि यह तसवीर रही मुझको ग़नीमत
थी उसकी जगह मैं इसको देखकर अपने दिल बेक़रार को तसल्ली देता था अब किस तरह से स
बर करूंगा और क्योंकर जी को थांभूंगा सिवा रोने के कुछ चारा नहीं आख़िर बेइख़्तियार हो
कर रोने लगा इतने में यह ख़बर शाम अहमर जादू को पहुंची कि वह सब सूरतें जादू की जल
कर ख़ाक हो गईं इस बात के सुनते ही उसने जादू के ज़ोर से शैतान को बुलवाया और निहाय
त ताज़ीम करके अपने पास बैठलाया और कहा कि मैं हातम के हाथ से निहायत आजिज़

कुछ बन नहीं पड़ती क्या करूं शैतान ने कहा कि ऐ शाम अहमर अभी उसकी उमर बहुत बा
क़ी है वह कब किसी के हाथ से मारा जाता है बेहतर यह है कि तू अपनी बेटी उसे ब्याह दे वह बोला
कि जब तक मैं जीता हूं तब तक यह काम हरगिज़ न करूंगा शैतान ने कहा कि अगर यही बात
तेरे दिल में थी तो मुझे क्यों तकलीफ़ दी वह बोला कि उसने बहुत सी सूरतें हमारी जला कर खा
क कर दी हैं इस्म ख्वार इसबात का हूं कि तू अपने मदद से इस्म आज़म को उसके दिल से भुला
दे उसने कहा कि मैं इस जगह कुछ नहीं कर सकता क्योंकि हज़रत ख्वाजे ख़िजर उसके निगह
बानी और मदद के वास्ते हक़ताला की तरफ़ से तैनात हुऐ हैं वह इस्म आज़म नहीं भूलने का
और मुझको इतनी कुदरत नहीं जो उसके दिल से भुलवा दूं पर यत्न हो सकता है कि वह ग़ाफ़ि
ल सो जाय औ नापाक होय यह बात सुनते ही अहमर जादू बहुत खुश हुवा और उसके पांवों
पर गिर पड़ा शैतान दिलासा देकर ग़ायब हो गया और हातम को ख्वाबे ग़फ़लत में डाल कर
नापाक करवा ही दिया वह घबराकर चौंक पड़ा और अपने तईं नापाक देखकर क़सद ग़ुस
ल का किया जादूगर घात में लगा ही रहे थे क़ाबू पाकर हुनर पढ़ने लगे फिर ऐक देव स्याह
ज़मीन से पैदा हुवा और हातम की तरफ़ दौड़ा हातम नापाक तो था ही डरा कि इससे क्यों कर
लडूं यक़ीन है कि अब मारा गया इतने में देव आपहुंचा और उसको पकड़ कर शाह अहम
र जादू के पास ले गया वह उसे देखकर बोला कि मारना इसको सलाह नहीं क्योंकि वह मोहरा
बे काम होगा जब तक यह खुशी से न दे पस लोगों को हुक्म किया इसे तौक़ और जंजीर कर
के भारी खंभों में जकड़ दो पर सिर और मुंह खुला रहे चुनांचि उसके फ़र्मा बर्दारों ने वही किया
हातम अपने तईं गिरफ़्तार देखकर खुदा की दरगाह में गिरियाज़ारी करने लगा कि इ
लाही सिवाय तेरे इस वक़्त कोई नहीं और शाम अहमर जादू ने अपने जादूगरों से कहा
कि तुम सब इसके गिर्द बैठो औ चौकी दो बे उसका कहना बजा लाये ग़रज़ सात दिन यों हीं
गुज़र गये हातम भूख और प्यास से निहायत बेक़रार हुवा इतने में अहमर जादू आया
और कहने लगा कि ऐ हातम क्या अहवाल है उसने जवाब न दिया तब जादूगर ने कहा
कि अगर मुहरा मुझे दे तो मैं तुझे छोड़ दूं हातम बोला कि तू अपनी बेटी मेरे साथ ब्याह
दे तो अभी देता हूं इस बात को सुनकर वह निहायत ग़ुस्से हुवा जादूगरों को हुक्म दिया
कि तुम इसके सिर पर पत्थरों का मेंह बरसावो कि इसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जाय जादूगर
पत्थर हाथों में ले ले कर हातम के पास आये और कहने लगे कि अपनी जान पर रहम
कर और मोहरा दे डाल नहीं तो तेरा सिर पत्थरों से फोड़ डालेंगे हातम ने जवाब दि
या कि मैं तुम्हारे सर्दार को मारूंगा और उसकी बेटी को अपनी ख़िदमत में लाऊंगा
यह बात सुनकर वे जादूगर ग़ुस्से में हुऐ और पत्थरों के मेंह बरसने लगे और यहां तक
बरसाया कि हातम उन पत्थरों में छिप गया और वहां ऐक पहाड़ सा हो गया तब जा

तब जादूगरोंने अपने सरदारसे जाकर कहाकि हातम मर मिटा उसनेकहाकी गलत कहतेहो वह अबतलक जीताहै ओन्होंने अर्ज़की कि अगर लोहेका बदन होता तोभी खाक स्याह होजाता यहतो आदमीथा क्योंकर बचाहोगा अहमर जादूने कहाकि अगर तुमको ऐतबार नहींहो तो पथरों को सरकाकर देखलो कि कुछ उसको आसेब नहीं पहुंची जादूगरोंने पत्थरोंको सरकाके देखा तो उसको सलामत पाया झुंझलाकर फिर पत्थर यहांतक बरसाये कि उस पहाड़से दुगना होगया फिर पत्थरों को सरकाकर देखा तो उसे कुछ ज़रर न पहुंचाथा ग़रज़ सात रोज़ इसीतरह पर गुज़र गये तब अहमर जादूने लाचार होकर उसने कहा कि तुम हर रोज़ उसको इसी तरह पत्थर मारा करो और आप महलमें जाकर मन्तर पढ़नेमें मशग़ूल हुआ जब हातम भूख प्यास से आजिज़ होकर मरनेलगा तब उन चौकीदारों से कहा कि ऐ यारो तुमने इस मोहरे का ख़वास देखा यह ऐसा है कि जिसके बाइससे न मैं आगमें जला न पत्थरोंसे मरा अब जो कोई मुझको यहां से उस तालाब पर लेजायगा यह मोहरा मैं उसीको दूंगा ओन्होंने कहा कि हमें तेरा मोहरा हरगिज़ दरकार नहीं पर एक लालचीने कन अखियों से इशारा किया कि मैं तुझको उसी तालाबपर लेजाऊंगा ज़रा रात होनेदे हातमने भी इशारत से कहा यह मोहरा तुझीको दूंगा जब आधीरात होगई सब सोगये मगर ऐक वही चौकीदार उस मोहरे के लालचसे जागताथा बाद एकदमके चुपके से उठकर हातमके पास आया कि अगर तू कहै तो मैं तुझे उस तालाब पर लेचलूं हातमने कहा कि मुझको हिलने की भी ताकत नहीं चलना तो एक तरफ़ इन पत्थरों से क्योंकर निकलूं उसने कहा कि मैं अपने जादूके ज़ोरसे निकाल लेता हूं अंदेशा न कर यह कहकर मंतर पढ़ने लगा इतनेमें ऐक कालादेव पैदाहुवा वही उन दोनोंको उस तालाबपर पहुंचाकर गायब होगया हातमने पहले कपड़े धोये फिर नहाकर बदन साफ़ किया और थोड़ासा पानी पीकर तालाब से बाहर निकला कपड़े पहने तब जादूगरने कहाकि ऐ हातम मैंने तुझको उस मोहरे की लालचसे उन पत्थरोंसे निकाला और इस तालाबपर पहुंचाया अब तुझकोभी लाज़िमहै कि अपना कौल पूरा करे और मोहरा मुझे दे हातमने कहा ऐ अज़ीज़ तूने मेरे साथ नेकी कीहै मैंभी सलूक करूंगा जिसवक़्त शाम अहमरको मारूंगा यहां की बादशाहत तुझीको दूंगा उसने कहा ऐ हातम सिवाय इस मोहरेके कोई चीज़ जहानकी दरकार नहीं अगर देताहै तो वही दे हातमने कहा कि यह मोहरा मेरे एक दोस्तकी निशानी है तुझे किस तरहसे दूं और तू जो यह मोहरा मांगताहै किसके वास्ते उसने कहा मैं अपने लिये चाहता हूं हातमने कहा ऐ नादान बेवक़ूफ़ अगर तू ख़ुदाकी राह मांगता तो मैं अभी तेरे हवाले करता उसने कहा कि मेरा ख़ुदा जादूकमलाक शाम अहमर का उस्ताद है तेरे ख़ुदा के वास्ते क्यों मांगूं हातमने कहा कि ऐ काफ़िर तू बंदेको ख़ुदा कहताहै चल दूरहो मेरे सामनेसे मालूम हुवा कि तू ख़ुदाको नहीं पहचानता अब मुझको यकीन हुवा और दिलमें समझा

कि तू काफ़िर है ख़ैर क्या करूं लाचार हूं क्योंकि तूने मुझ पर यह सान किया है और बस्स
नेकी का बदी नहीं नहीं तो अपने हेकलेने की सज़ा पाता वह बोला कि मुझको तुझसे वह मो
हरें लेना कुछ मुश्किल नहीं अगर आपसे देता है तो जान तेरी बचती है नहीं तो यहां मल
के गोते इस तालाब में दूंगा कि तेरा जी नीकर जायगा हातम बोला कि ऐ मलऊन बदज़ु
दा नबकः चल दूर हो मेरे सामने से। यह मोहरें मेरा माल है तू ज़बरदस्ती क्यों कर ले सकता है
लेकिन तूने मेरे साथ भलाई किया है अलबत्तः यह मुल्क तुसी को दूंगा सो भी इस शर्त प
र कि तू नेकी पर कमर बांधे और ख़ुदा को एक जाने जादू करना छोड़ दे इस बात को सुन
कर वह गुस्सः होकर जादू पढने लगा और हातम इस्मे आज़म। ग़रज़ हरचंद उसने
मंतर पढ़ पढ़ा कर फूंका पर कुछ असर न हुवा बल्कि इस्मे आज़म की बरकत से वह आ
पही आप कांप कांप हातम के आगे से भाग अपने रफ़ीकों में आया और जान की दहशत
से चुपका सो रहा कि ख़बर न होवे और हातम उसी चश्मे पर बैठा इस्मे आज़म पढ़ा कि
या इतने में फ़ज्र होगई सब चौकीदार जागे हातम को न देखा डरे कि अब शामअहम
र हमको जीता न छोड़ैगा लाचार सिर पर ख़ाक डालते हुये आप ही उसके पास आए
और कहने लगे कि ख़ुदावंद हातम गायब होगया वह इस ख़बर के सुनते ही गुस्सः हुवा
और अपने इल्म नजूम से दरियाफ़्त करके कहने लगा कि हातम उसी तालाब पर बैठा है
और सर्त्तक चौकीदार ने मोहरे की लालच से उसको वहां पहुंचा दिया है अब तुझमें से को
ई जावे और सर्त्तक को मेरे पास साम्हने ले आवै मैं उसे जीता न छोड़ूंगा दे बमूजिम हुक्म
उसके सर्त्तक को पकड़ने गए वह अपने इल्म से इस बात को दरियाफ़्त करके भागा और
हातम के पास जाकर कहने लगा कि ऐ हातम तेरे सबब मेरी जान जाती है मैंने तुझसे ब
दीन की नेकी की है के इसे छोड़ाया ऐक तो मोहरा हाथ न लगा दूसरे ख़तरा जान का आ
पड़ा है हातम उसके एहसान पर नज़र करके शरमिंदा हुवा और ख़ातिरदारी करके कहने
लगा कि तू ख़ातिर जमा रख कुछ अंदेशः नहीं जब शामअहमर ने देखा कि सर्त्तक भा
ग गया मंतर पढने लगा इतने में सर्त्तक को एक ज्वाला आग का देखलाई दिया चला आता
है पुकारा कि ऐ हातम मुझको बचाले नहीं तो जलकर ख़ाक हो जाता हूं उसने इस्मे आ
ज़म पढ़कर उसपर फूंका फिर उससे कहा कि तू मेरे पीछे आकर खड़ा हो रह कुछ फ़ि
कर मत कर सर्त्तक ने कहा ऐ हातम मैं तेरा हुवा मुझको शामअहमर के जादू से बचा
हातम ने कहा तू ख़ातिर जमा रख क्या कुदरत है उसकी जो तेरा कुछ कर सके यह कह
कर हातम उठ खड़ा हुवा और इस्मे आज़म पढ़ता हुवा शामअहमर की तरफ़ चला औ
र शर्त्तक भी उसके साथ हो लिया जब अहमर जादू ने अपने इल्म से दरियाफ़्त किया कि
हातम और शर्त्तक इधर चले आते हैं तमाम लश्कर साथ लेकर शहर से बाहर निक
ला और जादू पढ़ने लगा कि एक बारगी घटा उठी और बिजली चमकने लगी बादल

गरजने लगे यह हालत देखकर शर्तेक बेतकी तरह कांपने लगा और कहा कि यह जोन
ज़र आता है जादू है ऐ हातम ख़बरदार हो उसने इसमे आज़म पढकर आसमान की तर
फ़ फूंक दिया वैसेब आफ़तें उसीके लश्कर पर पड़ीं यह अहवाल देखकर अहमर जा
दू हैरान हुवा और कहने लगा कि हातम भी बड़ा ही जादूगर है कि जिसके जादू ने हमा
रे जादू को भी रद्द किया अब क्या कीजिये इतने में एक जादू उसे फिर याद आया प
ढ़ने लगा कि एक पहाड़ ज़मीन से बुलंद हुवा जब हातम के सिर तक पहुंचा सर्तेक
पुकारा कि ऐ हातम होशयार हो कि यह दूसरा जादू है हातम ने फिर इस्मे आज़म प
ढ़कर फूंका वह पहाड़ टुकड़े टुकड़े होकर ओन्हों के सिरपर जापड़ा चार हज़ार
जादूगर दाख़िल जहन्नुम हुए और एक बड़ा सा पत्थर शाम अहमर के सिरपर आ
या वह अपने जादू के ज़ोर से बचगया और वह पत्थर किसी जंगल में जापड़ा तब हात
म इस्मे आज़म पढ़ता हुवा आगे बढ़ा शाम अहमर ने जो देखा कि हातम बेधड़क चला
आता है और नज़दीक है मुझतक आपहुंचे फिर एक जादू पढ़कर फूंका कि चारों त
रफ़ से चार अज़दहे पैदा हुए लेकिन उसीके लश्कर पर जा गिरे और निंगल गए म
गर तीन शख़्स बाक़ी रहे शाम अहमर ने फिर मंतर पढ़कर फूंका अज़दहों ने निंग
ले हुओं को उगल दिया और आप फिर गए यह हालत देखकर तीन ज़ोहेर जादूगर
जान के ख़ौफ़ से भागे शाम अहमर जादू ने हरचंद पुकार पुकार कर कहा कि मत भा
गो और दिलासे दिये पर किसी ने कान न धरा जब शाम अहमर ने देखा कि कोई जादू
गर नहीं फिरता तब एक जादू ऐसा पढ़ा कि वे सब के सब दरख़्त होके जहांके तहां
उस मैदान में लग गये और आप अकेला हातम के रूबरू आके जादू पढ़ पढ़ कर
फूंकने लगा जब देखा कि कोई मंतर हातम पर असर नहीं करता एक मंतर पढ़ क
र आस्मान की तरफ़ हवा हो गया हातम ने जो देखा कि शाम अहमर जादू पर निकाल
कर उडा और नज़रों से गायब होगया मुतफ़िक्र हुवा कि अब क्या किया चाहिये
शार्तेक बोला कि वह अब कमलाक जादू के पास गया है इसवास्ते कि वह उसका उस्ता
द है और वह ऐसा जादूगर है कि जिसने एक आस्मान चांद सूरज समेत बनाया है
और एक पहाड़ के नीचे दो शहर बसाया है कि चालीस हज़ार जादूगर उस ज़मी
न में रहते हैं और वह क्या कहता है कि मैने तुमको पैदा किया है खाक पड़े उसके मुंहमे
कि दावा ख़ुदाई का किया है और हम बरस में एक बार उसकी ख़िदमत में जाते हैं
वह काफ़र ख़ूब से जादूगर है और उसका मकान यहां से तीन सौ कोस पर है हातम ने
कहा तौबाह कर ख़ुदा एक है कोई उसका शरीक नहीं हुवा और न होगा हर एक
शै को उसने पैदा किया है और वह किसी से पैदा नहीं हुवा फिर हातम ने शर्तेक की

वहुतसी तसल्लीकी तब शह्नेक बोला कि मैंने इस्मे आज़म के बरकत से बचा अब ऐत
क़ाद जादूगरों से बिल्कुल उठगया हातमने उसकी तसल्लीकी और कहा मैं कोहे क़म
लाकपर जाया चाहता हूं शह्नेकने अर्ज़की जों आपकी खुशी है तो मैं भी गुलामी में
हाज़िर हूं और यह दरख्त जो नज़र आते हैं शाम अहमर के लश्कर के लोग हैं यक़ी
न है कि यह क़यामत तक यों हीं रहैं क्योंकि इनको जादूसे दरख्त बनागया है अगर तु
मसे हो सकै तो इन्हों को पहली सूरत पर लाको अपने साथ ले चलो इस बात के सुनते ही
हातम ने थोड़ा सा पानी पढ़कर शह्नेकको देकर कहा कि इस पानी को उन्हों पर छिड़क
दे और क़ुदरते इलाहीका तमाशा देख ग़रज़ वह उस पानीको लेकर गया और उन्हीं
दरख्तों पर छिड़कने लगा खुदा की फ़ज़लसे और इस इस्मकी बरकतसे वे सबके सब
अपनी असली सूरत पर आगये और शह्नेकसे पूछने लगे कि ऐ शह्नेक शाम अहमर जा
दू कहाँ है उसने कहा कि वह तुम सबको अपने जादूसे दरख्त बनाकर क़मलाकके पास
भागगया अब हातमने तुम्हें इस्मे आज़म पढ़कर फिर आदमी किया है तुम अपना अह
वाल बयान करो कि क्योंकर थे उन्होंने कहा हम ज़मीन पर खड़े थे ताक़त चलने बोलने
फिरनेकी नहीं रखते थे और बन्द बन्द दर्द करता था अब इस जवांमर्दकी मेहरबानगी से
अच्छे हुए सच्च तो यों है कि यह अजब जवांमर्द और रहमदिल और साहेब इक़्बाल
औ ज़ोरावर है जो शाम अहमर जादू पर ज़ोरावर हुवा यह गुफ़्तगू आपसमें करके इ
कट्ठे होकर हातमके पास आये औ पांवें पर गिरके कहने लगे कि ऐ हातम आगे हम शाम
अहमर के बन्दोंमें थे आजसे तेरे गुलामोंमें दाखिल हुए क्योंकि तूने हमपर बड़ा एहसान
किया है यह बात सुनकर हातमने फिर उनपर इस्मे आज़म पढ़कर फूंका कि जितना अस
र उनमें जादूका था जाता रहा जैसे थे वैसे ही होगये और हातमसे कहने लगे कि ऐ खुदावं
द अब कहाँके जानेका इरादा रखते हो हातमने कहा ऐ यारो मुझे शाम अहमर जादूसे कुछ
काम है जबतक वह मेरे हाथ नहीं आता है तबतक मैं कुछ काम नहीं करूंगा चुनांचि उसके बे
टी से ब्याह किया चाहता हूं अगर उसने खुशी बा खुशी ब्याह दिया तो बेहतर है नहीं तो जीता न
छोड़ूंगा उन्होंने कहा उसके बेटीको तुमने कहाँ देखा है जो ऐसे आशक़ हो गये हो हातमने
तमाम हक़ीक़त इश्क़की अव्वलसे आखिर तक बयान करके कहा कि मैं सिरफ़ उसीकी
आरज़ू और उसीके मिलने के वास्ते रंज और मेहनत खींचता हुवा यहाँ तक आ पहुंचा हूं
और शाम अहमरने जो कुछ मुझ पर ज़ुल्म किया क्या कहूं न ज़ुबान को क़ुदरत कि कहे न क़ल
मको ताक़त जो लिखे शुकर है खुदा का कि जिसने मुझसे ग़रीबको ऐसे ज़बरदस्त पर ग़ालिब

किया अगरचे अब वह यहाँसे भागा और अपने उस्ताद के पास गया है तो उससे क्या हो सक
ता है अब मैं उसको उसके उस्ताद समेत मारूंगा और नाम निशान उन दोनों का इस दुनियाँ
से मिटा दूंगा ओन्होंने अर्ज़ की कि ख़ुदावंद कमलाक बड़ा जादूगर है और उसका ज़ेर क
रना निहायत मुश्किल है हातम ने कहा ऐ यारो हिम्मत न हारो और कुछ तमाशा देखा चाह
ते हो तो मेरे साथ चलो नहीं तो यहीं आराम करो मैं जाऊं और कमलाक और शाह अह
मर जादू जाने ओन्होंने अर्ज़ की कि आपने हम पर एहसान किया है यह बात मरव्वत से
दूर है जो हम तुमको अकेला जाने दें बेहतर येही है कि हम भी साथ चलें अगर वह ग़ालि
ब आया तो हम तुम्हारे साथ फिर आवेंगे और जहां तुम जावोगे हम भी साथ होंगे यहां ह
मारा क्या काम है वह हमें हरगिज़ जीता न छोड़ेगा ग़रज़ हातम ने सब जादूगरों समेत कोहे क
मलाक का रस्ता पकड़ा थोड़ी दूर जाकर ओन्होंने कहा हज़रत सलामत शाह अहमर जा
दू यहाँसे एक दिन में हम सब समेत उस पहाड़ पर जा पहुंचा था हातम ने जवाब दिया कि
सच है वह जादूगर था अपने जादू के ज़ोर से उस राह दूर को इतना जल्द तै करता हुवा था
ओन्होंने अर्ज़ की ख़ुदावंद अगर आप जादूगर नहीं हैं तो ऐसे जादूगर पर क्योंकर
ग़ालिब हुए क्यों कि वह ऐसा जादूगर है कि पहाड़ को मोम करता है और मोम को लोहा प
त्थर कर डालता है इतने में एक बोला कि ऐ नादानों मैंने इसका तमाशा अपनी आँखों
से देखा है यह भी एक रोज़ में वहां जा सकता है अगर चाहे तो उनको भी मार डाले तुम न
हीं जानते हो इसको मदद ख़ुदा की है फिर हातम ने कहा ऐ अज़ीज़ो मैं इस्मे आज़म जान
ता हूं जहां वह असर करे वहां जादू का क्या चले देखो इस इस्म के असर से वे जलकर खा
क हो जावेंगे फिर वे सब के सब हातम के साथ उस तालाब पर पहुंचे कि वहीं पहिले मंज़िल
थी फिर यह मालूम न था कि अहमर जादू इसी राज से गुज़रा है और इस तालाब पर भी
जादू पढ़ गया है बेतहाशा सभों ने पानी पी लिया पीते ही उनके पेट से फुहारे ख़ून के छूटने ल
गे हातम देखकर हैरान रह गया पर उनसे जुदा न होता था इसलिये कि ये बेचारे मेरे साथ आये हैं
इनको अकेले क्योंकर छोड़ूं और इस पानी में क्या बला थी कि जिसके पीते ही इनकी यह हा
लत हो गई अलक़िस्सा: तमाम रात गुज़र गई हातम प्यासा रहा पर पानी का एक क़तरा
भी उसने न पीया जब सुबह हुई वे सब के सब मानिन्द मशक के फूल गये हातम उनकी हा
लत देखकर हाथ मलता था और रोता था लेकिन यह न समझा कि शाह अहमर जादू ने
इस पानी पर भी जादू किया है आख़िर उसकी ज़िन्दगी से नाउमेद हुवा वहीं ख़याल गुज़रा
कि शायद इस्मे आज़म के बरकत से ये बेचारे अच्छे हो जावें और इनकी जानें बचें यह अंदे

स्रा करके उस इस्मे मुबारक को पढ़के उन पर फूंका पहले ही मर्तबः में असर किया और जादू
उनका उतर गया दूसरे मर्तबः फिर पढ़ कर फूंका तब ओन्हों के पेट से पतला पानी जारी हुवा
गरज़ तीसरे दफ़ः में अपनी असली हालत पर आगये और हातम को दुवायें देने लगे
और तारीफें करने लगे तब हातम ने पूछा ऐ यारो यह क्या बात है वे बोले खुदावन्द हम को
क्यों मालूम होता है कि शाम अहमर जादू इस तालाब पर भी जादू कर गया है हातम ने उस पर
भी इस्मे आज़म पढ़ कर फूंका पहले वह जोश में आया फिर सुर्ख होकर सबज़ होते
ही नीला हो गया बाद एक दम के साफ़ हुवा और अपनी असली रंगत पर आ रहा हा
तम ने जाना कि अब इस तालाब से जादू का असर जा चुका है। थोड़ा सा पानी आप पीया
और सबको फ़र्माया कि पानी पीयो और नहाओ कि हरारत जादू की सब तुम्हारे बदनो
से जाती रहे ओन्हों ने उसके कहने पर अमल किया और कहने लगे खुदावन्द हम तु
म्हारे साथ होकर शाम अहमर और कमलाक से लड़ेंगे इसी इरादे पर आगे बढ़े और
शाम अहमर जो वहां से भागा तो कमलाक के डेवढ़ी पर आ खड़ा हुवा चोपदारों ने जा
कर अर्ज़ की खुदावंद शाम अहमर जादू नंगे सिर नंगे पांवं निहायत परेशान अह
वाल दर्वाज़े पर खड़ा है कमलाक उसको अंदर बुलाकर गले लगा लिया और पूछा
कि तुझ पर ऐसा क्या दुख पड़ा है जो इस हाल से यहां आया उसने अर्ज़ की कि मेरे
पहाड़ पर हातम नाम ऐक जवान बड़ा जादूगर कहीं से आया है उसने मुझे इन हालों प
र मुझे पहुंचाया है कमलाक यह अहवाल सुनकर आग बबूला हो गया और कहने
लगा कि तू खातिर जमा रख मैं उसका अभी चौमेख़ा करके तेरे हवाले कर देता हूँ ग़र
ज़ उसकी तसल्ली करके एक मंत्र पढ़ा और अपने पहाड़ की तरफ़ फूंका वहीं ऐक आग न
मूदार हुई और घेरे की सूरत होकर उस पहाड़ को घेर लिया हातम भी बाद दो चार रोज़ही
के कमलाक के हद में जा पहुँचा रफ़ीकों ने अर्ज़ की क़िबले आलम कोहे कमलाक यही
है लेकिन इसके गिर्द यह आग जो ज्वाला मारती है शायद जादू का सबब है हातम ठहर
गया और इस्मे आज़म पढ़कर उस पहाड़ की तरफ़ फूंक दिया आग बिलकुल बुझ गई
यह ख़बर कमलाक जादूगर को पहुँची उसने फिर ऐक जादू ऐसा किया जिसके ज़ोर से
उस पहाड़ के गिर्द एक पहाड़ दरिया पैदा हुवा और लहरें मारता हुवा हातम के तरफ़ ब
ढ़ा सभों ने अर्ज़ की कि खुदावंद यह दर्या जादू का है अब हम बे अजल डूबे इससे ब
बचते नज़र नहीं आते हातम ने कहा मत घबराओ और खुदा को याद करो यह कह कर
इस्मे आज़ पढ़कर फूंका वह दरिया हवा हो गया ज़मीन खुश्क नज़र आई जादूगरों ने

दरियाफ़्त किया कि कोई जादू इस जवान पर कारगर नहुवा और नहीं होता देखिये क्या होता है इतने में कमलाक ने और एक मन्तर पढ़ा पढ़ते ही उसके दस दस पांच मन के पत्थर पड़ने लगे गरज़ इस क़दर बरसे कि उस पहाड़ के गिर्द एक और पहाड़ होगया और वह नज़र आने से रहगया इस हाल को मुलाहज़ा करके हातम बैठगया और इस्मे आज़म पढ़ने लगा उसकी बरकत से ऐक ऐसी हवा चली कि उन पत्थरों को ले गई कोहे कमलाक नज़र आने लगा हातम आगे बढ़ा कमलाक जादू ने फिर ऐक ऐसा मंतर पढ़ा कि वह पहाड़ हातम और हातम के हमराहियों की एकाएक नज़रों से अलोप होगया तब ओन्हों ने अर्ज़ की ख़ुदावन्द कमलाक ने इस पहाड़ को जादू के ज़ोर से छिपाया है यह सुनकर हातम वहीं बैठगया और इस्मे आज़म पढ़ने लगा और पढ़ पढ़कर फूंकने लगा बाद दो तीन रोज़ के पहाड़ फिर नज़र आया हातम उठ खड़ा हुवा और साथियों समेत उस पर चढ़गया वहां के जादूगरों ने उसको देखते ही गुल मचाया कि यह जवान सही सलामत यहां आपहुंचा तब कमलाक शम्श अहमर जादू समेत उस आसमान पर जो उस पहाड़ से तीन हज़ार गज़ बुलन्द था चढ़गया और अपने लश्कर को उसके दरवाज़े पर चढ़ाया हातम ने जो देखा कि अब साम्हना करने वाला कोई नरहा बे धड़क शहर में दाखिल हुवा देखता क्या है कि एक शहर बहुत बड़ा आली शान और हर एक मकान पाकीज़ः दूकानें दुरुस्त सुथरी साफ़ कुशादा उन्मे हरतरह की जिनसें उनमें धरी हैं और क़िसम क़िसम के जवाहर जगमगा रहे हैं और तरह बतरह के मेवे मिठाइयों से ख़्वान चे भरे हुए जगह बजगह लगे हुए हैं पर आदमी का कहीं ज़िकर नहीं और नाम निशान मालूम नहोताथा हातम ने यह तमाशा देखके अपने लोगों से कहा कि यहां के रहने वाले क्या होगए ओन्हों ने कहा ख़ुदावन्द कमलाक आपके डर से उन सभों को लेके उसी आसमान पर गया है जो उसने बनाया है हातम इस बात को सुनकर हंसा और कहने लगा कि अब तुम क्यों भूखों मरते हो न्यामतें ख़ुदा ने दी हैं उनको मज़े से चक्खो वे सब भूखे तो थे ही बे इख़्तियार खाने पीने लगे जब खापी चुके तो बेहोश होगये और हर एक के नाक से लहू टपकने लगा हातम ने मालूम किया कि वह कमबख़्त न्यामतों पर भी जादू कर गया है यह समझकर थोड़ा सा पानी मंगवाया और उस पर इस्मे आज़म पढ़कर हर एक को पिलादिया वहीं जादू का असर जाता रहा वे अच्छे होगये फिर हातम ने इस्मे आज़म पढ़कर हर एक चीज़ पर फूंकके क

हा कि अब शौक़ से खाओ पीओ कि जादू का अमल दूर होगया तब उन्होंने दिल जमा
ई से पेट भरकर खाया पीआ फिर हातम ने पूछा कि जादू का आस्तान कहाँ है उन्होंने
अर्ज़ किया कि वह इस ज़मीन पर हवा में मानिंद गुम्बज़ के नज़र आता है हातम उस
तरफ़ मुतवज्जह हुवा और इस्मे आज़म पढ़ पढ़ कर फूंकने लगा आख़िर वह गुम्बज़
भी टुकड़े टुकड़े होहो कर पहाड़ पर गिर गिर पड़ा और बहुत से जादूगर दाख़िल जह
न्नुम हुए मगर कमलाक और शाम अहमर बचकर पहाड़ के ऊपर गिरे और किसी तरफ़
को भागे और हातम इस्मे आज़म पढ़ता हुवा उनके पीछे पीछे चला आख़िर वे दोनो भी
घबराकर पहाड़ से गिरे और पाश पाश होगये हातम बहुत सा ख़ुश हुवा और सिजदे शु
कर बजा लाया फिर शर्तक से कहने लगा कि मैंने तुमसे वादा किया था कि जब कमलाक व
शाम अहमर को मारूंगा तो इस मुल्क की बादशाहत तुझी को करूंगा अब यह मुल्क तुझी
को देता हूं और अपना वादा वफ़ा करता हूं लेकिन इस शर्त पर कि तुम ख़ुदा को एक जाने
और किसी बंदे ख़ुदा को दुख न देवे अदल और इन्साफ़ में रात दिन मशग़ूल रहे यह कहकर
फिर उन सब जादूगरों से कहा कि तुम सब शर्तक की सर्दारी क़बूल करो और याद ख़ुदा
में मशग़ूल रहो और अपने तईं बंदे ख़ुदा समझो और अगर इन बातों से ख़िलाफ़ करोगे तो
अपनी सज़ा को पहुंचोगे और अब मैं मल्कः ज़रीं पोश के पास जाता हूं तुम सब यहां आपु
स में मिल जुल ख़ुश रहो उन्होंने कहा कि ख़ुशी तो हमारी इसी में है कि हम भी आप के साथ
चलें लेकिन हुक्म से बाहर नहीं हो सके हातम ने उनको वहीं छोड़ा और आप मल्कः ज़
रीं पोश के मुक़ाम की तरफ़ चला बाद थोड़े दिनों के वहां जा पहुंचा क्या देखता है कि न वह
तालाब है न पानी है मगर वह दरख़्त ज़ेब का तेव हरा भरा खड़ा है उस तालाब की जगह एक
शीश महल निहायत आलीशान जगमगा रहा है हातिम दर्वाज़े पर जा खड़ा हुवा क्या देख
ता है कि वही नाज़नीनें सब की सब अपनी जगह पर खड़ी हैं यह उनको देख कर ख़ुश हुवा
और वे उसके पास जाकर पूछने लगीं कि तुम कौन हो और कहां से आए हो उसने कहा
कि मैं वही शख़्स हूं जो तुम्हारे साथ इस दरख़्त पर लटकता था अब मेरी तरफ़ से मल्कः को
ख़िदमत में सलाम शौक़ कहो उनमें से एक दौड़कर शाहज़ादी के पास आई और अ
र्ज़ करने लगी कि ऐ शाहज़ादी हातम नाम जो जादू में गिरफ़्तार था अब अच्छा होकर
आया है उसने सुनते ही सिर नीचा कर लिया बाद एक दम के सिर उठाके कहा कि अब
तक कहां था वह शायद कोह अहमर को गया था जा और जल्द दरियाफ़्त करके वह ख़
वास फिर आई और हातम से पूछने लगी कि ऐ हातम कुछ कोह अहमर के अहवाल से

वाक़िआ है तो बयान कर उसने कहा कि मल्कः ज़रींपोश का बाप काफ़र था अपने बदका
मों के बाइस से मारा गया और जहन्नुममें जा पहुंचा इतना तुझसे कहा और बाक़ी मल्कः से
कहूंगा उस नाज़नीन ने हुज़ूर में यों हीं अर्ज़ किया बादशाहज़ादी सुनतेही आंसूभर लाई
कि वे नाज़नीनें तसल्ली देदेकर इल्तमास करने लगीं कि ऐ शाहज़ादी ऐसे बुरे बापके वास्ते रो
ना और ग़म खाना अबस है उसने अपने कामबद की सज़ा पाई और हम तुम उस क़ैद सख़्
तसे छूटे लाज़िम है कि अब उस जवान को महल में बुलवा अच्छी तरह से मुलाक़ात करो इस
बात को सुनकर उसने ख़ूब सा सिंगार किया और तख़्तः मुरस्सः पर आन औ अदा से
आन बैठी फिर एक नाज़नीन से कहा कि अच्छा बुलालो वहीं एक सहेली दौड़ी और उसको
बुला लाई नज़र उसकी मल्कः पर पड़ते ही बेहोश होगया और वह भी बेहुश की सी रहगई
अपने तईं सम्भाल कर तख़्त पर से उठी शीशा गुलाब का हाथमें लेकर हातम के पास
आई और गुलाब उसके मुंह पर छिड़का हातम होश में आया और मल्कः को अपने सि
रहाने देखकर बाग़ बाग़ होगया ग़रज़ बादशाहज़ादी तख़्त मुरस्सः पर आबैठी और हा
तम को भी एक जड़ाऊ कुर्सी पर बिठलाया और अपने बाप का अहवाल पूछने लगी हात
मने तमाम माजरा बयान किया और कहा मैंने तेरे वास्ते इस क़दर रंज खींचे और दुख
सहे अब तुझको भी लाज़िम है कि मेरे मेहनत की दाद दे और अपनी मेहरबानी और
दोस्ती से मेरी मुसीबतों को आराम से बदले और इस ना उमेद की उम्मेद बर लावे इस बातों
को उसने सुनकर सिर नीचा कर लिया इतने में हमजोलियों में कहा बीबी हातम भी शाह
ज़ादा यमन का है तुम्हारे नसीब अच्छे थे जो ख़ुद ब ख़ुद यहां आया तुम ज़ोर इससे अपनी
शादी करोगी हर तरह से नामवरी और बेहतरी है और अपने बाप के मरने का कुछ ग़म न
करो वह कमबख़्त ग़द्दार था ख़ूब हुवा जो मुवा तमाम जहान का फ़साद मिटा अ
ब सरंजाम शादी का किया चाहिये। बादशाहज़ादी शर्माकर तख़्त से उठी और महल
में चली गई मुसाहबों ने उसकी शादी की तैयारी करनी शुरू करी सात रोज़ तक नाच
राग की सुहबत रही आठवें दिन नवीं रात हातम ने बाद दाद के रस्म के मवाफ़िक़ शा
हज़ादी से ब्याह किया और ख़्वाबगाह में लेजाकर हमकनार हुवा चाहता था कि हम
बिस्तर हो और शर्बते वेसाल पिये कि अहवाल मुनीर शामी शाहज़ादे का याद आ
या ख़ौफ़ इलाही दिलमें लाया मानिंद बेद के कांपने लगा निदान मल्कः से अलग होगया
बादशाहज़ादी हक्की बक्की होगई कि ऐसा इसने मुझमें क्या ऐब देखा कि ऐन मुलाक़ा
तमें जुदा होगया था इससे क्यौंकर पूछूं यह सोच कर कुछ चुपसी रहगई जब उसने उस आ

इन्तेरू को आप हैरत में देखा कहा कि ऐ आराम जान इतनी परेशान क्यों हुई खुदा
न करे कि मेरी ज़िन्दगी में किसी तरह का ग़म और रंज तुझ को हो अगर मेरी इस
हरकत से अंदेशा में हुई है तो बजा है क्योंकि चोर और सफ़र ज में ऐसे हैं और तू उनसे भी हुसन
में कहीं की कहीं बेहतर है लेकिन मैं खुदा की राह में कमर बांधकर अपने घर से मुनी
रशामी के लिये निकला हूं वह आशक़ हुसन बानू का है और वह नाज़नीन सात सवाल
रखती है जो कोई उसके सवाल पूरे करेगा वह उसको क़बूल करेगी और मुनीर शामी
उसके एक सवाल का भी जवाब न दे सका चुनान्चे हुस्नबानू ने अपने शहर से बाहर निकल
वा दिया वह रोता पीटता आहें भरता यमन की तरफ़ आ निकला मैं भी एक दिन शिकार खे
लता हुवा उस तरफ़ गया था इत्तिफ़ाक़न उससे मुलाक़ात हो गई अहवाल पूछने लगा उ
सने बतौर फ़क़ीरों के अपना अहवाल ज़ाहिर किया ग़रज़ उसकी बेकसी पर दिल में
रहम आया और आंसू टपक पड़े निदान मैं ताबन लासका उसके साथ होकर शाहाबा
द को आया और हुस्नबानू के सवालों के जवाब अपने ज़िम्मे लिये उस बेचारे को
कारवान सराय में छोड़कर फिर जंगल की राह ली चुनांचे खुदा के फ़ज़ल से तीन स
वाल उसके पूरा कर चुका हूं यह चौथे सवाल की नौबत है एक रोज़ इत्तिफ़ाक़ हो ग
या कि तुझ को देखकर दिल हाथ से जाता रहा और तेरे इश्क़ के तीर ने कलेजा छेद
डाला कि तमाम जहान के काम काज से गुज़र गया बारे नसीबों की मदद से तेरा दाव
ने विसाल हाथ लगा आरज़ू तो यह थी कि तेरे बाग़ हुस्न से गुले राहत चुनूं और
अपने ग़ुनचये दिल को खोलूं पर क्या करूं कि मैं ने उसके साथ क़सम खाई है कि भाई
मैं तेरे काम में दरेग़ न करूंगा बल्कि जब तक तू अपनी मुराद को न पहुंचेगा तब तक
मुझ पर भी ऐश व इशरत हराम है सबब यह बात मुरव्वत और हिम्मत से दूर है कि
वह बेचारा इन्तिज़ार खींचे और हातिम अपनी ऐश व इशरत में मशग़ूल रहे सला
ह यह है कि तुम अपनी खुशी से मुझको रुख़सत करो कि शाहर खुर्रम को जाऊं और
चौथा सवाल उसका पूरा करूं यह बात सुनकर शाहज़ादी ने कहा कि यहां मुझको क
हां छोड़ जाओगे आगे तो मेरा बाप जीता था वह मेरी खबर लेता था अब कौन कर गु
ज़रेगी हातम ने कहा कि मैं यमन में तुझे भेज देता हूं मेरा बाप वहां का बादशाह है वह तु
झे अच्छी तरह से रक्खेगा किसी तरह की कभी ग़मी न होगी यह बात कहकर वह अ
पने बाप को अर्ज़ी इस मज़मून से लिखने लगा कि ऐ क़िबला अगर उमर वफ़ा करती है
तो मैं इस काम से फ़राग़त करके हज़ूर के क़दमबोसी के वास्ते आऊंगा और सर्फ़राज़ हों

ऊंगा बिल्फ़ैल मल्कः ज़रींपोश को अपने निकाह में लाकर ख़िदमत आली में भेजा
है यक़ीन है कि तवज्जुह हाल व मेहरबानगी उसके हाल पर फ़र्माते रहें अल्क़िस्सः जब
अर्ज़ी तमाम हो चुकी उसपर मुहर करके मल्कः के हवाले की वह अपने ख़्वास और
लाव लश्कर समेत यमन को रवाना हुई और हातम भी शहरे ख़ुर्रम को चला बाद चंद रो
ज़ के एक शहर में दाख़िल हुवा और वहां जाकर पूछने लगा कि ऐसा है वो वह कौन श
हर है और वह कौन शख़्स है जो हमेशः कहा करता है कि सच कहने वाले को हमे
शः फ़तह है उन्होंने कहा ऐसा शख़्स यहां कोई नहीं जो यह कहता हो मगर एक बू
ढ़े ने यही बात जो तुम कहते हो लिखकर अपने दर्वाज़े पर लगा दी है हातम ने पूछा
कि उसका मकान कहां है वे बोले कि यहां से नौसै कोस पर शहरे ख़ुर्रम है वह वहीं रह
ता है हातम यह बात सुनकर उसी तरफ़ रवाना हुवा बाद तीन पहर के जा पहुंचा तो क्या
देखता है कि एक इमारत आलीशान औ बुलन्द खड़ी है और उसके दर्वाज़े पर यही कला
म लिखा है यह उसको पढ़कर निहायत ख़ुश हुवा और दर्वाज़े पर जाकर दस्तक दी
बाद एक दम के कई दर्बान दर्वाज़ा खोलकर बाहर आये और हातम को देखकर क
हने लगे कि ऐ जवान तू कौन है और किस काम को यहां आया है उसने कहा कि मैं
शाहाबाद से एक काम के वास्ते आया हूं इस बात को सुनकर दर्बानों ने दौड़कर अ
पने ख़ाविंद से कहा वह सुनते ही बोला कि उस मुसाफ़िर को बुला लो जब हातम अं
दर आया तो क्या देखता है कि एक जवान ख़ुशरू मसनद पर तकिया लगाए इम
तियाज़ से बैठा है उसने झुककर सलाम किया वह भी मसनद से उठकर बगलगीर
हुवा और निहायत ताज़ीम से अपने पास बैठलाया खाने तरह बतरह के मंगवाकर
उसके हवाले रखे जब खाने से फ़राग़त हुई साहेब ख़ाने ने पूछा कि साहेब तुम कौन हो
और कहां से तशरीफ़ लाये हो और किस काम के वास्ते तुमने यह सफ़रः दूर औ दरा
ज़ इख़्तियार किया जो इस क़दर रंज खींचे और दुख सहे सख़्त तअज्जुब है की सि
वाय दो शख़्स के इस मकान पर और कोई नहीं आया उनमें का एक तू भी है यह सुनते
ही हातम कहने लगा मैं यमन का रहने वाला हूं पर अब शाहाबाद से मुनीर शामी के
काम को तुम तक आया हूं अलग़रज़ माजरा मुनीर शामी के हुस्नबानू पर आशिक़
होने और उसके सवालों के पूरे करने पर अपने तईं मुस्तैद करने का तफ़सीलवार क
ह सुनाया फिर पूछा कि अपने दर्वाज़े पर यह कलाम लिखकर किस वास्ते लगाया है
उसने कहा कि ऐ जवान जवांमर्द यमन के रहने वाले दुनियां में बड़े नेकनामों में मशहू

र होगा क्योंकि कोई ऐसा शख़्स नज़र नहीं आता जो औरों के वास्ते अपने ऊपर इस क़दर
दुख ले या रंज सहे तूही ऐसा था जो यह बोझ तूने अपने सिर पर लिया आज रह जा क्यों
कि राह का थका मांदा आया है थोड़ा आराम कर इसकी हकीक़त मैं कल तुझसे कहूंगा ग़
रज़ हातम तमाम रात वा आरामु तमाम वहीं रहा सुबह को खाना खा कर कहने लगा कि अ
ब इरशाद कीजिये उसने कहा कि ऐ जवान इस शहर ख़ुर्रम को सात सौ बर्स हुए हैं कि यह
यहां आबाद हुवा है और मेरी उमर आठ सौ बर्स की है जिस सूरत से तू मुझे अब देखता
है इसी शक्ल से मैं उस वक़्त में भी था चुनांचि मैं जुवारियों में मशहूर था और सिवाय जूवा
खेलने के कोई काम जहान का न करता था इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ निहायत तंगात सा हुवा कि
एक पैसा भी मेरे हाथ न आया जब रात हुई तो चोरी को निकला उस वक़्त यह बात जी
में गुज़री कि किसी ग़रीब ग़ुर्बा के घर जाकर क्या चोरी कीजिये जिस्से बेहतर यही है कि
बादशाह की दौलत ख़ाने में जाकर ख़ूब सा माल और जवाहिर चुरा लाइये यह ठहरा क
र बाद आधी रात के मैंने बादशाह की हवेली में कमन्द डाल और ख़ास बादशाह की ख़्वा
बगाह में अपने तईं पहुंचाया क्या देखता हूं कि एक भी चौकीदारों में से क्या ख़्वास क्या
ख़ोजा कोई नहीं जागता और बादशाह भी अपने मुरस्सा के पलंग पर बेख़बर सोता है
मैं आगे बढ़ा और उसके गले से गौहर शबे चराग़ उतार कर कमन्द के राह से बाहर आया
और किसी तरफ़ जा निकला जब जंगल में गया तो क्या देखता हूं कि एक दरख़्त के नीचे
बहुत से चोर कहीं से माल चुराए लाए हैं और बैठकर हिस्सा कर रहे हैं इत्तिफ़ाक़न उ
न्होंने मुझको देख लिया और बुला कर पूछा कि तू कौन है और कहां से आया है मैं रास्तगो
था सच सच अहवाल उनसे कहा और वह मोती दिखलाया उसको देखते ही चोरों को य
ह लालच हुई कि मेरे हाथ से छीन लें इतने में एक शख़्स ग़ैब से पैदा हुवा और उस आ
वाज़ हैबतनाक से ललकारा कि तमाम जंगल कांप उठा और वे अपनी जान की दहशत
से भाग गए मैं अकेला वहां खड़ा रह गया वह मेरे पास आया और कहने लगा कि तू कौन है
मैंने उसके आगे भी सिवाय सच के और कुछ न कहा यह सुनकर वह हंसा और कहने लगा
कि तूने सच कहा इस वास्ते यह सब माल इस गौहर शबे चराग़ समेत मैंने तुझको बख़्शा
लेकिन तू चोरी से तौबा कर। यह बात मैंने उसकी मान ली और जूआ खेलने की और
चोरी करने की दिल और जान से तौबा की फिर उसने कहा कि अगर जूआ न खेलेगा
और चोरी न करेगा तो तेरी उमर नौ सौ बरस की होगी यह कहकर चला गया मैं उस मा
ल के गुट्ठरे बांधकर अपने घर ले आया और एक इमारत निहायत आली शान ब
नवाई महल्ले वाले मेरे दुश्मन हुए और कोतवाल से जाकर यों कहने लगे खुदावंद

कलही की बात है कि यह शख़्स कौड़ी कौड़ी को मुहताज था आज इसके इस क़दर मा
ल हाथ कहाँ से लगा जो इतना बड़ा महल बनवाया इस बात के सुन्ते ही कोतवाल ने मु
झे बुलाकर पूछा मैंने उसके सामने भी सिवाय सच के कुछ और न कहा वह मुझे बादशा
ह के पास ले गया मैंने उसके रूबरू भी जो बात सच थी वही कही जानकी दहशत कुछ
न की यह बात सुनकर बादशाह ने मेरे हाल पर निहायत नेवाज़िश की कि यह शख़्
स रास्त गो है जो इस क़दर ज़र औ जवाहर किसी से न छिपाया साफ़ कह दिया इस
के सच्चपन पर मैंने यह माल इसको दिया और गुनाह भी बख़्शा बल्कि उसने और भी
ज़र व जवाहर अपने ख़ज़ाने से इतना कुछ मुझे दिया कि मैं मालामाल होगया उ
समें से अब भी मेरे पास बहुत कुछ है अगरचेः बहुत कुछ ख़र्च किया और उसी
दिन से यह अपने दर्वाज़े पर लिखकर लगा दिया है कि सच कहने वाले के आगे
हमेशा राहत है मर्दों को चाहिये कि सवाय सच के कभीं झूठ न कहें यह कहकर उ
सने हातम से पूछा कि सच कह तू कौन है उसने कहा कि मैं यमन का शाहज़ादा हूँ यह
सुन्ते ही वह अपनी मसनद से उठा और बग़लगीर हुवा ताज़ीम और तवाज़ा बहुत
सा करके कहने लगा कि सच है सिवा हातम के कौन ऐसा काम कर सक्ता है फिर उस
ने कई दिन तक मेहमान उसे रक्खा एक दिन हातम ने कहा ऐ अज़ीज़ मुझे एक काम
बहुत ज़रूर है अब रुख़सत कर उसने निहायत मिन्नत से विदा किया और वह अपने
मंज़िले मक़सूद को राही हुवा रात दिन चला जाता था एक दिन मल्काः ज़रीं पोश की
सूरत उसे याद आई इरादा किया कि मल्काः को देखकर शाहाबाद जाऊंगा यह ठहरा
कर यमन की तरफ़ रवानः हुवा बाद चन्द रोज़ के यमन के क़रीब आ पहुंचा ख़ुशी से
एक सुथरे से तालाब पर बैठ गया इत्तिफ़ाक़न उसके कनारे एक जोड़ा तूती का बैठा
था और आपस में बात कर रहा था हातम ने भी अपने कान उधर लगाये हुए था इस
वास्ते कि देखूं तो यह क्या कहते हैं इतने में मादः ने नर से कहा कि तू मुझको अकेला
छोड़कर कहां जाता है वास्ते ख़ुदा के न जा उसने कहा ऐ नादान तू क्यों नेक काम में
हरकत करती है क़यामत के दिन तू मेरे क्या काम आवेगी जो दुनियां में तुझसे मश
ग़ूल रहूं और नेक काम को छोड़ दूं नहीं सुना है तू ने कि एक बादशाह किसी दिन
शिकार को निकला था हरचंद फिरा पर शिकार कोई उसके हाथ न लगा आख़िर
अपने लश्कर से जुदा होकर एक जंगल में जा पड़ा वहां एक बाग़ ख़ुश किनारे देखक
र उसके अंदर चला गया और ख़ुशी ख़ुशी सैर करता हुवा एक बंगले के पास आ पहुं
चा वहां एक हौज़ लबालब तालाब के बराबर नज़र आया देखने में निहायत ख़ु

बखूबसूरत औरयाकी जः पानी उस्का साफ़ बादशाह देखकर उसको बहुत खुश हुवा औ
र उस्के कनारे बैठकर हाथसे पानी उछालने लगा एकायक एक जंजीर उसके हाथ
में आई उस्को पकड़कर जो खींचा तो एक संदूक बंद कुंजी समेत निकला उसने जो
कुलफ़ उस संदूक का खोला तो एक औरत माहरू को उसमें बैठे पाया बादशाह डर
गया उस नाज़नीन ने कहा ऐ जवान क्यों डरता है मैं भी आदमी हूं यह कहकर सं
दूक से निकल आई और सुराही प्याला लाकर बादशाह के आगे रख दिया और
उम्मेदवार बोसा और कनार की हुई बादशाह ने जो देखा कि यह औरत निहायत
खूबसूरत है और असबाब ऐशव इशरत के भी सब मौजूद हैं इस्को हाथ से न दि
या चाहिये पस शराब पी और उससे सोहबत की जब फ़ारिग़ हुवा लश्कर याद आया
उठ खड़ा हुवा और अंगूठी अपनी अंगुली से निकाल कर उस्को दी कि यह मेरी नि
शानी अपने पास रख कि फिर जो मुलाक़ात हो तो मुझको तू भूल न जावे वह खिल
खिला कर हंस पड़ी और एक थैली अंगूठियों की निकालकर बादशाह को देखला
दी और कहने लगी कि ऐ जवान सच तो यह है कि मेरे ख़ाविंद ने हिफ़ाज़त के वा
स्ते मुझे जंगल में लाकर इस बाग़ के बीच संदूक में बंद करके हौज़ के दर्मियान ल
टका दिया है और आप सौदागरों के साथ सौदागरी करता फिरता है और मेरे
खाने पीने को भी इस जगह मौजूद है कमी कुछ नहीं और जो कभी कभी मुसाफिर भू
ला भटका ख़्वा बादशाह ख़्वा सौदागर इस बाग़ में तेरी तरह से आ निकलता है और इसी
तौर मुझे हौज़ से निकाल कर हमबिस्तर होता है फिर अंगूठी देकर चला जाता है चु
नांचि यह बहुतसी अंगूठियां मेरे पास मौजूद हैं लेकिन नहीं जानती कि कौन सी
किसकी है इसी तरह अंगूठी को और तुझे भी भूल जाऊंगी क्योंकि ऐसे कई हो वें तो कोई
याद रक्खे सैकड़ों हज़ारों का कोई कहां तक ध्यान रक्खे इस बात को सुनकर बादशाह है
रान हुवा और उस्को उसी सूरत से बंद करके तालाब में लटका दिया और अपने लश्कर को
साथ ले कर शहर में आया और तमाम असबाब बादशाही फ़क़ीरों को देकर आप जंगल
में निकल गया और बैठकर यादे इलाही में मशग़ूल हुवा फिर जब तक जीता रहा औरत
का नाम न लिया पस ऐ नादान तू मेरे साथ क्या सलूक करेगी औरत नेक से बाज़ रखती
है चुनांचि हातम ने भी बराह खुदा कमर को हिम्मत की बांधी और कितनी कितनी आफ़
तें उठाकर कुछ कुछ नेकनामी पैदा की सो अब मलका-ज़रींपोश को याद कर के शाहाबा
द की राह छोड़ उस्की मुलाक़ात के वास्ते यमन को जाता है अफ़सोस इसी बात की है
कि वह अपनी मेहनत ख़्वाह नख़्वाह ख़ाक में मिलाता है ज्योंहीं उसने यह बात सुनी वं

हौ। ऐसे जो रे शुकर अदा करके यह बात अपने दिल में कही ऐ हातम यह आवाज़ खुदा की
तरफ़ से आई अब तेरे हक़ में येही बेहतर है कि यमन के तरफ़ से क़दम फेर और शाहाबा
द का रास्ता ले यह बात जी में ठहरा कर शाहाबाद की तरफ़ रवाना हुवा बाद ऐक मुद्द
त के जा पहुंचा वहां के रहने वाले उसे यह चाम कर हुसन बानू के दर्वाज़े पर ले गए वह
औसल हो गई उसे परदे के बाहर बैठलाया और अहवाल पूछा हातम ने पहले अ
पने राह की मुसीबतें बयान की फिर उस पीर मर्द की हक़ीक़त जो ठीक ठीक थी तमा
म औ कमाल कह दी हुसन बानू ने कहा ऐ हातम जो तू कहता है सो सच है इसमें कुछ
शक नहीं फिर उसी वक़्त खाना तरह बतरह का हातम के सामने रखवाया तब उसने
कहा कि ऐ हुसन बानू मैं कारवां सराय में जाकर अपने भाई के साथ खाऊंगा यह क
हकर वहां से उठा और सराय में आकर मुनीरशामी से मुलाक़ात कर के खाना खाया
और तमाम हक़ीक़त बयान की यह सुनकर मुनीरशामी ने बहुत तारीफ़ की फिर अ
पने पलंग पर ब आराम सो रहे सुबह को हातम ने हम्माम कर कपड़े नये पहिन हुसन बानू के डे
वढ़ी पर आया चौपदारों ने खबर पहुंचाई कि हातम आया है उसने परदा करके अंदर बुला
लिया और एक कुर्सी पर बैठला कर कहा कि ऐ हातम सुनने में यों आया है कि एक पहाड़ से
आवाज़ आती है उसी वास्ते उसका कोह निदा नाम रखा है अब उसकी खबर ला कि उसका
आवाज़ करने वाला वहां कौन है और पहाड़ के ऊपर क्या भेद है हातम यह सुनकर वहां
से रुख़सत हुवा और कारवां सरा में आकर मुनीरशामी से कहने लगा कि ऐ मुनीरशामी
अब मैं कोह निदा की खबर लाने जाता हूं अगर ज़िंदगी ओफ़ा करती है तो इस बात की
तहक़ीक़ करके फिर तुमसे आ मिलता हूं और नहीं तो मर्ज़ी अल्लाह की पर तुम किसी
बात का ख़तरा न करयो ॥ —

पांचवां सवाल हातम के जाने का और
कोह निदा की खबर लाने का ॥०

ग़रज़ हातम ने दो चार बातें नसीहत की मुनीरशामी से करके जंगल की राह ली और जिस ब
स्ती में जा निकलता था वहां के लोगों से पूछता कि ऐ अज़ीज़ो तुम में से कोई राह कोह निदा
से वाक़िफ़ है तो मुझे बता दे यह बात सुनकर वे लोग हैरान हो होकर कहते कि भाई हमारी
इतनी बड़ी उमर हुई है हमने उसका नाम भी नहीं सुना राह तो एक तरफ़। और हातम अप
नी जवांमर्दी से अंदेखी अनसुनी राह ते करता हुवा चला जाता था बारे एक महीने के किसी
शहर के गिर्दनवाह जा पहुंचा क्या देखता है कि तमाम मर्द और औरत उस शहर के जंगल
में जमा हुए हैं यह भी उन्हीं के तरफ़ चला और देखा कि एक शख़्स चला आता है सबके

सब उस्की तरफ़ मुतवज्जः हुए और ब आवाज़े बुलन्द कहने लगे कि ऐ मुसाफ़िर ख़ुद हुवा तूं
यहां आया हम कबसे तेरी राह देखते हैं हातम आगे आया तो क्या देखता है कि एक दस्तरखा
न पर तरह ब तरह के खाने चुने हैं और एक मुर्दे के गिर्द बहुत से लोग बैठे हुए हैं हैरान होकर पू
छने लगा कि इस मुर्दे को क्यों नहीं गाड़ते और इस क़दर क्यों रोते हो उन्हों ने कहा कि हमारे
कौम की यह रसम है कि कोई शख़्स क्या उमदः क्या ग़रीब मर जावे तो हम सब उस मुर्दे को
जंगल मे ले आते हैं और खाने सुथरे बहुत सा पकाकर एक दस्तरख़ान पर चुन के मुसाफ़िर की
राह देखते हैं अगर कोई पंछी परदेसी इस अर्से में आ गया तो मुर्दे को गाड़ देते हैं और खाना उ
स मुसाफ़िर के आगे रख देते हैं चुनांचि इस मुर्दे को सात रोज़ हुए हैं कि यह यों हीं यहां पड़ा है
और कोई मुसाफ़िर एक भी इस तरफ़ को आया नहीं हम अजब मुसीबत मे गिरफ़्तार थे कि
हर रोज़ खाना शाम के वक़्त अपनी औरतों को भेज देते थे शुकर है कि अब सातवें दिन तेरी सूरत
देखी अब इसको भी गाड़ेंगे और खाना भी खावेंगे हातम ने कहा कि अगर एक महीने तक
कोई मुसाफ़िर यहां न आवे तो इस मुर्दे का अहवाल क्या हो और तुम किस सूरत से जियो उ
न्हों ने कहा कि यह बात सच है पर सातवें दिन खाह न खाह मुसाफ़िर कहीं न कहीं से आ ज़ाहिर
होता है अगर पंदरह रोज़ न आवे तो तमाम दिन रोज़ा रक्खें शाम के वक़्त सिरिफ़ पानी पि
यें और मुर्दा भी एक महीने तक नहीं सड़ता हातम ने कहा कि अगर एक महीने से ज़ियादा
गुज़रे तो बदबू आवेगी उस वक़्त क्या करोगे वे बोले जो ऐसा ही हो तो मुर्दे को गाड़ दें और
तमाम औरत मर्द छः महीने तक रोज़ा रक्खें शाम के वक़्त दरगाह इलाही में तोबा करें और
खाना हर रोज़ पड़ोसियों में बांटें फिर मुर्दे की क़बर पर जाकर बहुत सा माल नज़र रख एन क
र के अपने अपने काम मे मशग़ूल होवें यह बात सुनकर हातम हैरान हुवा और उन्हों ने उ
स मुर्दे को तेखाने मे उतारकर फ़र्श पाकीज़ः बिछा के उस्को उस पर लेटा दिया और तरह
ब तरह के खाने रक्खे ख़ुशबोइयों की बत्तियां जलाकर सात बार उस्के गिर्द फिरे फिर बा
हर निकल आए और दस्तरख़ान पर जा बैठे फिर हातम से कहा ऐ मुसाफ़िर खाने में पहले
तूं हाथ डाल और पेट भर कर खा कि यह क़बूल हो और तेरी मेहरबानगी से हम भी रोज़ा
खोलें यह बात सुनकर हातम खाने लगा फिर वे भी शरीक खाने के हुए बाद उस्के जो ब
चा उस्को अपने अपने घर भेजवा दिया वह उनकी औरतों ने खाया वे नहाये और पाक
पाकीज़ः कपड़े पहनकर घर चले और हातम से कहा कि ऐ जवान अगर तेरा जी चाहे तो
थोड़े दिन हमारे यहां मेहमान रह हातम ने कहा बहुत अच्छा तुमारी खातिर से दो चार
रोज़ रह सकता हूं ग़रज़ वे उस्को शहर में ले गए और एक मकान सुथरा सा उस्के रहने को

खाली करवा दिया और सरंजाम खाने पीने के खूब सूरत लौंडियों समेत भिजवा दिये हा
तम ने अपने दिल में कहा कि यहां की अजब रसम है अगर मैं इन कामों से फुरसत
पाऊं और खुदा मेरे मतलब को पूरा करे तो मैं भी अपने शहर में जाकर इसी तरह मेह
मानदारी करूंगा। और वे औरतें आरज़ूमंद थीं कि अगर इस जवान का हम में से जिस
पर जी चाहे उस से वस्ल तमाम मिले लेकिन हातम ने किसी तरफ़ ख्वाहिश की नज़र
से भी न देखा सोहबत करना तो दूर है जब सात रोज़ गुज़र गये तब उन औरतों ने अ
पने सर्दारों से जाकर हातम की निहायत नेकज़ाती बयान की हाकिम शहर ने उसको
अपने रूबरू बुलवाया इज़्ज़त और हुरमत से मसनद पर बैठलाया और कहा कि ऐ ज
वान अगर इस शहर में बूदो बाश अपनी करे तो ऐन मेहरबानी है और मैं भी अपनी बेटी
तेरे खिदमत में दूं हातम ने कहा मुझ को एक काम ज़रूर है बसबब उसके लाचार हूं न
हीं तो रहता यह सुन कर उसने कहा कि हम भी अगर उस काम से खबरदार हों तो ने
रास्ता बतादें हातम ने अर्ज़ की कि मैं यह भी नहीं चाहता कि कोई मेरे साथ तकलीफ़ खींचे।
वह बोला कि अगर साथ नहीं लेता तो भला कह तो दे कि वह ऐसा काम क्या है हात
म ने कहा एक औरत हुस्न बानू नाम सात सवाल रखती है जो कोई उनका जवाब दे उ
सी से वह अपना निकाह करे हासिल यह है कि एक शहज़ादा मुनीर शामी उस पर आशि
क हुवा है न ताक़त जुदाई की रखता है न कुदरत मुलाक़ात की और यह भी नहीं हो सक
ता कि उसके सवाल पूरे करे मगर उसकी जुदायगी में जंगल जंगल रोता फिरता था इत्तिफ़ा
क़न एक दिन मुझ से मुलाक़ात हो गई मैं ने जो उसे बहालत तबाह आहें भरते देखा नि
हायत ग़मगीन हुआ बल्कि रो दिया आख़िरेकार मैं न ताब ला सका बराय खुदा उ
सके लिये अपने शहर से निकला और मुसाफ़िरत इख़्तियार की खुदा के फ़ज़ल से चार
सवाल उसके पूरे कर चुका हूं यहां पांचवें सवाल की बारी है और वह यह है कि कोहे नि
दा की खबर लाया चाहिये इसी तलाश में केतने दिन गुज़र चुके हैं जिस से पूछता हूं
कोई नहीं बतलाता अगर तुम को कुछ खबर हो तो उसका खोज बतादो गोया कि तुम ने मे
रा साथ दिया मरद की मेहरबानी फ़र्माई यह बात सुन कर उसने कहा कि मैं ने अपने बु
ज़ुर्गों से सुना है कि दक्खन की तरफ़ तिलस्मात है और उसके बाईं तरफ़ एक शहर
आली शान आबाद है वहां आज तक किसी ने मुर्दा नहीं देखा न क़बर देखी है औ
र न कोई किसी के वास्ते रोता है यह हक़ीक़त सुन कर हातम ने कहा कि मुझ को उसी
तरफ़ जाना है वह बोला कि ऐ अज़ीज़ सुनी हुई राह तूं किस तरह चलेगा और मं

जिस्ने मक़सूद को क्योंकर पहुँचेगा हातम ने कहा कि जो मुझे यहाँ लाया है वही
वहां पहुँचा देगा इस बात को सुनकर उस्ने बहुत सा ज़र और जवाहिर उसके आगे
रखवाया हातम ने उसमें ख़र्चे राह के मवाफ़िक़ लिया और बाक़ी फ़क़ीरों को देकर
उसी तरफ़ का रस्ता पकड़ा बाद एक मुद्दत के क़रीब किसी शहर के जा पहुँचा औ
र उस्के गिर्द कोई क़बर न देखी जाना कि वह शहर यहीं है अंदर गया वहां के रह
नेवालों ने पूछा कि ऐ जवान तू कहां से आया है और कहां को जायगा हातम ने क
हा शाहआबाद से आया हूं और कोह निदा को जाऊंगा उन्होंने कहा कोह
निदा का रस्ता यहां से बहुत दूर है तू नहीं जा सकेगा उस्ने जवाब दिया कि जो मुझे
यहां लाया है वह करीम कारसाज़ वहां भी पहुंचावेगा फिर उन्होंने कहा कि तू
आज की रात तो यहां रह जा हमारी दाल रोटी क़बूल कर हातम इस बात को सुन
कर वहीं उतर रहा और वहां एक शख़्स कितने दिनों से बीमार था उसके वारसों
ने जमः होकर उसको ज़िबह किया और गोश्त आपस में बांट लिया और यह शख़्
स जिस्ने हातम को मेहमान रक्खा था अपना हिस्सा पकाकर एक कूज़ा पानी
और दो चार रोटियां शाम के वक़्त हातम के पास ले आया और कहने लगा कि ऐ
मुसाफ़िर जल्द इसको खा कि कभी ऐसी न्यामत न खाई होगी हातम ने कहा ऐ अज़ी
ज़ मैंने जितने चरिंदे और परिंदे हलाल हैं सब खाये हैं यह किस जानवर का गो
श्त है जो मैंने नहीं खाया उस्ने कहा अलबत्तः तूने जानवरों का गोश्त खाया हो
गा पर यह आदमी का है ऐसा कभी न खाया होगा हातम ने यह बात सुनकर कहा
कि तुम आदमी ख़ोर हो तुमसे डरा चाहिये शायद किसी मुसाफ़िर को मार डाला
है उस्का गोश्त खाया चाहते हो मालूम होता है कि यह क़ायदा है तुम्हारा कि जो मु
साफ़िर भूला भटका आवे उसको तुम ज़िबः करके गोश्त आपस में बांटकर खा लेते
हो वह बोला कि ऐ मुसाफ़िर तोबा कर ख़ुदा से डर हम मुसाफ़िरों को मारकर
नहीं खाते तब हातम ने कहा कि यह अजब हक़ीक़त है तू आप ही कहता है कि
यह गोश्त आदमी का है पस कोई अपने घरवाले को ज़िबः करके नहीं खाता मग
र ग़ैर को उस शख़्स ने जवाब दिया कि यह ग़लत समझा है तू हमारे मुल्क की य
ह रसम है कि जो कोई बीमार पड़ता है उसके कुनबे के लोग उसको ज़िबेहः करके गोश्त
के हिस्से आपस में कर लेते हैं चुनांचि इसी सबब से हमारे शहर में अपने मौत
से कोई नहीं मरता और न क़बर कहीं है हातम ने इस हक़ीक़त को सुनकर कहा कि

लानत खुदाकी तुम्हारीरसमपर और तुम्हारे शहरपर खुदाकरीम है अक्सर बीमारों
को अच्छा करताहै और अक्सर अच्छों को बीमार डालताहै पस जो बीमार हो तुम उ
स्को ज़िबह करके खाजाओ यह काम किसकौममें दुरुस्तहै यह क्या ज़ुल्म करतेहो
इस हरकतसे तुम सबके सब गुनहगार हो और हज़ारों खून तुम्हारी गर्दनोंपर हैं
तुम्हारा मुह देखना रवा नहीं यह कहकर उठ खड़ा हुवा और जंगलकी राहली।
बादके तनें दिनोंके एक आबादी नज़र आई उस्की तरफ़को चला जब क़रीब जा
पहुंचा तो क्या देखताहै कि बहुतसे लोग मैदानमें आग जला कर उस्के गिर्द ख
ड़े हैं उसने बढकर उनसे पूछा कि ऐ यारो यह कौनसा मुल्कहै और तुम कौन हो
और इस जगह येतनी लकड़ियां जमा करके आग क्यों जलारहे हो ओन्होंने क
हा कि ऐ फ़क़ीर तू अपनी राह ले तुझे इस्के दरियाफ़्त करनेसे क्या हासिल यहां कुछ
र सोंई नहीं होती जो हम तुझे कुछ दें हमारे क़ौमसे आज एक शख़्स मरगयाहै उस
की जोरू उस्के साथ जलतीहै हातमने कहा ऐ यारो तुम इस मुर्दे को ज़मीनमें क्यों
नहीं गाड़ते और इस ग़रीब औरतको जीतेजी क्यों जलातेहो ओन्होंने कहा ऐ
अज़ीज़ मालूम हुवा कि तू इस मुल्कका रहनेवाला नहीं साहेब यह मुल्क हिंदो
स्तानहै यहांकी रसम यहीहै कि जोरू अपने ख़ुशीसे खाविंदके साथ जलतीहै
हातमने कहा साहबो मुर्देके साथ जीतेको जलाना यह रसम निहायत बदहै यह क
हकर उनसे रुख़सत हुवा और किसी गावंमे जापहुंचा वहां एक शख़्ससे पानी मांगा वह
एक कटोरा दूधका और एक मठ्ठेका भर करले आया और कहने लगा कि अगर तेरा जी
छाछ पर चले तो यह हाज़िरहै और दूधकी तरफ़ ख़ाहिश करे तो वह दूध मौजूद है
इन दोनोंमेसे जिसे चाहे उसे पी हातमने पहले मठ्ठा पी लिया फिर दूधका प्याला मांगा
उसने थूड़ीसी शक्कर उसमें डालकर वह भी प्याला हवाला किया और कहा कि ऐ मुसाफ़ि
र इस वक़्त मेरे घरमें अच्छे खासे महीन बासमती चावल पके हैं बल्कि तय्यार धरे हैं
अगर तू कहे तो वहभी ले आऊं उनके साथ खा निहायत मज़ा मिलेगा हातम बो
ला कि बहुत अच्छा नेकीका पूछना क्या और अपने दिलमें उस्की हिम्मत पर आफ़रीं क
रनेलगा ग़रज़ हिन्दू एक थालीमें थोड़ा औटा दूध और चावल ले आया हातमने।
अच्छी तरह खाया और रात की रात उसी गांवमें सो रहा सुबह के होते ही उस हिं
दू की जोरूने आकर कहा कि रसोंई तय्यार है कुछ उसे खाओ और दो चार दि
न यहीं रहो क्योंकि मांदगी राहकी दूर होवे यह बात सुनकर हातमने उन दोनों

को कहा हज़ार हज़ार शाबाश तुम्हारी इस हिम्मत पर और इस मुसाफ़िर परवरी पर यह
सुनकर ओन्हों ने निहायत आजज़ी से कहा कि हमसे तुमारी खिदमत कब हुई यह खा
ना घर में मामूली लड़के वालों के वास्ते मौजूद था वही हम ले आये हैं अगर दो तीन दिन यहां
तशरीफ़ रक्खो तो अलबत्तः हम मुवाफ़िक अपने मक़दूर के कुछ खिदमत बजा लावें हात
मने कहा बहुत अच्छा मैं तुमारी खातिर से दो चार रोज़ रहूंगा इस बात को सुनकर वे बहुत
खुश हुए फिर उस हिंदू ने एक मकान में एक पलंग निहायत तकल्लुफ़ से बिछाया और फ़र्श
भी उसके आगे सुथरा साफ़ कर दिया फिर खाने तरह बतरह के पकवा कर उसके आगे रक्खे
और कहा कि इसमें से कुछ खाओ तो निहायत एहसान और मेहरबानी है हातम ने जो ऐसे
खाने कभी न खाये थे उनको खाकर निहायत खुश हुवा और बहुत सी तारीफ़ें करके उनसे क
हने लगा कि मुल्क हिंदोस्तान आज बगुलिस्तान है लेकिन यहां की भी रसम बद है कि
जीती औरत को मुर्दे खसम के साथ जलाते हैं इस बात को सुनकर उस हिंदू ने कहा कि
सच है पर जोरू खसम उलफ़त बहुत सी रखते हैं बल्कि आपस में आशक और माशूक हो
ते हैं अफ़सोस है कि खाविंद मरे और जोरू जीती रहे। हम बज़ोर नहीं जलाते वह अपनी
खुशी से जलती हैं अगर थोड़े दिन इस शहर में रहो तो हम तुम्हें देखला देंगे यह वहां रहा इ
त्तिफ़ाकन वहां का रईस बीमार होकर दो चार दिन में मर गया था उसकी चार जोरूयां थीं औ
र पहली बीबी का एक लड़का था जब उसकी अर्थी बनाकर ले चले तब वे चारों कमख़्वाब के
लहंगे पहन लालतास की साड़ियां बांध गहने पाते से आरास्ता हो फूलों के हार गले में डा
ल बालों को बिखेर साथ हो लीं कबीले के लोग उनके पांव पर गिर पड़े कि तुम भरी पूरी हो
तुम्हें जलना मुनासिब नहीं ओन्हों ने किसी का कहना न माना तब हातम उनके पास जा
कर कहने लगा कि ऐ परीज़ादो तुम्हें शरम नहीं आती जो अपने घर से निकलकर नाम
हरमों में आई हो और एक मुर्दे के साथ जलने चाहती हो वे हंसकर कहने लगीं कि ऐ
जवान तुझे हमें देखने से शरम नहीं शरम नहीं आती और हम तो मुर्दे हैं हमको
सतर परदे की कुछ खबर नहीं क्योंकि वह कौन सा दिन था कि इस मुर्दे के साथ हमने ऐ
श और आराम नहीं किया था अब वह जो मर गया तो हम उससे जुदा हों और जीती रहें
यह बात मुरव्वत और मरव्वत से दूर है सेवाय उसके तमाम उमर जुदाई के आग में भी
जलना पड़ेगा जिस्से बेहतर यही है कि एक ही बार उसके साथ जल बुझें जो तमाम उमर
ग़म से छूटें ग़रज़ ओन्हों ने हातिम के कहने को भी न माना और दीवानों के तरह इधर
उधर देखती भालती चटाक जा पहुंची फिर उस मुर्दे को लेकर चिता में रक्खा और आ

पहलवानी हुई उस्के गिर्द गईं फिर किसी ने सिर उस्का ज़ानू पर रख लिया किसी ने
पांव गोद में ले लिया निदान चीता में आग लगा दी तब हातम ने जाना कि इस आग के
गरमी से डरकर भाग जायेंगी लेकिन यह गुमान ग़लत पड़ा वे हंसी खुशी से उसके साथ ज
लकर खाक हो गईं हातम इस अहवाल को देखकर घबरा गया और अफ़सोस करने ल
गा। जब वे लोग अपने अपने घरों को चले तो हातम भी उस हिंदू के साथ चला आया।
तब उस हिंदू ने कहा कि ऐ जवान क्यों देखा तूं ने औरतें अपनी रज़ा और खाहिश
से जलती हैं या किसी ने ज़ोर ज़ुल्म किया और शर्त्ते मुहब्बत की यही है हातम ने क
हा यह सच कहते हो पर राह दोस्ती और वफ़ादारी का यह है कि उस्के पीछे जुदाई
के आग में जलें क्योंकि वह आग इस आग से भी तेज़ ज़ियादः है ग़रज़ वार कई दिन
के फिर हातम ने कहा कि ऐ अज़ीज़ मुझ को हनिदा के तरफ़ जाना है रुखसत कर
यह बात सुनकर उस हिंदू ने कहा कि ऐ जवान कोह निदा यहां से दूर है तू न पहुंच
सकेगा हातम ने कहा खुदा करीम है वह बहरसूरत पहुंचा ही रहेगा यह कहकर व
हां से रुखसत हुवा और मुल्क मुल्क गांव गांव की सैर करता हुवा उत्तर की तरफ़ च
ला जाता था कि एक शहर देख लाई दिया जब उस्के नज़दीक जा पहुंचा तो लोगों
को देखा कि बहुत से जमा हैं और शोर गुल करते हैं इसने जाकर पूछा कि ऐ या
रो इस शोर करने का सबब क्या है किसी ने कहा कि इहां के रईस की बेटी मर गई है
हम सब चाहते हैं कि उस्के खाविंद को भी उस्के साथ जीता गाड़ें वह इस बात को क
बूल नहीं करता इसी बातों से यह शोर और गुल है हातम ने कहा तुमारा रईस कहां
है मुझ को उस्के पास ले चलो मैं कुछ उससे कहूंगा यह बात सुनकर वे उस्को अप
ने सर्दार के पास ले गये हातम ने उस्को देखते ही कहा कि ऐ मर्द बुज़ुर्ग तुम्हारी
क्या रसम है जो जीते को मुर्दे के साथ गाड़ते हो इस पर कि वह ग़रीब राज़ी नहो ज़ब
रदस्ती करते हो और खुदा से नहीं डरते वह बोला ऐ अज़ीज़ यह जवान भी तेरे
ही तरह से इस शहर में मुसाफ़िर वारिद हुवा था थोड़े रोज़ यहां रहकर मेरी लड़
की को चाहने लगा निदान हम लोगों में मिल गया और इस शहर का यह दस्तू
र है कि जब तक लड़की या लड़का अपनी जवानी पर नहीं आता तब तक हम
लोग अपनी खाहिश से नहीं ब्याहते जब तक आपस में इशक मुहब्बत न हो
यहां तक कि हर एक अपनी खुशी से इक़रार करे कि जो कोई हम में से मर जाय
गा तो दूसरा भी उस्के साथ जीता जी गड़ेगा तब हम उन दोनों को ब्याह देते हैं

चुनांचि यह जवान भी हमारी रसम से ख़बरदार होकर इस लड़की पर आशि
क़ हुवा था जब मुहब्बत कमाल देखी तब मैं हाकिमे शहर के पास उन दोनों को लेग
या उसने उनसे कहा कि हमारे मुल्क की यह रसम है जो औरत मर जाय तो ख़सम को
उसके साथ गाड़ते हैं जो ख़सम मर जाय तो जोरू को उसके साथ दफ़न करते हैं इस बात
को उन दोनों ने क़बूल किया तब हमने उनका ब्याह कर दिया यह क्या इंसाफ़ है कि यह
एक मुद्दत तक उसके साथ चैन करता रहा और उसकी जवानी के बाग़ से गुले ऐश लूटता
रहा अब जो वह मर गई है तो यह अपनी ख़ुशी से उसके साथ नहीं गड़ता और अपने इक़
रार पर क़ायम नहीं रहता इसमें किसका क़सूर है कुछ हम ज़बरदस्ती से किसु को नहीं गा
ड़ते अगर उसको बांध कर ज़बरदस्ती रख दें तो अलबत्तः ज़ुल्म है तूं हीं पूछ कि यह अपने
क़ौल से क्यों फिरा है और अपने वादे को क्यों नहीं पूरा करता यह बात सुनकर हातम उ
सके पास गया और कहने लगा कि ऐ जवान तू किस लिये अपने कहने पर अमल नहीं क
रता कब तक जीयेगा आख़िर मरना है बेहतर यही है कि जो कुछ तूंने कहा है उस
पर साबित रह उसने कहा ऐ मुसाफ़िर तूं भी उन्हीं मे मिल गया जो यह बात कहता
है तू अपने शहर का दस्तूर बयान क्यों नहीं करता हातम ने कहा मैं क्या कहूं तू आप ही
इक़रार कर चुका है अब फिरने से तुझे शरम नहीं आती उसने कहा कि यह मुझ
से कभीं न होगा जो मैं उनका कहा करूंगा अगर जीते जी मुर्दे के साथ गडूंगा हा
तम ने मालूम किया कि ये सबके सब उसको बे गाड़े न रहेंगे और यह भी अपने ख़ुशी से
न गड़ेगा इस बात को सोचकर उसने अपने शहर की बोली में कहा कि तू ख़ातिर जमा
रख मैं तुझे इस क़बर से किसी न किसी तरह से निकालूंगा पर अब इनके सामने इसमें गड़
उसने कहा अगर गडूंगा तो तेरे निकालने के वक़्त तक जीता न रहूंगा दम रुक कर मर
जाऊंगा फिर हातम ने उसकी तसल्ली करके उन लोगों से कहा कि यारो यह अजल गि
रफ़्तः अपनी बोली में कहता है कि हमारे शहर का यह दस्तूर है कि क़बर को बतौर को
ठरी के बनाते हैं अगर यह भी उसी तौर से बनावेंगे तो मैं अपनी ख़ुशी से गडूंगा इस
बात को वे सुनकर कहने लगे कि यह बात हाकिम से इलाक़ा रखती है हम कुछ नहीं
कर सकते वह जो कहेगा सो करेंगे हातम उन सभों को वहां के हाकिम के पास ले गया
वे सबके सब कहने लगे ख़ुदावंद यह शख़्स हरगिज़ गड़ने पर राज़ी नहीं होता य
ह बात कहता है कि जिस सूरत से मेरे मुल्क में क़बर खनती है अगर उस ढब की
बनाओगे तो मैं क़बूल करूंगा हातम से कहा कि उसके शहर में क़बर किस तरह की

बनती है हातमने कहा हज़रत सलामत कोठरी की तरह है और बहुत बड़ी कि जिसमें दस
बीस आदमी अच्छी तरह से बैठें यह बात हातम की ज़बानी सुनते ही हाकिम फ़िकर
में हुवा बाद एकदम के कहने लगा कि ख़ैर जिस सूरत की क़बर बनाने को कहता है वै
सही तय्यार करो बात यह है कि वह अपनी ख़ुशी से गड़े यह सुनकर वे लोग फिर
आये और एक क़बर वैसी ही बनाई तब हातम ने उन लोगों की आंख बचाकर उस्से
कहा कि तू हरगिज़ अंदेशा न कर मैं रात के वक़्त तुझे इसमें से निकाल लेऊंगा वह इस बा
त पर राज़ी हुवा और उन लोगों से कहने लगा कि ऐ यारो अब देर न करो जो तुम किया
चाहते हो सो मुझे क़बूल है आख़िर ओन्होंने उन दोनो उस क़बर में गाड़ दिया और
पत्थर से उस्के मुहं को बंद करके हातम समेत अपने शहर को गये फिर उस्की मेहमा
नदारी की और एक मकान सुथरा सा सोने को दिया पर वह मुंतज़िर रात होने का
था कि किसी तरह से उस शख़्श को क़बर से बाहर निकाल ले जब रात हुई और घ
र वाले सो रहे तब हातम अपने बिछौने से उठा और उस क़बर की तरफ़ गया उस मु
ल्क का यह दस्तूर था कि तीन रोज़ तक क़बर पर मुर्दे के वारिस तमाम रात जागा करें
और घर न आवें और लोगों का मुंह न देखें चुनाचि हातिम इस तरह क़ाबू न पाया ख़ा
ली फिर फिर आया चौथी रात लोग अपने अपने घर आये हातम उठकर उस क़
बर पर गया और वह शख़्स क़बर के अंदर हातम को इस तरह से बुरा भला कहकर
रो रहा कि वह मुसाफ़िर झूठा और दग़ाबाज़ था जो मुझ ग़रीब को अपनी दग़ाबा
ज़ी से इस क़बर में गड़वा दिया मैंने आप बुरा किया जो ऐसे का कहना माना और उस्के
बात को सच्च जाना किसी का इसमें क्या दोष अपना किया अपने आगे आया अल
ग़रज़ हातम अपना मुहं ताबदान पर रखके पुकारा कि ऐ जवान मैं तुझे निकालने को
आया हूं उसने जवाब न दिया हातम ने जाना कि शायद मर गया फिर पुकारा जब
भी न बोला फिर तो उस्को यक़ीन हुवा कि यह हरगिज़ नहीं जीता है निहायत अ
फ़सोस में गया बेइख़्तियार रो दिया तीसरे बार ब आवाज़ बलन्द पुकारा कि ऐ ज
वान अगर जीता है तो जवाब दे नहीं तो क़यामत तक इसी क़बर में रहेगा मैं अप
ने वादे को पूरा कर चुका हूं इतने में वह चौंका और सुना कि कोई शख़्स क़बर पर
चिल्ला रहा है उठ खड़ा हुवा ताबदान के पास आया और कहने लगा तू कैौन जो
पुकारता है हातम ने जो उस्की आवाज़ सुनी सिजदे शुकर बजा लाया और बोला
मैं वही हूं कि जिसने तुझे इक़रार किया था यह कहकर ख़ंजर कमर से निकाल ।

लिया और खोदकर उस्को निकाला खाना पानी खिला पिला कर ऐक साअत
के बाद कहा कि अब जिधर चाहे उधर चला जा उसने कहा मेरें पास कुछ खर्च नही
रहका हातमने कई अशर्फ़ियां खीसे से निकाल कर दीं फिर रुखसत किया
और आप उस कबर को दुरुस्त कर अपनी जगह पर आके सो रहा इस लिये कि
कोई मालूम न करे इतने में सुबह हुई तब उठकर उन लोगों से कहने लगा
कि मुझको कोहे निदा की खबर लेने जाना है रुखसत करो उन्होंने कहा
कोहनिदा यहां से बहुत नजदीक है बेहतर है कि तशरीफ़ ले जाइये पर
इतनी बात याद रखियो कि थोड़ी दूर जाकर ऐक दुराहा है चाहिये कि उ
स्की दाहिनी तरफ की राह इखतियार करे यक़ीन है कि मंजिले मकस
द को पहुंचेगा हातम उनसे रुखसत हुआ और इस रोज तक रात दि
न मंजिलें करता हुआ चला गया ग्यारहवें दिन उस दुराहे पर जा पहुं
चा और उस्की नसीहत को भूल कर बाईं तरफ़ चल निकला जिस रा
ह को उसने मनअ किया था वही उसने इखतियार की बाद दो तीन दि
न के क्या देखता है कि ऐक तरफ से बहुत से जानवर भागे हुऐ चले
आते हैं यह ऐक कोने में खड़ा होकर देखने लगा कि शायद भेड़ि
या या कोई और जानवर पीछे पड़ा है जो ये इतना जी छिपाये गिर
ते पड़ते चले आते हैं यह समझ कर ऐक दरखत पर चढ़ गया क्या दे
खता है कि बहुत से हाथी मस्त और गेंडे भी घबराये हुऐ बे इख
तियार दौड़े आते हैं और उनके पीछे ऐक छोटा सा जानवर दहश
तनाक सूरत ऊराग की सी आखें दुम सिर पर छतर किये चला
आता है हातम डरा कि यह कोई बला बड़ी है कि जिस्के डर से ऐसे
बड़े बड़े जानवर भागे चले आते हैं मैं गरीब किस गिनती में हूं फि
र अपने दिल को मज़बूत कर खंजर कमर से खींच मुसैद हो बै
ठा इत्तिफ़ाकन वह जानवर उसी दरखत के नीचे आ था और
आदमी की बू पाते ही गुर्रा कर उछला चाहता था कि हातम को
पकड़ कर चीर डाले वोंहीं उसने ऐक ऐसा खंजर मारा कि दोनों
हाथ कट कर गिर पड़ा और संभल कर निहायत गुस्से से लप
का हातमने फिर उस्के पेट में ने खंजर मारा अंतड़ियां निकल पड़ीं
जमीन पर गिर पड़ा और गिरते ही पेशाब कर दुम को उस में
भिगो कर हिलाने लगा हासिल कलाम जहां जहां उस्की बूंदें

पड़ीं वहां वहां आग लग उठी जब उस दरख़्त के पास पहुंची हातम छू-
ट कूद कर ऐक तालाब में जा पड़ा और वह जानवर मर गया जब आ-
ग बुझ चुकी हातम पानी से निकल उसी दरख़्त के तले आया और उ-
स जानवर के चार दांत जो ख़ंजर के बराबर तेज़ थे उखाड़ लिये और
दुम दोनो कानों समेत काट ली फिर तर्कश में रख कर आगे चला बाद
कई दिन के दूर से ऐक किला दिखलाई दिया उसी तरफ़ चला जब न-
ज़दीक पहुंचा उसे सुनसान पाया और कंगूरे उसके आस्मान से ल-
गे देखे निदान अंदर गया तो क्या देखता है कि बड़ी बड़ी इमारतें उस
में आईनः की मानिन्द चमक रही हैं और बाज़ार चौपड़ का निहाय-
त सुथरा साफ़ आरास्तः हो रहा है और जिस दूकान में जो चीज़ चाहि-
ये सो मौजूद है मगर आदमी का नाम ओ निशान नहीं यह अहवा-
ल देख कर हैरान हुआ दिल में कहने लगा कि कोई बला या देव इ-
स शहर में आया है कि जिसके डर से यहां के लोग अपनी अपनी
दूकानें छोड़ छोड़ भाग गये हैं यह बात दिल में कहता हुआ आगे
बढ़ा यहां तक कि ख़ास किलः बादशाही तक जा पहुंचा उस में बाद-
शाह अपने बाल बच्चे औ घर बार माल औ असबाब समेत रहता
था और दो चार नौकर चाकर भी बाहर के दर्वाज़े पर खिड़की में बै-
ठे थे हातम को देख कर ऐक बोला कि बाद मुद्दत के ऐक मुसाफ़िर
इस शहर में आया दूसरे ने कहा कि इसको पुकारो जो इधर आवे यह
बात सुनकर ऐक शख़्स ने पुकारा हातम उसकी आवाज़ सुनकर व-
हीं उस महल की ऐक खिड़की के नीचे खड़ा हो रहा इतने में बादशाह
की नज़र उस पर जा पड़ी उसनें खिड़की से सिर निकाल कर कहा कि
ऐ मुसाफ़िर तू कहां से आया है और कहां जायगा हातम ने अर्ज़ की
कि मैं यमन का रहने वाला हूं शाहआबाद से आया हूं और क़सद
कोहे निदा का रखता हूं यह बात सुनकर बादशाह ने कहा ऐ जवा-
न तू राह भूल गया जो बाईं तरफ़ के रस्ते से आया शायद तेरी मौत
तुझको यहां लाई है इसी वक़्त तू जान कि जहान से जा चुका हात-
म ने अर्ज़ की कि अगर यही ख़ुदा की ख़्वाहिश है तो मैं भी दिल से रा-
ज़ी हूं लेकिन तू अपनी हक़ीक़त कह कि ज़ाहिर में दौलतमंद मालू-
म होता है फिर किला बंद क्यों किया है सबब बतला उसने कहा कि

मैं इस शहर का बादशाह हूं और इस मुल्क में एक बला कितने दिनों से आती
है उसके सबब से क्या रैयत क्या सिपाह जितने थे मुझे छोड़ छोड़ के चले गये
शहर वीरान हो गया इसमें कसूर कुछ उनका नहीं क्योंकि उस बला से किसी
शख्स की भी ताकत नहीं जो मुकाबिला कर सके आदमी की तो गिनती क्या है औ
र मैं अपने शहर म औ हया से बाल बच्चे समेत किलः बंद होकर बैठा हूं इतनी
ताकत नहीं रखता कि उसे मारूं लाचार होकर गोशः इख़्तियार किया है हातम
ने कहा कि ऐ बादशाह वह बला क्या कोई देव है या कोई बड़ा जानवर है कि कोई उ
सके साम्हने नहीं हो सकता बादशाह ने फ़र्माया कि वह कोह काफ़ में रहता है
मगर थोड़े दिनों से यहां उसका गुज़र होने लगा है उसी के बाइस तमाम मु
ल्क वीरान हो गया है हर रोज़ एक वक़्त उसको आना और दो चार आदमियों
को खाकर चले जाना मगर आज तक उसका क़दम किलः में नहीं आया इस
वास्ते कि एक खंदक़ बड़ी इसके गिर्द पानी से हमेशः भरी रहती है मालूम नहीं
कि वह क्या है यह बात सुनकर हातम बोला कि ऐ बादशाह तुझे मुबारक
हो कि मैंने उसका काम तमाम किया फ़ुलाने जंगल में खुदा की अजब कुदर
त है जो मैं कोहे निदा की राह भूलकर बाईं तरफ़ को आ निकला फिर तमाम ह
क़ीक़त उस जानवर की और अपनी बयान की इस बात के सुनते ही वह अप
ने किले से उतरा और हातम को गले लगाकर अन्दर ले गया बइज़्ज़त तमाम
मसनद पर बिठलाया खाने तरह बतरह के मंगवाकर उसके आगे चुनवाये
हातम ने खूब पेट भरकर खाया और बादशाह भी खाने में उसका शरीक र
हा जब खा पी चुके तब बादशाह ने उससे कहा मैं क्योंकर एतबार करूं कि
वह बला मारी गई तब हातम ने उसकी दुम और चारों दांत और कान तर्क
श से निकालकर दिखला दिये बादशाह उनके देखते ही हातम के पांव पर
गिर पड़ा और बहुत सी शुक्रगुज़ारी की फिर हर एक तरफ़ ख़त और पर
वाने लिखवाकर भिजवाये कि वह बला दफ़ः हुई तुम सब बेधड़क अब अ
पने मुल्क में बसो और औक़ात अच्छी तरह काटो बाद चन्द रोज़ के हातम ने
रुख़सत चाही और अर्ज़ की कि एक रहबर मेरे साथ कर दो कि कोहे निदा
का रस्ता बतला दे बादशाह ने फ़र्माया कि ऐ जवान यह शहर अब खुदा
के फ़ज़ल से आबाद हो जायगा दिल से अपना ही समझो यहीं का रहना इ
ख़्तियार करो मैं अपनी बेटी तुम्हारी ख़िदमत में देता हूं इसको क़बूल क
रो हातम ने कहा अब तक मैं बंदगान खुदा के कामों से फ़राग़त नहीं पाता

ऐशदुनिया की हराम जानता हूं बादशाह ने यह बात सुनकर कहा आफ़रीं तेरी हि
म्मत और जवांमर्दी पर और ऐक रहबर साथ देकर रुख़सत किया हातम उसके
साथ हुवा थोड़ी दूर जाकर वह कहने लगा कि ऐ हातम कोहे निदा की यही राह
सीधी है अब बेधड़क चला जा हातम उसको रुख़सत करके उधर मुतवज्जः
हुवा बारे थोड़े दिन के ऐक शहर आबाद में जा पहुंचा वहां के लोग उसको हा
किम के पास ले गये उसने उठकर ताज़ीम की और पूछा कि ऐ मुसाफ़िर तूं
यहां कहां से आया है क्यों कि इस शहर में सिकन्दर बादशाह तशरीफ़ लाये
थे अब तुझको देखा इसका सबब क्या है सच कह हातम ने कहा कि मुझको
हुस्नबानू बर्ज़ख़ सौदागर की बेटी ने भेजा है कि तू जाकर कोहे निदा की
ख़बर जो ठीक ठीक हो सो ले आ सच तो यह है कि यहां तक पहुंचने पहुंच
ने में मैंने बहुत से रंज खींचे अब उम्मेदवार इस बात का हूं कि अगर तुम उसके
भेद से वाक़िफ़ हो तो कह दो यह निहायत बंदः निवाज़ी और मुसाफ़िर प
रवरी है क्यों कि मेरी मेहनत हासिल हो जाय हाकिम शहर ने कहा कि ऐ
जवान भेद कोहे निदा का ऐसा नहीं जो भी बयान हो सके अगर तू थोड़े
रोज़ यहां रहेगा तो मालूम होगा हातम ने कहा बहुत अच्छा हाकिम ने उ
सके रहने को ऐक मकान आलीशान फ़र्श पाकीज़ः से आरास्ता करवा दि
या हातम उसमें रहने लगा और वह दोनों वक़्त खाना और पानी भेजने लगा
और आप भी अक्सर उससे सोहबत रखता ऐक दिन से दो सौ आदमियों में
हातम समेत बैठा हुवा कुछ बातें कर रहा था इतने में ज़िकर कोहे निदा
का आ पड़ा उन लोगों से पूछा कि कोहे निदा कौन सा है उन्हों ने अर्ज़ की ख़ु
दावंद कोहे निदा वह है जिसके किलः कोह ऐक दीवार आस्मान से बातें क
र रही है और उसके ख़बरबखुर ऐक आवाज़ आती है यह इसी बात चीत में
ऐक आवाज़ उस पहाड़ की तरफ़ से आई कि या अली या अली उस मजलि
स में से ऐक जवान ख़ूब सूरत बेइख़्तियार दौड़ा लोगों ने उसके वारिसों से
आकर कहा कि फ़लाने शख़्स को कोहे निदा से तलब हुई है वह चला इ
स बात के सुनने ही वे सब दौड़े आये क्या देखते हैं कि तमाम मुंह उसका सु
र्ख़ हो रहा है लोग उसके गिर्द हैं वह बेइख़्तियार कोहे निदा की तरफ़ चला
जाता है यह हाल देखकर हातम भी हैरान होकर पूछने लगा कि ऐ यारो
इस जवान को बैठे बैठाये क्या हो गया कि दीवानों की मानिन्द दौड़ा जाता
है न कुछ कहता है न सुनता है लोगों ने कहा इसको कोहे निदा से आवाज़

आई है कि जल्दी आ हातम ने अपने जी में कहा कि बारे मालूम हुवा कि किसी ने बुलाया है
जो ऐसा यह उड़ा जाता है इस बात को सोचकर उसको पकड़ लिया और कहा कि ऐ भाई
यह मरव्वत से दूर है जो तू नहीं बताता बराये खुदा कहदे कि किसके बुलाये पर हमस
बों को छोड़े चला जाता है ग़रज़ हातम ने बहुतेरा सिरपटका पर उसने कुछ जबाब न दिया
और हाथ झटक कर भागा और पहाड़ के तले जा पहुंचा हातम भी उसके पीछे लपका चला
गया कि एकाएकी पहाड़ हातम के नज़रों से ग़ायब होगया उसने हरचंद नज़र गड़ा ग
ड़ा कर देखा सिवाय रंगीन पत्थरों के कुछ न सूझा तब बहुत हैरान हुवा निदान सब लोगों
के साथ होकर शहर में फिर आया हासिल यह है कि हरएक शख्स अपने अपने घर आ
या पर कोई उसके वास्ते न रोया बल्कि बहुत सा खाना खाटा [illegible] अपने
काम में मशग़ूल हुए हातम ने पूछा कि [illegible] तुममें से किसी को भी मालूम हुवा कि
उस पर क्या गुज़रा उन्होंने जवाब दिया कि तू भी तो मौजूद था जो तूने देखा सो हमने दे
खा हमसे क्या पूछता है यह सुनकर हातम चुप हो रहा और उस जवान के वास्ते रोने और अ
फ़सोस करने लगा उन्होंने कहा ऐ शख्स यह रसम हमारे मुल्क की नहीं है जो कोई किसी के
वास्ते रोवे या ग़म करे अगर तू इस शहर में दो चार रोज़ रहा चाहता है तो हमारी रसम पर रह
नहीं तो इस बस्ती से नीकाला जायगा हातम इस बात के सुनते ही आंसू पी गया पर दिल में उ
सका ग़म खाने लगा उन्होंने उसे फिर फ़िकरमंद देखकर कहा कि ऐ अज़ीज़ अब क्यों अंदे
शामंद है अहवाल कोहे निदा का यही है जो तूने देखा हातम बोला कि मैंने क्या खाक देखा
कुछ भी मालूम न हुवा इसी हैरत में हूं कि हुस्नबानू को जाकर क्या जवाब दूंगा ग़रज़ छ
महीने हातम वहीं रहा और इस अर्से में इसी तरह पंद्रह आदमी उस पहाड़ की तरफ़
गए और फिर न फिरे इत्तिफ़ाक़न एक शख्स हातम का मेंहमान था हातम से औ
र उससे बड़ी दोस्ती थी और मुहब्बत बहुत हो गई थी इसी सबब से वे दोनों रात दिन एक ही
जगह रहते थे और बहुत से लोग भी उनके हमसोहबत थे कि अचानक कोहे निदा
के किले के अंदर से आवाज़ आई या अखी या अखी इस बात के सुनते ही वह बेताब
उस पहाड़ की तरफ़ मुतवज्जह हुवा उसके घरवालों को खबर पहुंची हातम भी वहां बुलाया
गया सब आकर जमा हुए और उसे घेर लिया तब हातम अपने जी में कहने लगा कि
यह भी उन्हीं के तरह चला जायगा अफ़सोस है कि मुझको उससे मुहब्बत और उलफ़
त बहुत सी हो गई है अब यह भी जुदा होता है मैं इसको हरगिज़ न छोड़ूंगा इसका साथ
देना मुझको ज़रूर है जो होनी हो सो हो क्योंकि यहां के लोगों से मुफ़स्सल कोहे नि
दा का अहवाल मालूम न हुवा इस बात को ठहराकर कमर कसके बांधी और उ

उस्का हाथ पकड़कर पहाड़ की तरफ़ दौड़ा हरचंद कहता था कि भाई यह क्या अह
वालहै और तुझे कौन रिंचिहुए लिये जाताहै वह कुछ जवाब न देता था आखिर
झुंझलाकर बोला ऐ बेमरव्वत यह कैसी दोस्ती थी आख़िर हमतुम एक मुद्दत
तक खाने पीनेमें शरीक रहे अब एक बातसे भीगये ने तेरीज बान क्यों बंद होग
ई सच कह कि तुझे कौन घसीरताहै और तूं किधर जाताहै उसने कुछ ध्यान न
किया कि यह कौनहै और क्या कहताहै बल्कि हातम के हांथसे अपना हांथ छो
डानेलगा निदान यहांतक ज़ोर किया कि उसके हांथ छुटगये और हातम ज़
मीनपर गिरपड़ा तबवह कोहे निदा की तरफ़ रवाना हुवा हातमभी उठकर उ
स्के पीछे [illegible] दोनों आगे पीछे पहाड़ के नीचे जापहुंचे हातमने उ
छलकर उस्की कमर निहायत ज़ोरसे [illegible] हरचंद उस्ने चाहा कि उस्को जु
दाकरे लेकिन न कर सका आख़िर इसतरहसे वे दोनां [illegible] पड़ते पहाड़ के
ऊपर जापहुंचे ज्योंहीं नज़दीक क़िलेके गये एक खिड़की ए खुलगई यह दो
नों लिपटे लिपटाये उस्के अंदर चले गये लोगों की नज़रोंसे ग़ायब होगये लो
ग लाचार हातमका अफ़सोस करतेहुए शहरमें आये और हाकिमको ख़ब
र पहुंचाई कि वह मुसाफ़िर भी हातम के साथ उस पहाड़ पर चलागया इस बात
के सुन्तेही हाकिम गुस्सेहोकर कहने लगा कि ऐ नादानों आज तक कोई बेबु
लाये उस पहाड़पर नहीं गया तुमने उस्को क्यों छोड़ा और किस वास्ते जाने दिया
यह ख़ून उस ग़रीबका तुम्हारी गर्दन पर पड़ा उन्होंने अर्ज़ की ख़ुदावंद हम
ने तो उसे बहुतेरा समझाया कि तूं वहां मत जा उसने हरगिज़ हमारा कहना
न माना और कहा कि वह मेरा यारे जानीहै मैं उस्को हरगिज़ अकेला न छोडूंगा
बल्कि जो मुसीबत उसपर पड़ेगी मैं भी उसमें शरीक होऊंगा ग़रज़ यह बातें कर
के रईस और अहल शहर सबके सब हातमके लिये कुढ़ने लगे और बहांका अहवा
ल यह है कि जब वे दोनों उस खिड़की से आगे बढ़े तो एक मैदान कुशादा
में जापहुंचे वहां एक ऐसा सबज़ा नज़र पड़ा कि नज़र काम न करती थी गोया
फ़र्श ज़मुर्रद का चारों तरफ़ बीछाहै पर थोड़ीसी ज़मीन उसमें ख़ालीथी वह जवा
न उस पर पांव रखने लगा पांव रखतेही चित्त पटा [illegible] कर गिर पड़ा हातमने चा
हा कि उस्का हांथ पकड़कर उठावे इतने में मुंह उस्का ज़र्द होगया आखें पथ
रागईं हांथ पांव सख़्त होगये यह अहवाल उस्का देखकर हातम ने अपने
दिल में कहा कि यह मरगया आंखोंमें आंसू भर लाया बेइख़्तियार रोने ल

या फिर उसमें ज़मीन तड़क गई वह जवान उसमें समा गया वहीं वह जगह सबज़ होग
ई इस हकीकत को देखकर हातम ने सिजदे शुकर किया और कहा कि दुनिया
फ़ानी है सबको मरना है अबको है निदा की हकीकत मालूम हुई यहां से चला
चांही थे यह धुन बांधकर रवाना हुवा तमाम दिन फिरा पर उस खिड़की और कि
ले का कहीं खोज न मिला खुदा जाने खिड़की क्या हुई और किला किधर गया है
रान और सरगरदान बे आबोदाने सात दिन तक रहा गरज़ जीने से ना उमेद होके
र दिल में कहने लगा ऐ हातम तेरी मौत ही यहां लाई है जो तू बे बुलाये आया
क्यों कि न वह किला नज़र आता है न वह पहाड़ न शहर इतने में एक दर्या के क
नारे पर जा पहुंचा क्या देखता है कि वह बड़े ज़ोर और शोर से बह रहा है और
उसका ओर छोर भी नहीं मिलता यह निहायत फिकर में हुवा और कहने लगा
या इलाही अब क्योंकर पार उतरूं सिवाय तेरे कौन है जो बेड़ा पार करेगा इत
ने में एक नाव नज़र पड़ी कि उधर से चली आती है जाना उसने कि कोई म
ल्लाह लिये आता है जब कनारे आ लगी तो उस पर किसी को न देखा हैरान
हुवा फिर शुकर खुदा का बजा लाकर सवार हो लिया क्या देखता है कि एक द
स्तरख़ान में कुछ लपेटा धरा है भूखा तो था ही हाथ बढ़ाकर उठा लिया और
खोला तो दो रोटियां और हलवा गर्मा गर्म पाया चाहता था कि खाय पर यह
ध्यान आया कि शायद मल्लाह ने अपने वास्ते रक्खा हो बिराना हक़ खाना
खूब नहीं इतने में एक मछली ने दर्या से सिर निकालकर कहा कि ऐ हातम य
ह रोटियां तेरा रिज़क है शौक से खा कुछ अंदेशा जी में मत ला यह कहकर गो
ता मार गई हातम ने उसी वक़्त उनको खाया पानी पीया और सिजदा शुकर ब
जा लाया वहीं एक आंधी ऐसी आई कि तीन दिन में किश्ती कनारे पर लग गई
हातम खुदा का शुकर करता हुवा उस पर से उतरा और दिल में कहने लगा कि
यह शहर की कहां है जो वहां जाकर हकीकत उस जवान की लोगों से बयान
करूं गरज़ सात रात दिन चलते चलते गुज़र गये पर उसने कहीं सुराग शहर का
और आबो दाने का नाम व निशान न पाया बल्कि एक दरख़्त भी न देखा कि जि
सके बर्ग ही चबाता हैरान परेशान चला जाता था कि एक पहाड़ बलंद नज़र आया
उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुवा तीन दिन के बाद उसके नीचे जा पहुंचा और जिस प
त्थर को उठाकर देखा उसके तले लहू ही बहता पाया फ़िकर करने लगा कि कोई य
हां नहीं है कि जिससे इसका अहवाल पूछूं आख़िर लाचार होकर पहाड़ पर चढ़

ने लगा बारह दिन के बाद उसके ऊपर जा पहुंचा तो एक मैदान देखाई दिया।
कि वहां का खाक और जानवर चरिन्दे परिन्दे बीरबहुट्टी से लाल हो रहे हैं।
हातम भूखा प्यासा क़दम बढ़ाये छः कोस तक चला ही गया क्या देखता है
कि एक दरिया लहू का लहरें ले रहा है और उसमें जितने जानवर हैं ऐसे सुर्ख
हो रहे हैं गोया लहू से बने हैं घबराया कि इस दर्या से क्योंकर पार होंगा लाचार
कनारे कनारे चला एक महीना इसी तरह से गुज़र गया निदान ऐसी जगह पहुं
चा कि जहां सिवाय दर्याए खून के न ज़मीन थी न दरख़्त न जानवर चरिन्दे थे न
परिन्दे जिसमें कहने लगा ऐ हातम एक महीने तक तो यह कुछ रंज उठाके पांव
चलने से रहे पर धार नज़र न आया अगर इस बरस तक योंही फिरेगा सिवाय
दर्याए लहू के कुछ न देखेगा खुदा के कारखाने में दम मारना आसान नहीं और
जिन चिज़ों को उन्होंने छिपाया है उनका खोजना मुश्किल है अगर वहीं मे
हरबानी करें तो यहां से सलामत मंज़िले मक़सूद पर पहुंचे और नहीं तो तुझसे
तदबीर कुछ न होसकेगी अफ़सोस है कि वहां बिचारा मुनीर शामी तेरी राह तक र
हा है और तू यहां इस मुसीबत में पड़ा सिसक रहा है लेकिन इससे सख़्त हैरा
नी है कि कोह निदा की खबर हुस्नबानू बर्ज़ख सौदागर के बेटी को क्योंकर मि
ली जो वह उसकी खबर लाने को लिये लोगों को भेजती है और इस बियाबान में
हलाकत में डालती है यक़ीन है कि अकसर लोग उसकी खबर लेने को आए होंगे
पर लाचार नाउमेद ही फिर फिर गये होंगे इतने में यह सोचकर कहने लगा कि
तूने कुछ अपने वास्ते यह काम नहीं किया बल्कि एक बंदए खुदा के लिये यहां
तक तू आया है उसके करम से उम्मेदवार हूं वह तुझको इस बला से निजा
त देगा और अलबत्ता मुराद को पहुंचावेगा इस ख्याल में था कि कुछ चीज़
दर्या में देखलाई दी हातम उसकी तरफ़ गौर करके देखने लगा कि शायद यह
कोई जानवर है या लकड़ा बहा चला आता है जब नज़दीक आई तो
किश्ती ही थी खुदा का शुकर किया और चढ़ बैठा फिर वैसही रोटियां और ह
लवा धरा पाया बेतअम्मुल उन्होंने खाया जब किश्ती नज़दीक मांझधा
के पहुंची हवा ज़ोर से चलने लगी और लहरें बड़ी बड़ी उठने। हातम डरा औ
खुदा को याद करने लगा आख़िर आंखें बंद करके नाव में लिपट गया इतने
में वह किश्ती धार पर आगई तब तो लहरें उसकी ऐसी बुलंद हुई कि आस
मान तक जाने लगीं यह और भी बेहवास होगया नज़दीक था कि मारे खौफ़

के डूब जावे बल्कि नौबत जान की आवे ग़रज़ सात दिन उसी लहरों में गुज़र गया आठ
वें रोज़ किश्ती किनारे पर आ लगी हातम उतरा और कनारे पर चला नाव उलटी फिर गई
फिर यह कनारे कनारे चलने लगा और दिल में यह कहता था कि यह भेद कुछ न खुला कि नाव
को न लाया और रोटियां हलुवा को न रख गया सात रोज़ तक उठते बैठते इन्हीं सोचों में च
ला गया कि दूर से एक चीज़ सफ़ेद मानिन्द लहर दरया के नमूदार हुई हातम भैचक रह
गया आगे बढ़ कर क्या देखता है कि एक दरया निहायत साफ़ लहरें मार रहा है और ऐसा
चमकता है कि गोया किसी ने चांदी घोर कर बहा दी है हातम प्यासा बहुत हो रहा था कना
रे पर आ बैठा और बायां हांथ उसमें डाला जो निकालता है पानी तो न पाया पर हांथ
चांदी का हो गया हर चन्द उसको दाहने हाथ से साफ़ किया लेकिन वह ज्यों का त्यों
ही रह गया बल्कि बोझ हो गया हातम ने कहा कि यह अजब दरया है अगर गोता
मारूं तो तमाम रूपे का हो जाऊं लेकिन मारे बोझ के चलना फिरना निहायत मुश्कि
ल होगा आख़िर फिर भी चाकर के बैठ गया मारे बेक़रारी के कभी दाहनी तरफ़ देख
ता था कभी बाईं तरफ़ कभी गिरेबान में मुंह डाल देता था इतने में एक किश्ती उसी त
रफ़ से कनारे पर आन पहुंची यह होश करके चढ़ बैठा एक ख़्वान हलुवे का गोशे
में नज़र पड़ा उसने अपनी तरफ़ खैंच लिया और खूब सा खाया फिर पांव फैला
कर आराम से सो रहा बाद कितने दिन के किश्ती कनारे पर जा पहुंची उतर कर आ
गे बढ़ा पर हर वक़्त अपना हांथ देखा करता था चार दिन के बाद एक पहाड़ दिखाई
दिया जाना उसने कि यह नज़दीक है लेकिन वह एक महीने की राह पर था ग़रज़
वह चला जाता था जब दो तीन दिन की राह पर रह गया पत्थर के टुकड़े सुफ़ैद औ
र ज़र्द सुर्ख़ औ सब्ज़ निहायत ख़ुशरंग नज़र आने लगे उससे जो आगे बढ़ा तो ही
रे और ज़मुर्रद औ लाल जगह बजगह पड़े थे उस वक़्त लालच ने घेरा तो कितना ज
वाहर किस्म अव्वल से उठा कर जेब में डाल दिया और आगे चला थोड़ी दूर चल कर
क्या देखता है उस जवाहर से भी बेशक़ीमत बहुत सा पड़ा है उसको फेंक दिया औ
र इसको जेब में भर लिया और दिल में कहा कि अगर यह जवाहिर शहरों में पहुं
चे तो इसकी क़ीमत कोई न दे सके इसी ख़्यालस में चला गया आख़िर उसके बोझ से
थक कर किसी जगह बैठ गया और कई लाल हीरे पन्ने जो सबसे बेशक़ीमत
और बड़ी थे चुन लिये बाक़ी वहीं फेंक दिये फिर राही हुवा एक तालाब ख़ुशकि
ता पर जा पहुंचा उसके कनारे बैठ गया अपने हांथ पांव धोये इतने में बाएं हांथ पर
जो नज़र पड़ी तो उसको जैसा था वैसा ही पाया मगर नाख़ून रूपे के रहे शुकर
ख़ुदा का किया और कहने लगा कि या इलाही उस दरया में तो हांथ चांदी का हो

गया था इस तालाब के बीच हालत असलीपर आ रहा इसमें क्या भेद है इतने
में हान होगई उसी जगह पड़ रहा एक आयकी दो शख्स उस तालाब से निकले
कि सिर उनके मानिन्द आदमी के थे और पांव मिसल हाथी के नाखून शेर के
से रंग निहायत काला हातम डर कर उठ खड़ा हुवा कि यह क्या बला है अगर
भागूं तो शरम दामनगीर होती है अगर ठहरूं तो ठहर नहीं सक्ता दोखिये तरक
शमें क्या है निदान तीर औ कमान उठाकर चाहता था कि मारे औन्होंने पु
कार की कि ऐ हातम तू अपने जान के डर से हमें मारता है हम भी खुदा के बं
दे हैं कुछ तुझे दुख देने नहीं आये उसने तीर और कमान हाथ से डाल दिया
और सिर झुका कर बैठ गया फिर दिल में अंदेशा किया कि इनको मुझ से क्या काम
है जो इधर आते हैं इतने में वे नज़दीक आकर कहने लगे कि ऐ हातम तुझ को श
रम नहीं आई जो जवाहर की लालच की वह बोला मैंने किस्का जवाहर लिया
क्या लालच की ई औन्होंने कहा कि फलाने जगह से तू जवाहिर लाया है अब
तक तेरे पास मौजूद है यह बात सुन कर हातम ने जवाब दिया कि ऐ यारो मुल्क
खुदा का है अगर मैंने वहां से उठा लिया तो किसी को क्या कुछ तुम्हारा तो नहीं
था वह बोले कि यह एक और खिलकत के वास्ते खुदा ने रक्खा है हातम ने क
हा वह खिलकत कौनसी है जो आदमी से बड़ी ज़्यादा होगी बल्कि आदमी हीं सब
से बेहतर है औन्होंने कहा यह सच है मगर यह जवाहिर खुदा ने परियों के वा
स्ते रक्खा है कि वे अपने काम में लावें उसने कहा मगर आदमी इस जवाहर के
लायक़ नहीं जो इसे पहने या खर्च में लावें और मैंने तो लोगों के दिखाने के वा
स्ते उठा लिया है कि खुदा ने जंगलों में क्या क्या चीज़ें पैदा की हैं देखो और उस्के
कारीगरी का किसी तरह इनकार न करो इस बात को सुनकर औन्होंने कहा स
च कहता है तुझको लालच नहीं पर सलामत अपने शहर को जाया चाहता है तो
इस जवाहर से हाथ उठा यह सुनते ही हातम ने सब का सब फेंक दिया और कहा
तुम्हीं ले जाओ लेकिन अफ़सोस है कि मैं इस्को बहुत दूर से उठा लाया था
और बड़ी मेहनत औ मशक्कत इस्के लिये खींची थी तुमने बड़ा ज़ुल्म किया यह
क्या चलन है किसी की मेहनत बरबाद हो मैं कुछ चुरा कर । नहीं लाया था
औन्होंने कहा कि अगर तू इस्के उठाने की मज़ूरी चाहता है तो यह भी नहीं
पहुंचती क्योंकि बिना कहे किसी का इतना माल उठाना और अपने पास र
खना यह कब रवा है बल्कि ऐसी मेहनत की गुनहगारी देनी पड़ती है हातम
ये बातें सुनकर चुपका रह गया सिर निचा कर लिया औन्होंने एक लाल ए

कहीरा एक ज़मुर्रद जो सबसे बेश कीमती अपने आपने किसम में था उसको
दिया कि इतना ही तुझको बहुत है ले उसने ले लिया और कहा ऐ खुदा के बं
दो मुझको राह बतलादो जो मैं किसी तरह से अपने मुल्क को पहुंचूं वे बोले
ऐ जवान ग़नीमत जान जो तू सही औ सलामत आया और जीता जागता
चला क्योंकि इस हद से कोई आज तक जान सलामत लेकर नहीं गया अब
इतना अंदेशा मत कर कि तेरी उमर बड़ी है इस में आगे एक जवाहर का दर्या मिलेगा
बाद उसके दर्या आग का अगर उसमें सही औ सलामत उतर गया तो मुक़र्रर अ
पने मुल्क में पहुंचेगा पर किसी चीज़ की लालच न करना इसी में तेरी सलामती
है अगर किसी चीज़ पर दिल दौड़ावेगा तो अपने किये की सज़ा पावेगा यह
कहकर वे पानी में उतर पड़े। उसकी नज़र से छिप गये हातम तमाम रात उसी
मकान पर बैठा रहा सुबह को उस जगह से उठकर आगे बढ़ा बाद थोड़े दिन
के एक दर्या नज़र पड़ा यह उसको देख निहायत खुश हुवा इस वास्ते कि बहुत सा
प्यासा था जब उसके नज़दीक पहुंचा देखा तो कनारे पर उसके हज़ारों मोती पत्थ
रों के टुकड़ों की तरह पड़े थे लेकिन हर एक अंडे के बराबर था कि उनकी चमक
से आंखें झपकी जाती थीं औ क़ीमत का तो ठिकाना न था हातम लालच में आ
कर चाहता था कि दस बीस उठा ले इतने में उन दोनों की नसीहत याद आई डर
कर उस हरकत से बाज़ रहा और उसके कनारे पर बैठ गया क्या देखता है कि पानी
उसका दूध औ शहद के मानिन्द है प्यासा तो था ही खूब सा पेट भर पिया गरज़
उससे भी अच्छी तरह से गुज़र गया और आगे बढ़ा कि एक रोशनी दूर से नज़
र आई जैसे कि ऐक तख्ता सोने का हवा में चमक रहा है उसकी तरफ़ चला
बाद ऐक महीने के उसके नज़दीक जा पहुंचा क्या देखता है कि एक पहाड़ सोने
का आस्मान से लगा झमझमा रहा है यह उस पर चढ़ गया वहां हर ऐक दरख़्त
सोने के फूल फल देखे हैरान हुवा तीन रोज़ तक उस पर चला गया निदान ऐ
क मैदान बड़ा नज़र पड़ा कि तमाम ज़मीन उसकी सोने की रंगत थी फिर उससे
आगे बढ़ा तो एक महल सोने का बहुत अच्छा देखा जब नज़दीक पहुंचा द
रवाज़ा खुला पाया अंदर चला गया वहां ऐक बाग़ निहायत खूबसूरत गु
ल और फूलों से भरा नज़र आया हज़ारों दरख़्त सोने के भी उसमें चमक र
हे थे और जड़ाऊ पत्ते फूलों समेत उसके दमक रहे थे हातम देख हैरान हुवा
और खुदा के कुदरत का तमाशा देखकर शुक्र करने लगा फिर थोड़ा सा
मेवा तोड़कर खाया और आगे बढ़ा तो एक हौज़ नज़र पड़ा कि पानी उसका

१८० साफ़ मानिन्द बिल्लौर के था कनारे पर उस्के जा बैठा और दिल में फ़िकिर क
रने लगा कि यह बाग़ किस का है और मालिक इस्का कौन है किस्से पूछि
ये इतने में कई परियां सम समाती पोशाकें ओ जड़ाऊ गहने से आरास्ता वहां
आईं और हातम के देखते ही मुसकराकर भैचकसी रह गईं कि यह मकान क
हां और आदमज़ाद कहां हातम भी उन को देखकर बड़ी हैरत में आया कि या
इलाही यह क्या हुस्न है जो तूने इनको बख़्शा वहीं मल्क: ज़रीं पोश याद आ
ई कि वह भी ऐसई हुस्न रखती है खुदा उस्से जल्द मिलावे और हुस्न उस्का ज
ल्द दिखलावे अल किस्सा उनसे कहने लगा कि ऐ खुदा के बन्दो तुम कौन हो
सच्च कहो और इस जगह का बादशाह कौन है बतलाओ ओन्होंने कहा कि य
ह महल परी नोशलब का है इतने में वह आही पहुंची हातम उस्को देखते ही बेहोश
होकर गिर पड़ा वह उस्के सिरहाने आ खड़ी हुई और कहने लगी अरे कोई है ज
ल्द आकर इस्के मुंह पर गुलाब छिड़के परियां दौड़ी और गुलाब छिड़कने लगीं
हातम होश में आया फिर परी नौशलब एक तख़्ते मुरस्सः पर जा बैठी और उस्को
एक जवाहिर के कुर्सी पर बैठलाकर कहने लगी कि ऐ जवान सच्च कह कहां से
आया है और किस काम का इरादा करके यहांतक पहुंचा है और अब किधर
को जायगा हातम ने तमाम अहवाल अपना अव्वल से आख़िर तक उस्के
सामने बयान किया औ पूछा कि इस मकान का मालिक कौन है परी नोशलब ने
कहा कि इस पहाड़ को कोहे ज़रीं कहते हैं यह मकान शाहबाल बादशाह का है
और उस्की एक आस्मा नाम बेटी है मैं भी उस लड़की की एक ख़वास हूं चुनान्चि
सातवां रोज़ मेरी बारी का है उस रोज़ मैं उस्की ख़िदमत में जाकर हाज़िर होती हूं
और यह मकान कोहे क़ाफ़ से इलाक़ा रखता है अगरचे दुनियां की हद्द में है
और दूर से जो यह दिखलाई देता है उसी का किला है ग़रज़ चार दिन तक हातम को
मेहमान रक्खा तरह बतरह के खाने और मेवे खिलाये बहुत सी ख़ातिर की पां
चवें रोज़ कहा यह जगह तुम्हारे रहने काबिल नहीं बेहतर यही है कि यहां से
तशरीफ़ ले जा औ हातम उस परी से रुख़सत हो पहाड़ की पहाड़ चला दो सदिन
के बाद पहाड़ से उतर किसी जंगल में जा पहुंचा वहां एक सोने का दर्या दिख
लाई दिया पानी गले हुए सोने की मानिन्द लहरें ले रहा है और लहरें उस्की आ
स्मान से टक्करें ले रही है यह ख़्याल फ़िकर में ग़र्क़ हो कर उस्के कनारे बैठ गया
कि इस्से क्योंकर पार हूजीये इतने में एक सोने की नाव दूर से नज़र आई और
तट से कनारे पर आ पहुंची हातम उस पर चढ़ बैठा वहीं एक ख्वान हलुवे का न

ज़र पड़ा भूखा तो था ही निहायत ख़्वाहिश से खाया चाहता था कि दर्या में हाथ डालकर पानी पाये डरा कि ऐसा न हो कि यहां हाथ सोने का हो जाय खैंच लिया फिर एक कटोरा बग़ल से निकालकर भरा अज़बस कि प्यासा तो था ही थोड़ा सा पानी हलक़ में टपका या इतने में क्या देखता है कि कटोरा और चार दांत सोने के होगये ग़रज़ चालीसवें दिन किश्ती कनारे पर पहुंची हातम उसपर से उतर पड़ा और आगे चला सात रोज़ तक चला गया और ऐसे ऐसे तमाशे देखे कि रतनी मुद्दत में न देखे थे न कभीं सुने थे आठवें दिन पत्थरों के मैदान में जा पहुंचा वहां का हर एक कंकर पत्थर ऐसा गर्म था गोया आग से अभीं निकला है यह ज्यों त्यों थोड़ी दूर चला आख़िर ताक़त नहीं लाचार होकर बैठ गया होंट मारे गरमी के सूख गये बल्कि तमाम बदन जल उठा न बनी निहायत बेक़रार होकर मुहरा मुंह में रख लिया पर कुछ फ़ायदा न देखा आख़िर उसको मुंह से निकाल कर फेंक दिया और आप ज़मीन पर मछली बे आब की तरह तड़पने लगा यहां तक कि बेहोश होगया बल्कि क़रीब मरने के पहुंचा मुंह खुल गया ज़ुबान बाहिर निकल पड़ी इतने में वे दोनो शख़्स जो जंगल बाहर ले गये थे पैदा हुए और उसको उठाकर ठंढा पानी पिलाया हातम होश में आया आखें खोल के देखा तो वहीं वे दोनो शख़्स नज़र पड़े बोला कि शाबाश है यारो बर वक़्त पहुंचे और ख़ब ऊमदा की अब कहो किस तरफ़ जाऊं और यह गर्मी किस सबब से है ओन्हो ने कहा रस्से आगे दर्याय आतश है यह गर्मी भी उसी के सबब से है और रस्ता भी यही है चला जा ख़ुदा की क़ुदरत से अपने मुल्क में पहुंच रहेगा और एक मुहरा निकालकर दिया और कहा कि आगे दर्याय आतश है जो इसको अपने मुंह में रख लेगा तो आग तुझपर कारगर न होगी ठंढे ठंढे चला जायगा पर यह याद रह कि दर्या के पार होते ही यह मुहरा फेंक दिजियो यह कहकर हातम के नज़रों से ग़ायब होगये वह रात भर वहीं रहा सुबह होते ही मुहरा अपने मुंह में रखकर चला बाद तीन रोज़ के सामने से आग के अंचले मालूम होने लगे जब उस दर्या के कनारे पर पहुंचा तो क्या देखता है कि आलें की लहरें आसमान तक जाती हैं हातम मारे डर के घबराकर कभीं आस्मान को देखता था कभीं ज़मीन को इतने में एक नाव भी कनारे आ लगी यह अपने दिल में कहने लगा कि जान बूझकर अपने तईं आग में डालना है पर क्या करूं राह भी येही है ख़ुदा आसान करेगा जो उसकी रज़ा यही है तो राज़ी रहा चाहिये लाचार किश्ती पर चढ़ बैठा तो देखता क्या है कि एक ख़्वान हलवे का भरा हुवा धरा है वे इख़्तियार खी चलिया और पेट भर कर खाया ग़रज़ किश्ती चली जाती थी यह मा

रे खौफ़ के आँखें न खोलता था जो कभी खुल जाती थीं तो जान निकलने लग
ती थी फिर वहीं बंद कर लेता था जब नाव दर्या के मझधार आपहुंची चक्की की
तरह फिरने लगी हातम को यक़ीन हुवा कि अब डूबती है आंखों में पट्टी बांधकर
सिर नीचा कर लिया और जी में ख़याल किया कि अब जीता नहीं बचता बारे खु
दा के फ़ज़ल से तीन दिन के बाद किश्ती किनारे पर जा लगी हातम उतर पड़ा
ज्यों आंखें खोलकर देखता है न वह दर्याय आतश है और न वह किश्ती है ए
क सोहाना सा जंगल नज़र आता है मोहरे को मुंह से निकालकर फेंक दिया और
आगे चला थोड़ी सी राह तै की थी देखता क्या है कि सिमाना अमन का नज़र आ
ता है निहायत खुश होकर शुकर किया और किसी गांव के तरफ़ चला थोड़ी सी
दूर गया था कि एक खेत पर किसी किसान को देखकर कहने लगा कि यह सिमा
ना किस शहर की है उसने कुछ जवाब न दिया और टकटकी बांधकर मुंह देखने ल
गा हातम बोला कि ऐ अज़ीज़ तू बहरा है जो नहीं सुनता उसने अर्ज़ की कि तेरी सू
रत में अपने बादशाहज़ादे हातम की सी देखता हूं हातम ने यह सुनकर कहा कि
तू कौन है और क्या जानता है वह बोला ऐ जवान यह मुल्क यमन है और हातम ह
मारा शाहज़ादा है बाप उसका तै नाम यहां का बादशाह है लेकिन शाहज़ादे को सा
त बरस हुए कि इस मुल्क से निकल गया है एक मर्तबः ख़बर उसकी मल्कः ज़रीं पो
श से पहुंची थी उससे थोड़ी तसल्ली हर एक को हुई थी अब तो उसके मा बाप अप
नों का निहायत बुरा हाल है कि हर एक पर अपनी ज़िंदगी मुश्किल हो गई है औ
मल्कः ज़रीं पोश की तो जान ही पर आ बनी है देखिये उसकी मुलाक़ात तक जी
ती रहती है कि नहीं हातम ने कहा कि मैं तुम्हारे शाहज़ादे से थोड़े रोज़ हुए हैं
कि राह में मिला था ख़ैर आफ़ियत से है तू यमन में जाकर उसकी तरफ़ से छोटे बड़ों
की ख़िदमत में दुआ और सलाम कहकर यह कहियो कि हातम शाहाबाद की तर
फ़ गया फिर कहा ऐ किसान मैं बहुत सा प्यासा हूं थोड़ा सा पानी पिला वह जल्दी
से ऐक प्याला दूध का और एक छाछ का ले आया हातम ने निहायत मज़े से
पिया और कहा हज़ार शुकर है एक मुद्दत के बाद मैंने अपने मुल्क को देखा और
यह नियामत खाई फिर उठ खड़ा हुवा और शाहाबाद का रास्ता लिया थोड़े दि
नों में वहां जा पहुंचा लोग दौड़े और हुस्न बानू को उसके आने की ख़बर दी उसने
परदा करके अंदर बुलाया और एक सोने की जड़ाऊ कुर्सी पर बिठला कर कहा शा
बाश है ऐ जवान ख़ुद हुवा जो तू आया बारे कोह निदा की ख़बर कह और वहां के
भेद से मुझे ख़बर दार कर हातम ने नये सिर से क़िस्सा शुरू किया और आख़िर तक

कह सुनाया हुस्नबानू ने कहा सच कहता है लेकिन कुछ निशान भी दिखला कि
यक़ीन आजाय हातम ने बायां हाथ दिखला दिया कि वह सब रूपे का होगया था
पर मैं एक दिन किसी तालाब पर जो पहुंचा उसको धोया यह अपनी असली सूर
त पर आगया लेकिन नाख़ून अब तक भी रूपे ही के हैं दूसरा नीशान यह है कि द
र्या ये ज़र्री के पानी से चार दांत सोने के होगये हैं और वह तीनों रकम जवाहर
भी दिखला दी तब हुस्नबानू ने बहुत सी आवभगत की और खाना बहुत अ
च्छा मंगवा कर रूबरू रक्खा हातम ने कहा बेहतर यह है कि इसको मेरे साथ क
र दो मैं कारवानेसरा में जाकर मुनीरशामी के साथ खाऊंगा फिर वहां से उठकर
कारवानेसरा में आया और मुनीरशामी से मिलकर खाना मज़े से खाया और
अपनी सरगुज़श्त मुफ़स्सल बयान की उसने उसकी हिम्मत और जमामर्दी की
निहायत तारीफ़ करके बहुत सी विनती की हातम ने दो तीन दिन आराम करके ह
म्माम किया और नये कपड़े पहन कर हुस्नबानू के यहां गया दर्बानों ने ख़बर की
उसने उसी तौर से परदा करके अंदर बुला लिया हातम ने कहा साहेब अब छट्ठा
सवाल क्या है उसको भी कहो क्योंकि मैं उसको भी पूरा करूं यह बात सुनकर हुस्न
बानू ने कहा कि एक मोती मेरे पास है उसके बराबर का दूसरा तलाश करके ला दे
हातम बोला मैं उसे टुक देख लूं उसने मंगवा कर दिखला दिया सच कि वह मुर्गा
बी के अंडे बराबर था हातम ने कहा मैं यह जानता हूं कि मुझको तू ऐसे न देगी लेकि
न नमूना हवाले कर जो उसके बराबर ढूंढ लाऊं हुस्नबानू ने एक मोती रूपे का उ
तना ही बड़ा बनवा कर हातम को दिया वह उसको लेकर सराय में आया और मु
नीरशामी को दिखला कर कहने लगा कि हुस्नबानू इतना बड़ा मोती अब मांग
ती है मैंने तो ऐसा वज़नी मोती अपनी उमर न देखा है न सुना ख़ुदा जाने किस
दर्या में और किस जगह पैदा होता है मुनीरशामी ने कहा कि भाई जिस जग
ह ऐसा मोती पैदा होता है उस मकान को पहले तहक़ीक़ कर लो तब जाओ
हातम ने कहा पूछना कुछ ज़रूर नहीं मुझको मेरा ख़ुदा वहां पहुंचावेगा जि
सने इतनी मुश्किलें आसान की हैं वह इससे भी आसान करेगा यक़ीन है कि मैं
उस दर्या पर पहुंचूंगा और ऐसा मोती ले आऊंगा सेवाय उसके किसी से उम्मेद
नहीं रखता मुनीरशामी ने इस बात पर बहुत सी तारीफ़ की और कहा थोड़े रोज़
अभी आराम करो लाचार हो हातम ने कहा भाई आख़िर यह काम हमीं को
करना है फ़िर देर लगानी क्या ज़रूर आख़िर हातम मुनीरशामी से रुख़सत हो
कर वैसे मोती की तलाश में रवाना हुवा ॥ ०॥ ❋ ———— ❋

छठवां सवाल हातम के जाने का और मुर्ग़ाबी के अंडे बराबर मोतीके लाने का *

जब हातम शाहाबाद से निकला पांच छः कोस पर जाके एक पत्थर के सिल पर बैठकर
फ़िकर में हुवा और दिल में कहने लगा कि इलाही ऐसा मोती किस दर्या में से हाथ ल
गेगा मगर कुछ तूं ही अपनी मदद करे तो ऐसा मोती मिले इतने में शाम होगई एक
जोड़ा मुर्ग़ाबी का हफ़्तरंगी कि जिस्का बासा दर्याये कहरमान के कनारे था ख़ु
दाकी क़ुदरत से वहां एक दरख़्त पर आबैठा मादः बोली कि हम को आब हवा य
हां की ख़ुश नहीं आती अगरचे इस जगह हमारे खाने पीने की चीज़ें तरह ब तरह
की हैं बेहतर है कि यहां से उड़ चलें नर ने कहा मेरा इरादा तो यह था कि थोड़े दिन इस
जगह में रहूं पर तेरे कहने से अब भोर को अपने वतन को चलूंगा ख़ातिर जमा र
ख इस वक़्त चुपकी रह मादः ने फिर कहा यह शख़्स कौन है जो इस जंगल में सिर
झुकाये ग़म और फ़िकर में बैठा है नर बोला यह हातम यमन का शाहज़ादा है ॥
क्या करे इस्को मुर्ग़ाबी के अंडे बराबर एक मोती की तलाश है ख़ुदा की राह में ग़ैर
के वास्ते इस ने अपनी कमर बांधी है चुनांचि मुनीर शामी शाहज़ादः हुस्नबानू पर
आशिक़ हुवा है वह सात सवाल रखती है शाहज़ादे ने सवालों के पूरे करने की
ताक़त न रखता है न उस्के छोड़ने की क़ुदरत इस सबब से दिवानों के मानिन्द फिर
ता फिरता यमन के तलहटी में जा निकला और यह भी शिकार खेलता हुवा उसी
जगह आपहुंचा आपस में मुलाक़ात होगई मुनीर शामी ने अपना अहवाल उसे
कहा उसने तरस खाकर उसी के वास्ते मुसाफ़िरत इख़्तियार की और यह मुसि
बत अपने ऊपर ली चुनांचि पांच सवाल उस्के पूरे कर चुका है अब छट्टे सवाल
की बारी है और वह लाना ऐसे मोती का है जो मुर्ग़ाबी के अंडे के बराबर हो इस
लिये यह बिचारा इस दरख़्त के तले हैरान बैठा हुवा इसी सोच में है कि कहां जाऊं
और ऐसा मोती किधर से लाऊं सच है कि अनदेखी राह क्योंकर चले और ऐसा
मोती किस तरह से पैदा करे लेकिन तू कहे तो मैं इस्को राह बताऊं वह बोली इस्से
क्या बेहतर कि हैवान का इहसान इन्सान पर हो जब उस्की मर्ज़ी पाई तो नर कह
ने लगा कि ऐसे मोती की पैदाइश यों है कि अगले ज़माने में कितने परिंदे बार तीस
बरस के दर्याये कहरमान के कनारे अंडे देते थे अब एक मुद्दत से वे जानवर जा
ते रहे और अगले अंडे उसी दर्या में डूब गये मगर उन अंडों में से दो अंडे बादशा
ह जमजाह कहरमानी के हाथ लगे थे चुनांचि उन्हीं में से एक बादशाह शाम
स शाह के हाथ चढ़ गया था हरचंद कि वह आगे से माल औ असबाब औ ज

वाहरात बहुत सार रखताथा बल्कि एक शहर भी उसे बड़ा साबसायाथा अब वह वीरा
न पड़ा है इत्तिफ़ाक़न उसी का ख़ज़ाना हुनवान् के हाथ लगाहै वह अंडा भी उसी में था
जो उसने पाया अल् क़िस्सः जमजाह क़हरमानी मरगया और मुल्क उस्का किसी और
ने लेलिया बेगम उस्की हमल से थी वह मोती ले कर भागी और एक जंगल में आ पड़ी
फिर एक दिन था कि दर्याये क़हरमान के किनारे जा निकली क़ज़ाकार उसवक़्त मस
ऊद सौदागर भी किश्ती पर बैठा हुवा वहां आ निकला उस औरत ने किश्ती को देखक
र गुल मचाया कि ख़ुदाके वास्ते मुझ बेकस को भी इस नाव पर चढा लो सौदागर ने
रहम खाकर किनारे पर नाव भिड़ा दी और उस्को बेड़ाकर हक़ीक़त पूछी उसने त
माम अहवाल अपना कहदिया मसऊद सौदागर ने उस्को अपनी बेटी किया और
शहर में ले आया बाद थोड़े दिन के वह औरत लड़का जनी नाम उस्का बज़ेख रक्खा
जब वह लड़का होशयार हुवा मसऊद सौदागर मरगया सर्दारी उस्की उस लड़के
को मिली वह एक मुद्दत तक उस्के माल और दौलत से लश्करों सिपाही नोकर रक्खा
किया कई हज़ार गांव अपने क़ब्ज़े में लाया निदान वहां का बादशाह हुवा जब
वह मरगया हज़रत सुलेमान बादशाह हुए तब उन्हों ने तमाम गिर्द नवाह कोह
क़ाफ़ की और दर्याये क़ुलज़ुम औ क़हरमान औ जर्री औ आतशीं बल्कि जो जो
कोह क़ाफ़ से इलाक़ा रखते थे सो सब के सब देवों परियों जादूगरों के रहने को दिये
औ कहा कि तुम इन सब को आबाद करो आदमियों के शहरों की तरफ़ मत जा
औ चुनांचे वे टापू औ शहर उन्हीं के क़दमों से आबाद हैं आदमी को उन शहरों
से कुछ इलाक़ा नहीं ग़रज़ रफ़्तः रफ़्ता वह मोती होशाम परी के हाथ लगाथा अ
ब माहेयार सुलेमानी जो आदमी और परी से पैदा हुवाहै उसने ले लियाहै बिल
फ़ेल मुक़ाम उस्का बज़ेख के टापू में है वह एक लड़की निहायत ख़ूबसूरत रखताहै
लेकिन ब्याह उस्का इस शर्त पर ठहराहै कि जो कोई इस मोती के पैदाइश का अह
वाल ज़ाहिर करेगा मैं इस लड़की को उसी के साथ ब्याह दूंगा यह सुनकर अक्स
र परिज़ाद उस्के पास आये पर कोई उस मोती की पैदायश से ख़बरदार न था जो क
हता आख़िर नाउम्मेद हो होकर फिर गये और माहेयार सुलेमानी बड़ा अक़्ल
मंद और फ़ाज़िल है सिवाय उस्के उस वक़्त की किताबें भी उस्के हाथ लगी हैं उस
ने उनको पढकर अहवाल उस मोती के पैदा होने का दर्याफ़्त कर लियाहै और उन
जानवरों को हज़रत सुलैमान के वक़्त से हुक्म नहीं जो कहीं अंडे दें इस वास्ते पैदा हो
ना ऐसे मोती का मौक़ूफ़ है बल्कि इस बात के कहने की भी मनाही है पर मैंने जो

इस जवानको साहेब हिम्मत औ साहेब हिम्मत औ खुदातर्स देखा इस लिये अह

अहवाल ज़ाहिर किया यह दिलसे नेकनामों कामों में कमर बांधे पड़ा फिरता है
यकीन है कि अपनी मुरादको पहुंचे मादः ने कहा कि इस अज़ीज़ ग़रीब को
पहुंचना दर्याये कहरमान तक किसतरह होगा क्यौं कि वह सर्हद देवोंको मुल्क
की है सिवाय उस्के और भी आफ़तें बहुत सी हैं नर बोला कि इस बेपरका वहां
पहुंचना बशर्ते हयात खुदाकी कुदरत से कुछ दूर नहीं लेकिन लाज़िम है कि
यह थोड़े से पर हमारे अपने पास रक्खे किसवास्ते कि जब कोहकाफ़ की हद्द
में पहुंचेगा तो एक जंगल बड़ा ऐसा मिलेगा कि जिस्का ओर छोर नहीं चाहिये कि उ
स्के दाख़िल होने के वक़्त हमारे ताल पर जला कर पानीमें घोले और अपने तमाम बदन
पर मललेवे फ़िर बे धड़के चला जाय उस्की बुसे तमाम जानवर दरिंदे गज़िन्दे भाग जायें
गे इस्की सूरत भी देवकी सी हो जायगी जब उस जंगल को तै करके दर्याव कहरमा में पहुं
चे सुफ़ैद पर जला कर उस्की राख पानीमें घोल कर बदन में मले फ़िर नहा धो कर
साफ़ कर डाले खुदा के फ़ज़ल से उसी घड़ी अपनी असली सूरत पर आजायगा ले
किन वहांके लोग उसको पकड़कर माहेयार सुलैमानी के पास लेजावेंगे चाहिये कि
यह अपना मतलब उससे कहै पर वह उसी मतलबको दर्पेश करेगा कि जो कोई इस मो
ती के पैदाइश की हकीकत से खबरदार हो तो उसको मैं अपनी बेटी मोती समेत दूं
बेहतर यह है कि इस हकीकत को यह तमाम याद रक्खे भूल न जाय तो अलबत्ता मा
हयार सुलैमानी अपनी बेटी इससे ब्याह देगा क्यौंकि कौलका वह बड़ा सच्चा है मादः
ने कहा कि यह बेपर हमारे परको क्यौंकर पावे इस बात के सुनतेही नर ने अपने
बाज़ू फटफटाये कितनेही पर गिर पड़े हातम ने सबके सब चुन लिये निहायत खु
श हुवा फिर मादः बोली ऐ नर यह तूने क्यौंकर जाना कि यह शख्स इस काम को आया है "
और इतने किस्से तूने क्यौंकर याद रक्खे उसने कहा हमारे कौमको जितने नर हैं तमाम जहानका अह
वाल औवलसे आख़िर तक जानते हैं और मादःसे ताय बात चीतके कुछ नहीं जानती उतने मेसुबह

इवा कर लोग उड़ गया

हातम उठ खड़ा हुवा और एक तरफ़ को चला बाद दो चार रोज़के एक रात किसी दरख़्त
के तले सोगया था इतनेमें बहुत से जानवर फ़र्याद करने लगे कि है है कोई खुदाका
बंदा हमारी दादको नहीं पहुंचता इस आवाज़ को सुनकर हातम अपने जीमें क
हने लगा कि ऐ हातम तूभी खुदाहीका बंदा है पस तुझको चाहीये की तू जाकर उ
नका अहवाल पूछे और मदद करे यह सोच कर उसीतरफ़ उठ दौड़ा जब नज़दीक ग
या तो क्या देखता है कि एक लोमड़ी हथ्थ पांव ज़मीन पर दे दे मारती है इस अहवा

लसे उस्को देख कर हातमने पूछा कि तुझको किस कहरने सताया है जो इस तरह बि
लबिला रही है लोमड़ी ने कहा ऐ जवान शाबाश तेरी हिम्मत पर जो तूं इस बुरे वक्त में
मेरे पास आया और अहवाल पूछा। हक़ीक़त यह है कि एक बहेलिया मेरे नर को
बच्चों समेत पकड़ कर ले गया है मैं उनकी जुदाई से रोती हूं बल्कि हर एक तरफ़ फ़र्या
द करती हूं तिस पर भी कोई मेरी आह व ज़ारी नहीं सुनता मगर एक तूं आया है सो
देखिये क्या हो क्योंकि तूं इनसान है और मैं हैवान हूं यक़ीन है कि तूं अपनी क़ौम की
खातिर करेगा हातमने कहा तूं यह क्या कहती है हमारे क़ौम में सब आदमी एकसे न
हीं केतने हैं मोमदिल कितने हैं संगदिल लेकिन तूं सच्च कह कि तेरे नर को और बच्चों
को कौन ले गया है लोमड़ी बोली कि यहां से छ सात कोस पर एक गांव है उसमें एक बहेली
या रहता है उसका मकदूर का यही काम है पर यह कुछ मालूम नहीं कि उस्को हम ग़रीबों
के दुख देने से क्या फ़ायदा है हातमने कहा उस्का येही पेशा है लाज़िम है कि तूं मुझे
राह बतादे तो मैं जाकर तेरे ख़ाविंद को बच्चों समेत उससे छुड़ा दूं अगर उनके बदले
वह मेरा सिर मांगेगा तो उज़र न करूंगा क्योंकि यह खुदा के राह का सौदा है लोमड़ी ने
कहा ऐ जवान अगर तेरे साथ चलूं तो ऐसा न हो उससे मिल कर मुझे पकड़ ले तो मेरा
भी अहवाल उसी बंदर का सा होय हातमने कहा उसकी हक़ीक़त क्योंकर है बयान
कर लोमड़ी बोली कि एक बंदरने किसी जंगल में जाकर एक गढ़े में बच्चे दिये थे ॥
इत्तिफ़ाक़न एक दिन उस जंगल में एक बहेलिया जा निकला बच्चे उस गढ़े में अप
ने बाप के साथ बैठे थे उसने घात से पकड़ा और ले जाकर एक दौलतमंद के हाथ बेच
डाला हरचंद कि बंदरिया हर एक हैवान से बड़ी दाना थी लेकिन बुरे दिन जो आगे
आये होशयारी कुछ काम न आई पकड़ी गई सूरत उसकी यह है कि वह बंदरिया अ
पने ख़ाविंद और बच्चों की जुदाई में सिर टकड़ा टकड़ा रोती पीटती पड़ी फिरती थी
एक दिन लाचार होकर ज़िमींदार के पास फ़रियाद को गई उसने हालत बाह उसका दे
ख कर तरस खाके कहा कि ओरे ऐसा किसने तुझे दुख दिया है जो इस तरह बिलबि
लाती है किसीने कहा कि इसके ख़ाविन्द को छ बच्चों समेत फ़लाना बहेलिया ले गया
है फ़लानी जगह रहता है ज़िमींदार ने कहा कि अभी तूं जाकर इसके बच्चों समेत नर
को जल्द छोड़ादे बमूजिब उसके हुक्म के वह शख़्स उधर को रवाना हुवा बंदरिया
भी साथ उसके लगली जब वह मरद बंदरिया समेत गांव में पहुंचा बहेलिये के द
रवाज़े पर जाकर पुकारा वह वहीं निकल आया उसने कहा कि इस बंदरिया के ब
च्चे नर समेत जो तूं पकड़ लाया है छोड़ दे उसने जवाब दिया कि दो चार दिन हुए कि

मैंने फ़लाते मालदार के पास उसके बच्चे नर समेत बेच डाले हैं वह उसको साथ लेकर मालदार के पास आया और कहा कि इस बंदरिया के बच्चे और बंदर जो तैंने इससे खरीदे हैं छोड़ दे क्योंकि यह बेचारी बहुत बिलबिलाती है उसने जवाब दिया कि मैं इससे दिल बहलाता हूं क्योंकर छोड़ दूं उसने यह ख़बर ज़िमीदार को पहुंचाई वहीं उसने मालदार को कहला भेजा कि तू बंदर उसके बच्चों समेत हाज़िर हो वह उसी वक़्त बमूजिब हुक्म के हाज़िर हुवा उसने देखते ही बंदरिया के बच्चों को पसंद किया और अपने जी में कहा कि यह मेरे पास रहैं तो ख़ूब है यह समझकर बहेलिये से कहा कि किसी फ़िकर से इस बंदरिया को भी पकड़ लाओ उसने उसी वक़्त उसे पकड़ दिया ज़िमीदार ने बच्चों को उस दौलतमंद से ले लिया और बंदर को उसके हवाले किया निदान बंदरिया बच्चों की दर्दे जुदाई से मर गई नर भी उसी ग़म में हलाक हुवा ऐ जवान आदमी की बेओफ़ाई सुनी तूने फिर किस तरह तेरी बात से पतियाऊं शायद ऐसाही सलूक तू मुझसे करे। एक और बला में डाल दे हातम ने कहा ऐ लोमड़ी अपनी ख़ातिर जमा रख मैं उन लोगों में नहीं ख़ुदा की क़सम तुझसे बदसलूकी न करूंगा तू बेधड़क मुझको उस गांव में ले चल कि मैं उस शख़्स से तेरे ख़ाविंद और बच्चों को छोड़ादूं इस बात को सुनकर वह ख़ुश हुई और उसकी हिम्मत पर आफ़रीं करके आगे हुई जब पहर रात गई उस गांव के नज़दीक जा पहुंचे हातम ने कहा अब तू यहां कहीं छिप रह मैं बस्ती में जाकर सबेरे बहेलिये को ढूंढ निकालूंगा वह किसी झाड़ी में दुबकी मार कर बैठ रही जब सुबह हुई सूरज निकला हातम उठकर बहेलिये के दर्वाज़े पर आया ताली दी वह निकल कर पूछने लगा कि ऐ जवान मुझसे क्या काम है तुझे जो ऐसे भोर हीं आया है तू तो हमारे गांवं का नहीं मालूम होता। हातम ने कहा ऐ बहेलिये मुझे एक ऐसा ही आज़ार हुवा है कि जिसका इलाज मुझ मुसाफ़िर से नहीं हो सकता क्योंकि एक हकीम ने बतलाया है अगर ताज़ा लहू लोमड़ी का तू अपने बदन में मले तो अभी अच्छा होता है इस वास्ते मैं तेरे पास आया हूं अगर तेरे पास तीन चार बच्चे लूंबड़ी के हों तो मुझे दे और उनकी क़ीमत जो चाहे सो ले बहेलिये ने कहा सात लूंबड़ियों में ने पकड़ी हैं जितनी दर्कार हों उतनी ले यह कहकर के उन सातूं को हातम के रूबरू ले आया उसने सात अशरफ़ियां देकर सातों को ले लिया और जंगल में लाकर हांथ पांव की रस्सियां काट कर छोड़ दिया बच्चे तो कुछ मुहब्बत रखते थे दौड़कर अपने मा की गोदी से जा लगे वह उनको प्यार करके नर के पास जो आई तो क्या

देखती है कि नज़दीक मरने के पहुंचा है। लूली लोटने पोटने और सिर पर खाक
डालने हातम ने कहा ऐ लोमड़ी अब क्यों रोती पीटती है वह बोली आज मेरे सिर
का ताज ढुला जाता है क्योंकर न पीटूं हातम ने कहा ऐ नादान इसकी उमर इतन
हीं थी लूं बड़ी बोली इसकी यह हालत मेरी जुदाई और बच्चों के ग़म ने नहीं पहुं
चाई है अगर अभीं इस्का इलाज होवे तो न मरे हातम ने पूछा कौनसी दवा है ब
ता कि तलाश की जावे उसने कहा अगर जीते हुए आदमी को मार कर उस्का गरम
गरम लहू इस्के मुंह मे टपकाओ तो अभी अच्छा होजाय हातम बोला कि मुझको
आदमी से ऐसी क्या दुश्मनी है जो हैवान के वास्ते उसे मारूं अगर तुझको आद
मी का लहू दर्कार है तो कह किस जगह का दर्कार है अभी हवाले करता हूं उस
ने कहा कहीं का हो मगर गरम हो हातम ने तर्केश से नश्तर निकाल कर बायें
हांथ की फ़स्त हफ़्त अंदाम खोली और कहा कि ऐ लोमड़ी जेतना लहू तुझे
दर्कार है ले वह अपने नर को उस्के पास ले आई और कहा कि जितना इस्के मु
ह में डालोगे निहायत मेहरबानी है हातम ने उस्के कहने के मवाफ़िक़ अपना
लहू पिलाया कि उस्का पेट भर गया और कूयत बदन में आ रही तब उसे हांथ
में पट्टी बांध कर कहा ऐ लूमड़ी अब तू मुझ से राज़ी हुई लूं बड़ी बच्चों समेत उस्के
पांव पर गिर पड़ी हातम उस्को दिलासा देकर आगे बढ़ा जब भूख लगती थी जं
गल का मेवा खा लेता था और प्यास में वहीं के नदी नालों का पानी पी लेता। बाद ए
क मुद्दत के किसी जंगल में जा पहुंचा वहां सूर्य की गर्मी इस क़दर थी कि मारे प्या
स के बेताब होगया हर तरफ़ पानी ढूंढने लगा कि एक सुपेद बर्फ़ सा एक तालाब
दूर से नज़र आया हातम शौक़ से बे इख़्तियार उस्के तरफ़ दौड़ा जब नज़दीक प
हुंचा कुछ न देखा मगर एक सांप सुपेद गुंडली मारे नज़र पड़ा चाहता था कि फिरे
वह बोल उठा ऐ जवान क्यों फिर चला तू किस काम को यहां आया हातम ने
जो उस्को बातें करते देखा घबरा कर कहने लगा ऐ बंदे खुदा मैं शिद्दत से प्यासा था
दूर से तेरे रंग की सुपेदी जो मानिन्द पानी के नज़र आई इधर चला आया अब र
खुदा की कुदरत का तमाशा देख कर फिर चला सांप ने कहा ऐ अज़ीज़ तुझको
यहां सब कुछ मुअस्सर होजायगा खातिर जमा रख मेरे साथ आ आख़िरुल
सांप रवानः हुवा और हातम अपने दिल में सोचा हरचंद कि यह सांप बातें करता
है पर इस्के साथ जाना खूब नहीं क्योंकि मूज़ी है इतने में यह ख़याल गुज़रा कि
जो कुछ तक़दीर में है वही होगा चलना चाहिये तिस पर भी आख़िरुल आख़िरुल

इधर रखने लगा सांपने जो देखा कि यह जाने में डरता है कहा ऐ मर्दे खुदा कुछ
अंदेशा न कर पांव उठा हातम उसके साथ बेखटके रवाना हुवा ग़रज़ एक बाग़ बि
हिश्त बहार में जा पहुंचा वहां की हवा से जी उसका खिल गया निहायत बाग़ बा
ग़ हुवा क्योंकि उस किस्म का बाग़ कहीं न देखा था मगर परियों के मुल्क में फिर इधर
उधर की सैर करता हुवा एक मकान में जा पहुंचा वहां फ़र्श बादशाहानः तमाम
बिछा हुवा था और एक हौज़ के कनारे एक मसनद निहायत अच्छी लगी हु
ई थी सांपने कहा यहां ज़रा ठहरो यह कह कर होज़ में गिर पड़ा बाद एक दम के
कितने परीज़ाद सोने रूपे के ख़्वान जवाहिर से भरे हुए सिरों पर रक्खे उस हौज़ से
निकले हातम को सलाम करके ख़्वान आगे रख दिये उसने पूछा ऐ खुदा के बंदो
सच कहो तुम कौन हो उन्होंने अर्ज़ की हम उसी के ख़िदमतगार हैं जो तुम
को अपने साथ लाया है और यह जवाहर तुमारे वास्ते भिजवाया है लाज़िम
है कि क़बूल करो उसने कहा यह मेरे किस काम का है इतना माल मैं क्योंकर
उठाऊं और किस पर लाद कर ले जाऊं इतने में फिर वैसे ही परीज़ाद उसी तर
ह से सिरों पर गंगा जमनी ख़्वान ज़रबफ़्त और बादले के ख़्वानपोशों से ढांपे
हुए उसी चश्मे से निकले उसने पूछा इसमें क्या है उन्होंने अर्ज़ की आप ही के
लिये लाये हैं हातम ने कहा बहुत अच्छा मेहमान हाज़िर है पर साहेब ख़ा
नः कहां है वहीं वह सांप एक जवान खूबसूरत बना हुवा चालीस परीज़ा
दों समेत हौज़ से निकल आया हातम उस को देख कर हैरान हुवा कि यह
जवान खूब सूरत कौन है फिर ताज़ीम को उठ खड़ा हुवा उसने हातम को गले
लगा कर मसनद पर बिठलाया और पूछा कि तुम मुझे पहचानते हो वह बो
ला कि कभी देखा होता तो अलबत्ता पहचानता उसने मुसकराकर कहा
मैं वही हूं जो तुम्हें ले आया हातम बोला ऐ अज़ीज़ पहले तेरी सूरत सांप की
थी अब आदमी की शकल क्योंकर हुई उसने कहा कि यह भेद बाद खाना
खाने के खुल जायगा फिर दस्तरख़्वान बिछाया खाना चुनवाया इतने में ज
ड़ाऊ सिलफ़ची आफ़ताबे दो परीज़ाद लाये और उनके हाथ धोलवाये तो
वह खाने में मशग़ूल हुए परीज़ाद सब अपने अपने कामों में लग गये हात
म खाना खाता जाता था और जी में कहता था कि मैंने इस मज़े का खाना यहां
खाया है या फिर नौफ़ल के यहां को हे निदा पर । शायद यह शख़्स भी प
रीज़ाद की क़ौम से हो जब खाना खा चुके ख़वास आफ़्ताबदान औ पानदा

न जड़ाऊ ले आये हातम ने जो इतर मला दिमाग़ उस्का महक गया है रान हुवा कि य
इलाही ऐसी न्यामतें और ऐसी खुशबूइयें तूने इस क़ौम को बख़्शी हैं कि इनसान
को ख़्वाब में भी मुयस्सर नहीं बाद इस्के साहेब ख़ाने से पूछा कि पहले तुमारी श
कल सांप की थी अब परी की सी हुई उस्का क्या सबब है वह बोला ऐ जवान मैं परी
के क़ौम से हूं और नाम मेरा शमशाह है एक दिन मैं हज़रत सुलेमान के वक़्त में
अपनी बाग़ की सैर को गया था यों ख़याल गुज़रा कि अपनी लशकर समेत आ
दमियों के मुल्क में चढ़ जाऊं उनको क़तल करूं और मुल्क छीन लूं क्योंकि
वह मुल्क निहायत पाकीज़ा और अच्छा है यह सोच कर नौकरों से कहा कि
तमाम फ़ौजें तैयार रहें सुबह को मुझे एक मुहिम दरपेश है इतने में रात होगई
बाद फ़राग़त के ख़्वाबगाह में जाकर आराम किया सुबह के वक़्त जो उठा तो
अपने तईं तमाम लशकर समेत सांप की सूरत पाया सारा दिन बिना पानी मछ
ली की सूरत तड़पा किया और शाम से सुबह तक लटक कर दर्गाह इलाही में
तौबः किया बारे ख़ुदा की फ़ज़ल से तमाम फ़ौज मेरी पहिली सूरत पर आगई
पर मेरी न हुई फिर मैं ने गिरिया व ज़ारी बहुतसी की तब यह आवाज़ आई कि
जो कोई अपने क़ौल से फिरता है उस्का ये ही अहवाल होता है फिर मैने बहु
तसी तोबा किया और कहा कि फिर ऐसा ख़्याल दिल में कभी न लाऊंगा इलाही मे
रा गुनाह बख़्श हुक्म हुवा कि थोड़े दिन और सबर कर मैं ने फिर बहुतसी आज
ज़ी की कि अब मेरी निजात हो ऐसा ध्यान फिर ख़ातिर में कभी न लाऊंगा तब
यह आवाज़ आई कि एक दिन एक जवान यमन का रहने वाला तीस बरस में इध
र आवेगा तू उस्को देखते ही पहिली सूरत पर आ जावेगा चाहिये कि तू उस्की ख़ि
दमत दिल से करे क्योंकि जो वह तेरे हक़ में दुआ मांगेगा तो तू हमेशा अपनी सूरत
असली पर रहेगा नहीं तो सांप की शकल फिर हो जावेगी ग़रज़ उसी दिन से मैं सां
प की सूरत हो गया हूं और तीस बरस से तेरी इन्तिज़ारी इस जंगल में खेंचता था तु
झे देखते ही मैंने जाना कि जवान यमन का ये ही है इस उम्मेद पर तेरी ख़िदमत दि
ल और जान से मैंने की अगर मेरे हक़ में दुआ करे तो निहायत मेहरबानी है हा
तम ने कहा वह क़ौल कौनसा था जिस्से तू फिर गया वह एक आह भरकर बो
ला कि हमारे क़ौम ने हज़रत सुलेमान से इक़रार किया था कि अगर हम आ
दमियों को ईज़ा दें या उनके मुल्क का इरादा करें तो ख़ुदा का ग़ज़ब हम पर पड़े
उस दिन से हमारे क़ौम ने किसी आदमी को दुख नहीं दिया मगर एक दिन मेरे

दिलमें यहख़याल गुज़रा कि जिस्को यह कुछ सज़ा पाई अबतेरे रूबरू भी दिल
से तोबः करता हूं कि फिर ऐसी ध्यान न करूंगा ख़ुदा गवाह है हातम ने उठकर गुस
ल किया कपड़े पाकिजः पहरे परिज़ाद के हक़में दिलसे दुआ की उस्की दर्गाह में
क़बूल हुई हातम अगरचे क़ौम यहूद से था पर ख़ुदा को एक जानता था दिनरा
त उसी के ज़िकर में मशग़ूल रहता था ग़रज़ हातम की दोआ कबूल हुई वह अ
पनी सूरत असली पर क़ायम रहा फिर उसने हातम से पूछा कि साहेब यहां कि
स वास्ते आये हो और कहां जायेंगे हातम ने कहा अब तो मैं शाहाबाद से आ
या हूं बर्ज़ख़ के बस्ती को जाऊंगा यह कहकर वह मोती रूपे का जो बतौर नमूने के
ले आया था देखलाया यह देखकर शमशाह ने कहा सच कहते हो जो इस जो
ड़े का मोती उसी शहर के बादशाह के पास है लेकिन उसने शर्त की है जो कोई उस्के
पेदाइश का अहवाल कहे अपनी बेटी मोती समेत उस्के हवाले करूं पर तूं क्योंकर
पहुंचसकेगा क्योंकि रस्ते में आफतें बहुतसी हैं आदमी की इतनी ताक़त नहीं जो
वहां जासके हातमने कहा जो होनी है सो हो मैं जाये बिन नहीं रहने का ख़ुदा मेरा
निगहबान है बादशाह ने फ़र्माया ख़ातिर जमा रख मैं भी बहुतसे परीज़ाद तेरे साथ
करदेता हूं वे तेरे मददगार रहेंगे यह कहकर परिज़ादों से कहा कि मैंने इसके बदौ
लत एक बड़ी बला से निजात पाई है अब लाज़िम है कि मेरी तरफ़ से तुम भी इस मुहि
म में इस्का साथ दो उन्होंने अर्ज़ की हम जान और दिलसे हाज़िर हैं जो हुज़ूर
से हुक्म होगा बजा लावेंगे शाह ने कहा कि तुम इस्को बर्ज़ख़ के शहर में पहुंचा
दो इसबात के सुनते ही वे सबके सब सिर झुकाकर रह गये फिर एक दम के बाद सि
र उठाकर अर्ज़ करने लगे जहांपनाह उस जगह में पहुंचना बहुत मुश्किल है "
क्योंकि ऐसे ऐसे देव रस्ते में हैं जो हमें जीता न छोड़ेंगे अगर जहांपनाह उधर का क़
स्द करें तो भी लड़ाई होगी हम रिकाब में हाज़िर हैं लेकिन इतने लोगों से यह काम
न होगा शाह ने फ़र्माया है जवांमर्दी लाज़िम है कि इस जवानमर्द का यह साथ बर्बाद
न हो किसी सूरत से इस्को वहां पहुंचादो इसबात को सुनकर सात परीज़ाद हिम्मत बां
धकर बोले कि इस जवान को आपके अक़बाल से हम पहुंचावेंगे लेकिन जो राह
में कुछ ख़लल ज़ाहिर हो तो जहांपनाह मदद करें बादशाह ने इस बात को क़बूल
किया तब वे एक उड़नखटोला लाये हातम को उसपर बिठलाया चार शख़्सों ने तो
पाये पकड़े तीन साथ हो लिये ग़रज़ इस सूरत से आसमान की तरफ़ हवा हुए तीन रा
तदिन चले गये चौथे दिन जिस जगह की देव रहते थे परीज़ादों ने दूर से वहां खड़ें

लाऐक दरख़्त के तले उतारा और आपसमें कहा कि तीनदिनसे कुछ खाना पीना नहीं हुवा बेहतरहै यहां घड़ी दो घड़ी आराम करें कुछ खायें पियें इस बात को सुनकर हातमने भी कहा मुख़्तार हो जो मुनासिब जानो सो करो परीज़ाद जुदे होकर इधर उधर चले गये ऐक हातम केपास खड़ा रहा इतने में कई हज़ार देव शिकार खेलते हुवे इधर आ निकले क्या देखते हैं कि ऐक आदमी खटोले पर बैठा है पास उस्के एक परीज़ाद खड़ा है दो चार हज़ार तो खटोले के गिर्द होगये छः सात हज़ार गुल मचाने लगे कि यह आदमी ज़ाद कहांसे आया वह परीज़ाद उन्को देखकर चाहताथा कि हातम को छोड़कर भाग जाय इतनेमें चार देव उस्से लड़पड़े दो तीन उसे मार रक्खे आख़िर पकड़ा गया फिर वे देव उस परीज़ाद को हातम समेत अपने सर्दार के पास ले आये और उस परीज़ाद से पूछा कि इस आदमी को कहां से लाया है और कहां लेजाता है उस्ने कहा यह जवान शमश शाह का बड़ा दोस्त है इस्को मत सताओ नहीं तो ख़राब होगे उन्होंने कहा बादशाह तो ऐक मुद्दतसे ग़ायब है उस्का अहवाल कुछ मालूम नहीं अब कहां से पैदा हुवा परीज़ादने तमाम हक़ीक़त बयान की देवों के सर्दार ने सिर निचा करके कहा कि इस आदमी को परीज़ाद समेत फ़लाने कुवें में कैद करो रातके वक़्त खाने के साथ खाऊंगा उन्होंने वही किया और वे जो छओं परीज़ाद हातम को छोड़कर खाने के फ़िकर में गये थे उस दरख़्त के तले आये तो क्या देखते हैं कि दो तीन लाशें देवों की पड़ी हैं न हातम है न वह परीज़ाद निहायत हैरान ओ परेशान होकर आपस में कहने लगे कि यह देव किस जगह के हैं और इन्हें किसने मारा उस आदमी और परीज़ाद को कौन लेगया चाहिये कि इन मरे हुओं के उठाने को कोई न कोई देव आवे इतने में जो ग़ौर से देखा तो एक को सिसकते पाया थोड़ा सा पानी उस्के मुंहमें चुवाया आंखें उसने खोल दीं तब उन्होंने पूछा कि तूं कौन है और तेरे ठिकाना कहां है उसने कहा कि मैं मकरीश के देवों में से हूं ऐक परीज़ाद के हाथ से मेरा यह हाल हुवा है पर उस्को भी ऐक आदमी समेत मकरीश के पास देव पकड़ लेगये हैं परीज़ाद इस बात के सुनते ही उस देव को पकड़कर अपने मुल्क में ले आये और बादशाह के हुज़ूर में आकर दादख़्वाह हुये बादशाह ने उन्की फ़र्याद सुनकर फ़र्माया कि देखो तो किस ने इनपर ज़ुल्म कियाहै और उस जवान को कि जिस्के साथ यह गये थे वह कहां हैं उन्होंने अर्ज़ की जहांपनाह हम तीन स

नदिन जोलगा तार चलेगये निहायत भूख प्यास से और मांदगी ने ग़लबादि
या इससबब से उस आदमी को किसी दरख़्त के तले बैठाया और ऐक प
री ज़ाद को उस्के पास छोड़ कर खाने की तलाश में गये एक दम के बाद आ
न कर देखा तो उन्को न पाया मगर दो तीन देव मरे देखे हैंरान हुऐ कि उनका
अहवाल किस्से पूछें इतने में इस देव को जो गौर करके देखा तो सिसकता था
थोड़ासा पानी इस्के मुंह में टपकाया बारे यह होशयार हो कर उठ बैठा इसी के सा
थी उन्को पकड़ कर अपने बादशाह के पास लेगये हैं हम भी इस्को बांधकर हज़ू
र के पास ले आये आगे जो मर्ज़ी हो बादशाह ने फ़र्माया उस्को हमारे रूबरू ल
ओ वे ले आये पूछा मकरीश अबतलक जीता है और हमें भूलगया उसने अ
र्ज़ की जहांपनाह तो एक मुद्दत से गायब थे आज इन परीज़ादों से अहवाल
आपके ज़ाहिर होने का मालूम हुवा लेकिन मुझे एतबार न था अब जाना कि
यह सच्च है बादशाह निहायत गुस्से हुआ और फ़र्माया कि जल्द लश्कर तै
यार हो निदान तीस हज़ार परीज़ाद से उस्के मुल्क को छूट दौड़ा तीन दिन के बाद
शहर के नज़दीक जा पहुंचा वहीं डेरा किया फिर कई जासूसों को कहा कि मकरी
श की ख़बर लाओ कहां है बादशाह का हुक्म सुन्ते ही वे उठे बाद एक दम के आ
कर अर्ज़ की फ़लाने जंगल मे शिकार खेलता है बादशाह सुन्ते ही तमाम लश्क
र समेत उस पर जा पड़ा लोग उस्के गाफ़िल थे संभल न सके बहुत से ज़ख़मी हु
ऐ केतने हीं मारे गये आख़िर मकरीश कई मुसाहबों समेत गिरफ़्तार हो कर
हज़ूर में आया बादशाह ने फ़र्माया कि ऐ काफ़िर तू हम को भूलगया इतना न
जाना कि शमशाह अबतलक जीता है मैं उस्के इलाक़े मंदों को जो पकड़ के कै
द करूंगा तो बादशाह मुझ को इस तरह कब जीता छोड़ेगा ख़ैर अब इसी में
है कि उस आदमी को परीज़ाद समेत ला कर जल्द हाज़िर कर वह बोला मैं उ
स्को उसी वक़्त खागया आदमी को कब देव जीता छोड़ता है बादशाह ने निहा
यत गुस्सा खाके कहा ऐ बदज़ात हज़रत सुलैमान ने तुम को आदमियों को
सताने से मना नहीं किया था और तुमने यह क़ौल नहीं दिया था कि हम उ
न को दुख न देंगे और न खायंगे देव ने कहा वह बात हज़रत सुलेमान हीं
के साथ गई तब तो बादशाह मारे गुस्से के कांपने लगा और कहा कि जल्द ल
कड़ियों का ढेर लगाकर इस काफ़िर को साथियों समेत जला दो मकरीश ने

जो देखा कि अब कुछ बस नहीं चलता और यह बिन जलाये नहीं रहता किसी
तरह अब इसके हाथ से छूटिये फिर आगे समझ लेंगे यह इसी सोच में था कि बा
दशाह ने उससे फिर कहा कि ऐ ज़ालिम उस आदमी के साथ मुझे बड़ी मुहब्बत है
जो तू उसको सहीसलामत मेरे हवाले कर देवे तो मेरी तेरी दुश्मनी नहीं। किसी त
रहका तू अपने जी में अंदेशा न कर नहीं तो जान से मारूंगा मकरीश ने कहा कि
अगर तुम हज़रत सुलेमान की क़सम खाकर कहो कि मैं उसी को लेकर छोड़ दूं
गा और कुछ न कहूंगा तो मैं अभी उस आदमी को परीज़ाद समेत हज़ूर में
हाज़िर करता हूं गरमश बादशाह ने कहा मेरे तेरे दर्मियान हज़रत सुलेमान हैं
मैं कभी तुझसे दग़ा न करूंगा उसने अपने नोकरों से कहा कि फ़लाने कुए में एक आदमी
परीज़ाद समेत क़ैद है जल्द ले आओ वे दौड़े हातम को परीज़ाद समेत ले आये बाद
शाह ने हातम को तख़्त पर बैठा लिया और कहा जैसा मैं न कहता था देखो हमें वह
तसे मर्दुम आज़ार हैं तुझे जीता न छोड़ेंगे हातम बोला जो कुछ तक़दीर में है वही
होता है हर हालत में ख़ुदा का शुक्र किया चाहिये फिर शाह ने हुक्म किया कि इस
बदज़ात मकरीश को छोड़ना सलाह नहीं जल्द इसको लकड़ियों में रखकर जला
दो कि फ़साद और फ़ितना आलम से उठजाय यह सुनते ही मकरीश को उनके दे
वों समेत परीज़ादों ने लकड़ियों के ढेर में डाल दिया और आग लगादी तब वह
पुकारे क्यों साहेब तुमने हज़रत सुलेमान को दरमियान देकर यही क़ौल किया
था बादशाह ने फ़र्माया ऐ दग़ाबाज़ जिस वक़्त कि तू हज़रत सुलेमान के हज़ूर
क़ौल देकर फिरगया ख़ुदा से न डरा अगर मैं तुझसे जो वे क़ौल हुवा तो क्या ताज्जु
ब है सिवा इसके तेरे बदज़ात है ने एजलाना बेहतर है हासिल यह है कि उसको उसके
देवों समेत जलवा दिया और अपने छोटे भाई को वहां मुक़र्रर करके फ़र्माया कि
तुम इस मुल्क से ख़बरदार रहो फिर हातम से पूछा कि अब आपका इरादा क्या है
उसने कहा वही जो मैं ने पहिले अर्ज़ की थी बारबार कहने से क्या फ़ायदा अलग़रज़ है
से हो मुझको वहां जाना और उस मोती को लाना तब बादशाह ने अपने लोगों को
फ़र्माया कि ऐ अज़ीज़ो तुममें से जो कोई अक़्लमन्द और दाना हो इसके साथ जाय
और वहां पहुंचा आवे यह सुनकर चार परीज़ाद उठ खड़े हुए कि यह ख़िदमत ह
मारे ज़िम्मे है हम बजा लावेंगे इस बात को सुनकर बादशाह ने निहायत मेहर्बा
नी फ़र्माई और हातम को उनके साथ रुख़सत किया वे उसी तरह से उसको उड़ा

खटोले पर बैठा कर ले उड़े रात दिन चले जाते थे जब बहुत भूखे प्यासे होते तो
निराली जगह कहीं देखकर उतर पड़ते कुछ खापी लेते। इसी सूरत से पंद्र
रोज़ तक परमारे चले गये सोलवें दिन उस पहाड़ पर उतरे कि जिस पर शाह
ज़ादऐ तूमान ऐक परीज़ाद ख़ूबसूरत ने माह यार सुलेमानी की बेटी पर आ
शक होकर अपना रहना इख़्तियार किया था और उसकी जुदाई से आहें मारक
र रो रहा था उसके रोने की आवाज़ हातम ने सुनी बेइख़्तियार होकर पूछने लगा
कि ऐ अज़ीज़ो इस दर्द से कौन रोता है इसे मालूम किया चाहिये यह कहक
र उठ खड़ा हुवा और आप ही उधर चला ऐक दम में जा पहुंचा तो एक जवान
परीज़ाद ख़ूबसूरत को रोते देखा पूछा ऐ बंदे ख़ोदा तू कौन है और इस ज
गह किस वास्ते रोता है उसने आंख उठा के देखा कि ऐक आदमी खड़ा है बो
ला कि ऐ शख़्स तू कहां से आया और बतला क्योंकर आया क्या काम है हा
तम ने कहा कि मैं मुर्ग़ाबी के अंडे बराबर ऐक मोती ढूंढता हुवा आया हूं
और वह मोती ज़ज़ीरऐ बर्ज़ख़ के बादशाह पास है इस बात को सुनकर प
रीज़ाद हंस पड़ा और कहने लगा ऐ आदमज़ाद उस मोती का तेरे हाथ ल
गना मुश्किल है इस वास्ते कि वहां का बादशाह कुछ सवाल रखता है हर ए
क से पूछता है कोई उसका जवाब नहीं दे सकता बल्कि हम परीज़ाद होकर
ओहदे: बर हो नहीं सकते फिर तू आदमी होके क्योंकर बर आवेगा
और इस मोती की पैदाइश का अहवाल किस तरह बतलावेगा हातम ने
कहा ख़ैर तूं अपनी हक़ीक़त कह इस हाल से क्यों पड़ा है परीज़ाद ने एक
आह सर्द भर के कहा कि इस टापू के बादशाह की बेटी पर आशक हूं नाम
मेरा शाहज़ादे ऐ मेहराबर है बाप मेरा ज़ज़ीरा तूमान का बादशाह नाम उ
सका मेहरवर है एक दिन मजलिस में बैठा था मैं। कि किसी शख़्स ने उसके हु
स्न का बयान औ तारीफ़ की सुन्ते ही आप से जाता रहा आख़िर न रह सका
उस जज़ीरे में गया और उसके बाप के पास पैग़ाम भेजा उसने सुनकर मुझे
अपने हज़ूर में बुलाया साथ इज़्ज़त के बैठलाया फ़िर उस मोती को मंगवा
कर मेरे सामने रख दिया और पूछा कि यह मोती किस दरिया का है इसकी पै
दाइश क्योंकर है कहां से हाथ लगा मैं न जानता था बल्कि मेरे बुज़ुर्ग भी उ
सकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ न थे जवाब कुछ न दे सका अपना मुंह लेकर रह

लेकर रह गया उसने अपनी मजलिससे बाहर निकाल दिया इत्तिफ़ाकन उस व
क़ वह लड़की आफ़त जान कोठे पर चढ़ीथी निगाह मेरी उसपर जापड़ी अ
ध मुआतो आगे हीं होरहाथा मरिगया जबदेखा मैंने कि कुछ तदबीर बन न
हीं पड़ती लाचार इसपहाड़ पर आके गिर रहा मारे ग़ैरत के अपने मुल्क में न ग
या अब दिनतो गिरियः ओर ज़ारी में रात बेताबी और बेक़रारी में कटती है
न जाना जाती है न जानीसे मुलाक़ात होतीहै हातमने सुनकर कहा कि तूख़ाति
र जमा रख अगर वह मोती लूंगा तो मोती वाली तुझे दूंगा ऐ परीज़ाद मैं उसमोती
की पैदाइश से ख़बरदार हूं देखेगा तू कि तेरे सामने किसतरह उसका अहवाल
बयान करता हूं परीज़ाद ने कहा मुझे ऐतबार नहीं आता तू बकाकर हातम बो
ला वह मोती सीप का नहीं है और वह जज़ीरः भी आगे आदमियों से आबा
द था ले उठ मेरे साथ चल परीज़ाद ने यह बात सुनकर हातम को कुछ सच्चा
जाना उठकर साथ हुवा तब हातम ने उन चारों परीज़ादों से पूछा तुममें इतना
ज़ोर है कि हम दोनों को इस खटोले पर बैठाले और लेचले वे बोले अगर तुमसे
चार हों तो भी अच्छी तरह लेजांये निदान वे दोनो खटोले पर जाबैठे वे लेउड़े
राह में महाकाल देव का बाग़ था जो उनका गुज़र उधरसे हुवा वह वहां सैर कर
रहा था इत्तिफ़ाक़न निगाह उसकी उनपर जापड़ी कई देवों को हुक्म किया कि
दौड़ो खटोले को उन परीज़ादों समेत मेरे पास ले आओ वे उड़े और मै खटो
ले उसके पास ले आये महाकाल ने कहा सच्च कहो इस आदमी को कहांसे ला
ते हो ओन्हों ने कहा कि शामशाह बादशाह के मुल्क से आते हैं वह बोला
कि वह एक मुद्दत से ग़ायब है परीज़ादों ने कहा तुम सच्च कहते हो वह सांप हो
गया था लेकिन इस आदमी के दोआसे वह अपनी असली सूरत पर आगया
है देव ने कहा फिर जाते कहां हो वे बोले बज़रख के जज़ीरे को फिर उसने पूछा
कि यह परीज़ाद कौन है मेहरावर आपही बोला ऐ देव तू मुझे भूलगया मैं मेह
रावर शाहज़ाद मेहरनर बादशाह का बेटा हूं उसने कहा ऐ शाहज़ादे तुझको
आदमी से क्या काम है अपनी राह ले मैं तुझे कुछ कह नहीं सकता क्योंकि
तू हज़रत सुलेमान परीज़ाद की औलाद से है यह कहकर हातम को खटो
ले से खींच लिया मेहरावर बोला कि ऐ देव हज़रत सुलेमान से जो कौल किया
था उसे भूल गया देख मर्दुम आज़ारी न कर उसने जवाब दिया कि वे अब कहां
हैं जो हम उस कौल पर रहें मैं आदमी को न छोड़ूंगा बारह मुद्दत के हाथ ल

गाहै ज़रा मुंह सलोना कर लूंगा मेहरवर ने देखा कि देव आदमी को देख कर बौ
ला गया है इस्को दिया चाहिये बोला कि ऐ महाकाल एक आदमी के खाने से
क्या फ़ायदा मैं दस आदमी तुझको ला दूंगा जो मेरे कौल पर तूं रहै और इस आ
दमी को मेरे हवाले करे क्योंकि मुझे एक काम इस्से बड़ा है देव ने कहा कि ऐ शाह
ज़ादे मैं तेरे ख़ानदान से बहुत वाक़िफ़ हूं इस्को मेरे पास छोड़ जा और जो कह
ता है उसे कर दिखला तब मैं इस्को तेरे हवाले करूंगा शाहज़ादे ने देखा कि कुछ
इलाज नहीं हो सक्ता लाचार होकर कहा कि यह आदमी मेरा बड़ा दोस्त है चा
हिये कि तूं इसे अच्छी तरह रक्खे अगर कुछ भी इसे दुख पहुंचेगा तो तुझ से
बूझ लूंगा उसने कहा जो मकान आपके पसंद पड़े उसमें छोड़ जाइये ग़रज़ एक
बाग़ को पसंद करके उसमें छोड़ा और उस्से कहा कि तूं अपने देवों से कहदे कि इस्की
निगहबानी अच्छी तरह करें मैं दो तीन दिन में दस आदमी तेरे वास्ते ले आता हूं
वह बोला बहुत अच्छा आख़िर शाहज़ादा उन चारों परीज़ादों समेत किसी जं
गल में आया और एक कोने में बैठ कर मशवरत करने लगा अगर अपने मुल्क
में जाकर फ़ौज़ लाऊं तो देर लगेगी बादशाह आ जायगा वह काफ़िर उसे मुकर्रर दुख
देगा सलाह यह है कि घात में लगे रहैं जब देवों को ग़ाफ़िल पावें उस आदमी को
लेकर हवाले हो जावें फिर हमें कौन पाता है उन परीज़ादों ने इस मसलहत को
पसंद किया और घात से एक तरफ़ लगा रहे चौकी के देवों ने जी में कहा कि परी
ज़ाद कुछ आदमी को चुरा कर थोड़ा ही ले जावेंगे और यह पर नहीं रखता जो
आप से उड़ जायगा इस गुमान पर उनमें से केतने शिकार के वास्ते गये और कई
चरिंद परिंद मार कर ले आये आख़िर उनको भून कर सभों ने खाया और शराब
पीकर मस्त हो आधी रात गये बाग़ के दर्वाज़े बंद कर पांव पसार पसार सो रहे
पर यह कोई न समझा कि मेहरावर चार फ़िरिश्ते लिये जान निकालने की घा
त में लगा रहा है अलक़िस्सा देवों को ग़ाफ़िल पाकर हातम को खटोले पर बैठा कर
आसमान की तरफ़ हवा हो गये सूरज निकलते निकलते बाग़ से सौ कोस पर
निकल गये जब दिन चढ़ा एक अच्छी जगह देख कर उतर पड़े कुछ खाथी
कर राही हुए देवों को तो इस बात की ख़बर न थी कि कैदी को कोई ले गया है
ख़ातिर जमा से बाहिर बैठे चौकी दिया किये और वे रात दिन चले गये ज
हां अच्छी जगह नज़र पड़ती वहां उतरते दम लेते हरे होकर चल निकलते
जब बादशाह गुज़र गया महाकाल ने कहा वे परीज़ाद जिस आदमी को छोड़

गयेहैं उसैसे आओ वहीं देव बाग़में आये और उसको नपाया फिर महाक-
ल से जाकर अर्ज़की कि वह आदमी वहांसे ग़ायब होगया वह गुस्सेसे
होकर आपही उसबाग़ मे जो आया तो देखा सच्चही नहीं है फिर तो देवों
पर निहायत झुंझलाया कि निमक हरामों मुक़र्रर तुम्हींने उसको खाया है
देखोतो क्या मज़ा चखाताहूं यह कह कर केतने देवोंसे कहा कि इनको क़ैद
करके खूब सा मारो। उन्हों ने हज़रत सुलैमान की क़सम खाकर अर्ज़की
कि हमने तो उसको हांथभी नहीं लगाया खाना तो एक तरफ़ उसने फ़र्माया
तुम झूठे हो मुझे हरगिज़ अएतबार नहीं आता यहांका तो ज़िकर यहहै
वे परीज़ाद हातम समेत जब दर्याय कहरमान पर पहुंचे इत्तिफ़ाकन म
हाकाल का एक देव उस के जज़ीरेमें गया था उनको पहिचान कर उतर पड़ा
चाहता था कि हातम का हांथ पकड़ कर उठाले जाय वहीं शाहज़ादे मेहर
वरने एक ऐसी तलवार मारी कि उसका हांथ बदनसे जुदा होकर अलग गि
र पड़ा वह कहता हुवा यह भागा भला किया परीज़ाद तुमने आदमी के खा
तिर मेरे हांथमें तलवार मारी अभी इस परदे के देवों को खबर देताहूं कि क
ई परीज़ाद आदमी को लिये जातेहैं देखो तो कैसा बदला लेताहूं मेहरावर
ने यह सुनकर कहा कि तूं किस परदे का रहने वालाहै वह बोला मैं महाल-
के देवों में सेहूं शाहज़ादेने फ़र्माया कि जा अपने महाकाल से कह कि मैं इस
आदमी को लिये जाताहूं खबरदार रह अगर इधर से फिरूंगा तो तेरे शहर
को लूट मार करके खाक स्याह करूंगा यह सुनकर वह देव हवा होगया
फिर उनकोभी परीज़ाद बदस्तूर लेउड़े इतनेमें नज़्दीक एक जंगल के जा
पहुंचे वहां हातमसे कहने लगे कि हमारी हद्द तमाम हुई आगे नहीं जासके
हमको रुख़सत करो मेहरावर बोला ऐ जवान मैं तेरा साथ न छोडूंगा हरहा
लमें तेरा शरीक रहूंगा निदान हातम खटोले से उतर पड़ा चारों को रुख़सत कि
या फिर मेहरावर से कहा कि मुझको यह मन्ज़ूर नहीं कि मेरे सबबसे तुम
को कुछ दुख पहुंचै लेकिन इतना दरियाफ़्त किया चाहताहूं कि इस जंगल
से गुज़रिए किस तरह हो उसने कहा आगे तो परीज़ाद भी उस तरफ़ नहीं जास
कते थे क्योंकि यहांके देव सताते थे बल्कि जान के ख़्वाहां होते थे चुनाञ्चि
एक दिन परीज़ाद बहुत से जमा होकर देवों से लड़े दोनों तरफ़ के हज़ारों हीं
मारे पड़े इसमें मैं जानताहूं कि यहां के देव मरदुम आज़ार और ज़िद्दी हैं

हैं हातम ने कहा कि अगर मैं देव बनकर इस जंगल से चलूं तो तू क्योंकर रा
ह/८ नेकोरे मेहरावर बोला मैं तमाम दिन हवा में उड़ोंगा रातपड़े पर जहां तूं
उतरेगा उतर पडूंगा तब हातम ने उस जानवर के खालपर निकालकर ज
लाये और पानी में उसकी राख घोल कर अपने बदनपर मली देवकी सू
रत होगया जंगल के जानवर तमाम भागने लगे ग़रज़ तमाम दिन चलता
शामको जहां रह जाता वहीं मेहरावर भी आमिलता एक दिन मेहरावर ने
पूछा ऐ हातम यह पर किस जानवर के हैं उसने कहा उनके जिनसे इस मोती
के पैदा होने की हक़ीक़त और जिस सूरत से एक मोती माहेयार सुलेमानी
के हाथ लगा था उसकी कैफ़ियत सुनी गई थी और कहा ऐ मेहरावर जब
मैं शाहाबाद से निकला था तब फ़िकर में हुवा कि ऐसा मोती किस दर्या में
होता है और मैं क्योंकर पाऊंगा ग़रज़ ठहरकर एक दरख़्त के नीचे सिर
नीचा करके बैठ गया कि एक जोड़ा ख़ुशरंग किसी जानवर का भी उस दरख़्
तपर आबैठा मादा ने पहिले तो उस जंगल की आबोहवा को अपने नर के सा
म्हने बुरा कहा फिर दरियायकहरमान की हक़ीक़त बयान करके मेरा अह
वाल पूछा कि यह कौन है और इस सूरत से ग़मगीन बैठा है उसने सरगुज़श्त
और पैदाइश मोतीयों की और हक़ीक़त उन जानवरों की नापैद होने की
जिनके यह अण्डे हैं बयान की और मुझे अपने पर दिये और मुफ़स्सल अ
हवाल माहियार सुलेमानी के रूबरू कहूंगा तूं सुन लिजियो हासिल यह है
कि हातम ने सारा माजरा उससे न कहा इस वास्ते कि ऐसा न हो कि यह आगे चला
जाय मैं अपना काम करने में नाउमेद रहजाऊं ग़रज़ मेहरावर की इतने हीं
अहवालसे ख़ातिरजमः होगई कि मेरा काम भी इसी के बदौलत होगा यह बातें
आपस में करके मेहरावर तो आसमान की तरफ़ को हवा हुवा हातम आगे चे
ला ग़रज़ रात को तो एक जा रहते थे सुबह को अपने अपने तौर पर राही होते
थे एक रात की ज़िकर है कि एक सोहानी सी जगह में दोनों सो गये थे किसा
बक़साज़ के देओं मेंसे एक उनके सिरहाने पहुंचके देखा उसने कि एक देव
और परीज़ाद पास पास सोते हैं उसने जाकर और देवों से ख़बर की जब वे
आथे तो देखकर आपुस में कहने लगे कि इसको अपने बादशाह के पास ले
चला चाहिये उन्हीं मेंसे एक ने कहा ऐ यारो इन दोनों को दुख देना कपाज़
र है कुछ यह हमारे क़ौम से नहीं हैं और न कुछ इन्होंने तक़सीर की है शाय

द और किसी जगह केहैं कुछ कामको जातेहैं रातका वक़्त देखकर सोरहेहैं लेकिन परीज़ाद जागता था उनकी बातें उसने सब सुनीं फिर देवोंने कहा इनको जगाकर पूछा चाहिये शायद पर्दे बर्ज़ख़ केहों वहींके ऐकदेव ने कहा अगर वहींके हों तोहमें क्या दूसरा बोला बादशाह सावक़ एकदिन कहताथा कि बहुत दिनोंसे ज़ज़ीरऐ बर्ज़ख़ की ख़बर नहीं मालूम मगर तुझे उसका डर नहीं जोऐसी बात कहता है॥ अगर यह बात कोई जाके बादशाह से कहदे कि ऐकदेव और परीज़ाद किसी पर्दे के यहां सोतेथे फ़लाने फ़लाने ने देखकर ख़बर नपहुंचाई उसवक़्त तूक्या जवाब देगा और हमारा क्या अहवाल होगा आख़िर दोनोंको जगादिया हातम ने देवोंको देखकर उन्हींके बोलीमें कहा तुमने हमें क्यों जगाया क्या कामहै ओन्होंने कहा तुमकिस पर्देकेहो सचकहो हातम बोला तुमने नहीं सुना किएक आदमी बर्ज़ख़ के ज़ज़ीरे को जाताथा उसकी ख़ातिर से शमश शाह बादशाह ने मकरोश को जलादिया और मुल्क उसका छीन लिया लाज़िमहै कि तुम उसकी तलाश करके अपने बादशाह पासलेजाओ देवोंने फिरपूछा यहपरीज़ाद किसपर्देकाहै हातमने कहा पर्देतूमान काहै यह ख़बर लियेजाताहै कि शमश शाह पैदाहुवा और मकरोश कोमारके मुल्क उसका छीनलिया है यह सुनकर वे बोले तुम आरामकरो हम उसे ढूंढने जाते हैं ग़रज़ उनको रस्ता बतलाकर आपराहली बाद तीन रोज़के एकदरिया पर जापहुंचे मेहरावर ने कहा दर्याऐ कहरमान यहीहै हातम ने देखा कि उसका कनारा उधरका नज़र नहीं आता मौजें आसमान को पहुंचतीहैं और आबी जानवर याने हाथी ऊंट घोड़े बैल की सूरत मगरमच्छ और घड़ियाल उसके किनारेपर अक्सर लोट रहेहैं और परिंदे जानवर हरतरह किसमके हाथीसेभी बड़े बड़े पैर रहेहैं यह क़ुदरते इलाही पर औरभी क़ायल हुवा किसच्चहै तेरीकारीगरी को अक़्ल की क्या ताब जो पासके और ख़याल की क्या मजाल जो उसकी कुनह को पहुंचसके फिर घबराकर मेहरावर से कहने लगा भाई ऐसे दर्याके पार किसतरह जासकेंगे और उसकी लहरों के तसदीयेहमसे नातवान मजाल नहीं कि सातदिन के अर्सेमेंभी इसके उसकनारे पर पहुंचे चुनांचे मैं परीज़ाद होकर यह जुर्रत नहीं करसकता तेरी तो क्यामजाल है यह सुनकर हातमने कहा कुछहो हमें बर्ज़ख़ के उसदापूमें जानाहै तब वह बोला अगर थोड़ेदिन यहांठहरो तोमें इसदरियाके उतरने की तदबीर करूंगा उसने कहा बहुत अच्छा फिर मेहरावर बोला कि यहांसे कई कोसपर परदः बिदराम है वहांकी बादशाहत शम्मशान परी ज़ात करताहै उसके पास दर्याई घोड़े अच्छे

अच्छे पैरक और उड़ते हैं चाहता हूं कि उसके पास जाकर दो घोड़े ले आऊं हात
मने कहा बहुत अच्छा वहीं वह उड़ गया रात बसेरे वहां जा पहुंचा उस बादशा
ह से मिला पूछा उसने कि आपके आने का क्या सबब है फ़र्माइये मेहरावर ने
कहा मुझको दो घोड़े ज़रूर हैं अगर इनायत करो तो ऐन बंदनवाज़ी है वह फिर
पूछने लगा कि तुम कहां से आये हो उसने कहा परदेस नुमान से बादशाह बो
ला मैं तुम्हें पहचानता हूं असल बात तुम मेहरावर शाहज़ादे हो अकेले आने
का क्या सबब उसने कहा सच कहते हो लेकिन मैं एक बला में गिरफ़्तार हूं इ
सलिये अकेला और लाचार हूं इतनी मदद करो तो एहसान तुम्हारा तमाम
उमर मुझपर रहेगा शाह ख़ान उठकर बग़लगीर हुवा और अपने तबेले में ले आ
या कि सबके सब घोड़े हाज़िर हैं निदान दो घोड़े चालाक उड़ते चुनकर मेहरावर के
हवाले किये शाहज़ादे दोनों घोड़ों समेत सायत भर में आ पहुंचा और कहा
उठो जल्द सवार हो हातम वहीं एक घोड़े पर चढ़ बैठा दूसरे पर वह सवार होकर
कहने लगा ख़बरदार इसकी बाग न छोड़ दीजियो उठाये रहियो आख़िर वे उ
न दोनों को चढ़ाकर हवा हो गये बाद कई दिन के भूख प्यास की शिद्दत हुई
परीज़ाद ने कहा मेरे पास थोड़ा सा मेवा और एक सुराही पानी की मौजूद है
चाहो खा पी लो हातम ने दो चार दाने मेवे के खाये दो तीन घूंट पानी के पिये
थोड़ी सी ताक़त हुई फिर संभल बैठा बाद थोड़े दिन के किनारा नज़र आया
परीज़ाद ने कहा भाई अब बाग डाल दो घोड़े ज़मीन पर उतर पड़े हातम ने
कहा ऐ मेहरावर हमने सुना है कि जज़ीरे ऐ बज़्ख़ दर्या के दर्मियान है व
ह बोला इब्तदा इस टापू की यहीं से है जहां हम तुम बैठे हैं पर यह मत गुमा
न करो कि दर्या ये कहरमान से पार हो गये हैं यह उसका दूसरा कनारा नहीं
है एक यह भी टापू है कई टापू इस दर्या में हैं हातम ने कहा वह शहर यहां
से कितनी दूर होगा बोला दस रोज़ की राह फिर उसने कहा तो बैठे क्या हो च
ले चलो मेहरावर ने अर्ज़ की एक बात कहूं अगर तुम मानो हातम ने कहा
सिर और आंखों से फ़र्माइये तब मेहरावर ने कहा मेरा मुल्क यहां से नज़दी
क है चाहता हूं कि जाकर लश्कर ले आऊं क्योंकि हम तुम शानो शौकत से
शहर में दाख़िल हो हातम ने कहा ऐ अज़ीज़ हम कुछ माहेयार सुलेमानी
से लड़ने नहीं आये हैं जो लावो लश्कर चाहिये सुनकर वह बोला मेरा
यह मतलब नहीं बल्कि इस वास्ते कहता हूं कि ग़रीबी हालत से जो पहुंचेंगे तो
किस पर ज़ाहिर है जो हमारी ख़बर करेगा और जो इस ठाट से जावेंगे तो ह

मेरे पहुंचने के पहले ही उसको अहवाल मालूम होगा तुम घबराओगे नहीं मैं
एक हफ़ते में आ पहुंचता हूं उसने कहा मैं अकेले यहां रहूंगा वह बोला क्या
मुज़ाका है क्योंकि यहां कोई ख़तरा नहीं हातम ने कहा सिधारिये हरतरह
ख़ुदा हाफ़िज़ है महरावर वहीं हवा होगया जब हातम के नज़रों से गायब होगया
हातम ने सफेद पर निकाल कर जलाये उनकी राख पानी में घोल कर अपने ब
दन पर मली जैसा था वैसा ही होगया और ख़ुदा की याद में मशगूल हुवा एक
दिन जंगल में सैर को गया था फिरते फिरते क्या देखता है कि एक बाग़ दिखला
ई दिया उसकी तरफ़ चला आगे जाके देखा तो दरवाज़ा उसका खुला है अंदर चला
गया देखा कि दरख़्त मेवेदार तरह बतरह के मेवों से लदे हैं और फूलों के फूल रहे हैं
निहायत ख़ुश हुवा बल्कि रहना वहीं इख़्तयार किया घोड़ा ऐसा वफ़ादार था कि
दिन भर दर्या के किनारे पर चरता फिरता रात के वक़्त उसी बाग़ में आरहता ग़रज़ इ
सी तरह पर एक अठवारा आख़िर हुवा और शाहज़ादा महरावर जो अपने ज
ज़ीरे में पहुंचा परीज़ाद पहचान के पांव पर गिर पड़े तसद्दुक़ हुए शाहज़ादे ने के
तनों को गले लगाया के तनों को तसल्ली दी फिर मा बाप के पास गया आदाब बजा
लाकर क़दमबोस हुवा ओन्होंने छाती से लगाकर अहवाल पूछा कि तू तो ल
श्कर लेकर जज़ीरे बज़रख़ को गया था फिर अपने तईं लश्कर से जुदा कर किस
कोने में जा छिपा कि फ़ौज तुझे ढूंढती ढूंढती तितर बितर होगई एक उमर
ढूंढा किया आख़िर लाचार होकर फिर आई बोले कहदे तेरी मुराद मिली माहया
र की बेटी हाथ लगी शाहज़ादे ने सिर नीचा कर अर्ज़ की कि गुलाम ने जो आ
पका कहना न माना एक मुद्दत परेशानी खींची बसें ओकात रोने पीटने में
काटी सच तो यह है कि अपने तन की भी सुर्त न रही ख़ुदा किसी दुश्मन को भी
यह हालत न पहुंचावे और किसी बंदे को यह दुख न दिखलावे लेकिन न
सीब अच्छा थे कि एक आदमी यमन का रहनेवाला हातम नाम शाहाबा
द से मेरी तलाश में उस मोती के जो मुर्ग़ाबी के अंडे बराबर है आ निकला था फ़ला
ने जंगल में मुझसे मिला जब मैंने अपना अहवाल उससे बयान किया उसने
मुझे क़ौल दिया कि जिस वक़्त वह मोती मेरे हाथ लगेगा माहेयार सुलेमानी
की बेटी तेरे हवाला करूंगा इस बात को सुनकर उसके मा बाप हंस पड़े और
कहने लगे कि अब तक नादानी और हिमाक़त लड़कों की तरह तुझ से न
हीं गई परीज़ाद तो उसके भेद को बयान कर ही नहीं सकते आदमी बेचारे की
क्या इल्म है जो उसका अहवाल ज़ाहिर करेगा और माहेयार सुलेमानी से

ओर हरे बर होगा शाहज़ादे ने फिर अर्ज़ की कि वह ऐसा बेसानु ही है यमन का
बादशाहज़ादा है अक़्ल और हुनर में जिन्न और परी से भी ज़ियादा है एक प
रिंदे को जोड़ने की कैफ़ीयत उस मोती उसे कह दी है चुनांचे जो कुछ माहेयार सुले
मानी की ज़ुबानी मैंने सुना था उसने मेरे साम्हने मुफ़स्सल बयान किया मुझे य
क़ीन हुवा है कि उस मोती का अहवाल वह ठीक ठीक जानता है अब मैं उसको
जज़ीरे बर्ज़ख़ के क़रीब छोड़ आया हूं अजब आदमी है कि ज़ुबान देव परी की
भी जानता है ओन्हों ने पूछा फिर तेरे आने का सबब क्या है उसने अर्ज़ की
इरादा गुलाम का यह है कि लावो लश्कर साथ लेकर मानिंद अपनी सूरत के
शहर में दाख़िल होऊं बादशाह ने सुनते ही कई हज़ार परीज़ाद सवारी के अ
सबाब समेत साथ कर दिये शाहज़ादा उसी घड़ी रवाना हुवा वादे के दिन जा
पहुंचा लश्कर को दर्या के किनारे छोड़ा हातम के मकान पर आया उसको जो
न पाया हैरान हुवा कि क्या उसने वादा ख़िलाफ़ी की जो पहले चला गया इत
ने में हातम के घोड़े को चरते देख कर पहचाना कि वही घोड़ा है फिर परीज़ादों
से कहा जाकर उस बाग़ में उसको ढूंढें वह सब बाग़ में आकर तलाश करने
लगे इतने में किसी परीज़ाद की नज़र जा पड़ी कि एक आदमी दरख़्त के तले
बैठा तमाशा देख रहा है वह उलटे पांव फिरा और यह अहवाल शाहज़ादे से
अर्ज़ किया कि मैं एक आदमी को बैठे देख आया हूं ख़ुदा जाने वही है या औ
र मेहरआवर उठ खड़ा हुवा पांव उठाये वहां चला गया देखता क्या है कि हात
म सिर झुकाये फ़िकर में बैठा है पुकारा ऐ भाई सिर उठा किस सोच में है हात
म ने जो आंख उठाकर देखा तो मेहरआवर है उठकर गले से लिपट गया फिर वे
दोनों बाग़ से बाहर आये हातम ने देखा एक लश्कर बड़ा आलीशान उतरा
हुवा है और एक डेरा बादशाहों के लायक़ खड़ा हुवा है पूछा यह डेरा और ल
श्कर किसका है मेहरआवर ने कहा आप ही का है फिर वह उसका हाथ पकड़क
र डेरे के अंदर ले गया और जड़ाऊ तख़्त पर बैठाला खाना मंगवाया हात
म ने बाद मुद्दत के जो तरह बतरह के खाने देखे बहुत अच्छी तरह से खाया
फिर तवायफ़ों को याद किया नाच होने लगा तमाम रात ऐश और इश
रत से काटी सुबह होते हुए कूच का नक़्क़ारा किया सवार हुए यह ख़बर जज़ी
रे बर्ज़ख़ के बादशाह को पहुंची कि परीज़ादों का लश्कर बेगाना मेरे नज़
दीक आ पहुंचा है पर मतलब उनके आने का मालूम न हो उसने ख़फ़ा
होकर एक सर्दार के साथ कई हज़ार परीज़ाद करके फ़र्माया कि जल्द

जाके उनकी राह बंद करो आगे न आने पावें वह लश्कर समेत बर सरे राह उत
र पड़ा कई दिन के बाद जो वे वहां जा पहुंचे देखा कि लश्कर बड़ा राह रोके हुए पड़ा
है लश्कर है इतने मे ख़बर पहुंची कि माहेयार सुलेमानी ने तुमसे लड़ने को फ़ौज
भेजी है शाहज़ादे ने एक मर्द मांकूल उसके सर्दार के पास भेजा कि हम लड़ने के
इरादे पर नहीं आये हैं बल्कि हमें बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर होने की
आरज़ू है यह सुनकर अहवाल उसने शाहज़ादे मेहरावर को कहला भेजा
कि आप फ़राग़त से डेरा करें बादशाह से बख़ूबी मुलाक़ात होगी औ अपने
बादशाह को इस अहवाल की अर्ज़ी भेजी बादशाह ने पढ़कर फ़र्माया जो
यह इरादा है तो अपने साथ बइज़्ज़त तमाम ले आओ और एक अच्छे
मकान मे उतरवा दो ग़रज़ हातम औ मेहरावर थोड़े मुसाहब और केतने
लोगों के शहर में दाख़िल हुए लश्कर को नज़दीक शहर के नज़दीक कि
सी बाग़ मे उतरने का हुक्म किया फिर माहेयार सुलेमानीने एक अमीर
को मेहरावर के पास भेजा कि अब आप क्यों न तशरीफ़ लायें हैं उसने कहा
शाहज़ादे यमन को आपकी क़दम देखने की निहायत आर्ज़ू थी इसवा
स्ते मैं उसको लेकर आया हूं वह बहुत अच्छा ख़ुशमीज़ाज़ है आप देख
कर निहायत ख़ुश होंगे यह सुनकर बादशाह ने पहले तो मेहमानी भे
जी दूसरे दिन हातम को बुलवाकर एक जड़ाऊ कुर्सी पर बैठलाया मेहर्बा
नी से पूछा कि इस मुल्क में तुम किस इरादे से आये हो और क्योंकर यहां
तक पहुंचे हातम ने कहा ख़ुदा करीम है हरतरह से उसने हमें पहुंचाया फि
र रूपे का अंडा जो हुस्नेबानू ने उस मोंती का नमूना दिया था उसके आगे रख
दिया और कहा मतलब यह है अगर इसके जोड़े का मोंती हज़ूर से इना
यत हो तो निहायत मेहरबानी है माहयार ने कहा दूसरा इसका कहां से मि
लेगा हातम बोला मैने सुना है आपकी सर्कार में है मेहरबानी करके मुझे
दें तो मैं अपनी मुराद को पहुंचूं बादशाह ने फ़र्माया अगर तू मेरी एक श
र्त बजा लावे तो मोंती के साथ अपनी बेटी भी दूं हातम ने सिर नीचा कि
या बाद एक दम के उठाकर अर्ज़ किया मुझको तो मोंती ही दर्कार है शाह
ज़ादी के आप मुख़्तार हैं जिसे चाहें उसे दें बादशाह ने फ़र्माया जिस व
क़्त तू उसकी पैदाइश का अहवाल बयान करेगा मोती और लड़की ते
रे हवाला करूंगा फिर तेरा इख़्तियार है जिसे चाहियो उसे दिजियो हा
तम ने यह सुनकर अर्ज़ की कि मेहरावर शाहज़ादे को बुलवा भेजिये

उसने वहीं बुलवा लिया ओर गले लगाकर ऐक कुर्सी पर बैठलाया तब हा
तमने मजबूर होकर उस मोती के पैदाइश का अहवाल कहना शुरू किया
माहयार सुलेमानी सिर नीचा करके सुनने लगा गरज़ जो कुछ उस परिंदे से
सुना था तमाम औ कमाल कह सुनाया बादशाह उसकी तारीफ़ करके तखत
से उठ खड़ा हुवा और महल में जाकर मोती ले आया फिर हुक्म किया कि बा
दशाहज़ादी को दुलहिन बनावें औ ब्याह की तय्यारी करें हातम मोती
को देखकर निहायत खुश हुवा बाद उसके बहुत से हाथी घोड़े जड़ाऊ साजों
से सजवा मंगवाये और शाहज़ादी को बना चुना के तनी सहेलियां और
बहुत से गुलामों समेत मजलिस में बुलवाया हातम ने जे वहीं उसको देखा
बोल उठा कि यह मेरी बहन है इसको मैं ने शाहज़ादे मेहरावर को दिया यह उ
सी के लायक़ है चाहिये कि तुम भी अपने रस्म के मुवाफ़िक़ इन दोनों की
शादी कर दो और मोती मुझे बख्शो कि मैं हुस्नबानू को दूं माहेयार सुले
मानी ने लड़की को अपने रस्म के मुवाफ़िक़ मेहरावर के साथ ब्याह दिया
आशक़ और माशूक़ अपने मुराद को पहुंचे बाद एक महीने के दोनों शा
हज़ादे शाहज़ादी समेत बादशाह से रुखसत होकर थोड़े दिनों में उसी
दर्या किनारे पर फिर आये हातम ने कहा भाई यहां से तुम अपने मुल्क
को सिधारो मैं अपने शहर को जाता हूं मेहरावर बोला भाई जान यह बा
त मुरव्वत से बहुत दूर है जो ऐसे मकान खतरनाक में तुझे इस वक्त अके
ला छोड़ूं और आप इस धूम धाम से घर की राह लूं इरादा मेरा यह है कि
मैं भी तेरे साथ शामशाह बादशाह तक चलूं उससे मुलाक़ात करूं। फिर अपने
लशकर को फ़र्माया कि ज़नानी सवारियाँ लेकर तुम अपने मुल्क को जा
ओ यह कहकर हातम औ आप औ मुसाहिब औ थोड़ा सा लशकर द
र्याई घोड़ों पर सवार हो थोड़े दिनों में दर्याये कहरमान के पार हुये और ए
क जंगल में उतरे वहां के देवों को खबर पहुंची कि परीज़ादों का लशकर आ
पहुंचा है वह भी मजबूर होकर राह पर आ पड़े मेहरावर ने एक परीज़ाद को
भेजा कि ऐ अज़ीज़ो हम तुम दोनों हज़रत सुलेमान के खानःज़ाद हैं हमा
रा इरादा तुमसे बिगाड़ का नहीं है तुम हमारे मुक़ाबिल क्यों हुए हो हम शम
शाह बादशाह को मुबारकबाद देने को जाते हैं क्योंकि उसने बाद मुद्दत
के खुदा के ग़ज़ब से नजात पाई है औन्होंने कहला भेजा हमें भी तुमसे ल
ड़ने का इरादा नहीं है सिरफ़ मुलाक़ात को आये हैं ग़रज़ उसके सर्दारों को

मुलाक़ात की हातमको एक कोनेमें छिपारक्खा फिर उसको तरह बतरह के खा
ने खिलाकर और शरबते पिलाकर रुख़सत किया और आपभी रवाना हुवा थो
ड़ें दिनोंमें देवोंकी सरहद्द से निकला शमश शाह बादशाहको ख़बर पहुंची
कि हातम और मेहरावर आपकी मुलाक़ात को आते हैं यह सुनकर शमश
शाहभी अपने लश्कर समेत उनके इस्तिक़बाल के लिये चला राहमें मुला
क़ात हुई ख़ुश होहोकर बग़लगीर हुऐ हातमने तमामहक़ीक़त अपनी
और मेहरावर की बयान की शमश बादशाह ने सुनकर मेहरावरकी बहुत
सी ख़ातिरदारीकी और कहा कि यह तुमने बड़ा इहसान मुझपर किया जो
इस जवानको सही और सलामत मुझतक पहुंचाया मैं रात दिन इसके लिये
ग़ममें रहताथा बल्कि ज़िन्दगानी हराम थी शुकर है कि यह जिताजागता
ख़ुदाकी फ़ज़ल और तुमारी बदौलत आमिला फिर शाहज़ादे मेहरावर को
लश्कर समेत एक बाग़में उतारा चालीस रोज़ तक मजलिस ख़ुशी और ऐश
की गरम रक्खी ग़रज़ जितने हक़ मेहमानदारी के थे सो सब बजालाया थरवें दिन
शाहज़ादे मेहरावर ने शमश बादशाह और हातमसे रुख़सत होकर अपने
मुल्ककी राहली बाद उसके बादशाहने हातमसे कहा ऐ यमन के शाहज़ादे तू
ने बहुत राहकी मेहनत सफ़रकी मुसीबत खींचीहै अबभी तेरा मुल्क दूर है ले
किन ख़ातिर जमा रख कि ऐक दममें तुझे तेरे शहरमें पहुंचादेता हूं यह कहकर
कई परीज़ादों से फ़र्माया कि अभी शाहज़ादे हातमको उड़न खटोले पर बै
ठाकर यमन में पहुंचादो हातमने कहा मुझको यमन से कुछ काम नहीं ब
ल्कि शाहाबादको जाना मंज़ूर है यह फ़र्माइये कि वहीं पहुंचादें परीज़ादों ने
वहीं उसको खटोलेपर बिठलाके शाहाबादका रस्ता लिया रात दिन चले गये
जब मांदे होते किसी अच्छी जगह उतरपड़ते थोड़ा दम लेकर फिर उड़ते इसी त
रहसे एक महीने में नज़दीक जापहुंचे हातमने अपनी रसीद लिखकर परीज़ा
दों को दी रुख़सत किया आप शहरमें दाख़िल हुवा लोगोंने हुस्नबानू को
ख़बर पहुंचाई कि वह जवान सही और सलामत आन पहुंचा उसने पर्दा
करके अंदर बुला लिया और एक सोने की कुरसी पर बिठलाया हातमने कुछ
बातनकी बैठतेही जेबसे उसमोती को निकालकर सब लोगों को दिखलाया
फिर उसमें रखलिया और अहवाल सारा बयान किया फिर निकालकर हुस्न
बानूको दिया वह निहायत ख़ुश हुई और हातमके हिम्मत पर आफ़रीं की
फिर हातम उससे रुख़सत हो मेहमान सरामें आया और मुनीर शामी से मिल

अपनी तमाम हकीकत कह सुनाई फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहने लगा कि ऐ भाई खुश हो खातिर जमा रख मुलाकात यार की नज़दीक है एक सवाल रह गया है खुदा के फ़ज़ल से उसको भी पूरा करता हूं मुनीर शामी यह बात सुनकर बेइख़्तियार हो हातम के पांव पर गिर पड़ा उसने उठा कर गले लगा लिया गरज़ दोनों मिले जुले सात रोज़ तक बाहम रहे जब हातम ने देखा मांदगी बदन की बिलकुल जाती रही आठवें दिन पोशाक बदल हुस्न बानू के दर्वाजे पर आया चोपदारों ने खबर की उसने अंदर बुला कर एक कुर्सी पर बिठलाया हातम ने कहा अब सातवां सवाल बयान कीजिये हुस्न बानू बोली हम्माम बादगर्द की खबर ला कि हम्माम को गर्दिश से क्या काम मैंने सुना है कि वह चक्की की तरह फिरती है फिर उसमें लोग क्यों कर नहाते हैं लाज़िम है कि उसका अहवाल और उसकी बुनियाद को तहकीक कर के आवो हातम ने कहा इतनी जानती हो कि वह किधर है हुस्न बानू बोली दक्खन और पच्छम के कोने में। पर उसकी पैदाइश नहीं मालूम और यह भी नहीं जानती कि किस पर्दे में है यह बात सुनकर हातम हुस्न बानू से रुखसत हुवा और कारवानेसरा में आया मुनीर शामी की बहुत सी तसल्ली औ दिलदारी की और कहा अब का सफ़र कर आऊं तो तेरी माशूका से तुझको मिलाऊं अपने कौल से सच्चा होऊं यह कहकर के मुनीर शामी से रुखसत हुवा

सातवां सवाल हम्माम बादगर्द की खबर लाने औ मुनीर शामी औ हुस्नबानू के ब्याहे जाने औ हातम के अपने घर आने के अहवाल

जब हातम शहर से निकला औ जंगल की राह ली थोड़े दिनों के बाद एक शहर के नज़दीक जा पहुंचा तो क्या देखता है कि एक कूऐ के गिर्द बहुत से मर्द और रतें इकट्ठे हैं पूछा उसने कि ऐसा हजूम और ऐसी धूम क्यों कर क्यों है किसी ने कहा ऐ अज़ीज़ यहां के हाकिम का बेटा इस कूऐ पर दिवाना होकर बैठ रहा था आज तीसरा दिन है कि उसने अपने तईं इसी में गिरा दिया हर चंद हम इस में कांटे और रस्सियां डाल डाल कर ढूंढते हैं पर लाश उसकी नहीं मिलती मालूम नहीं कि इसमें क्या बला थी जो उसे पाताल में ले गई या पानी ही में पड़ा हो पर अपने हाथ नहीं लगता। कोई अपने जान के खतरे से उतरता भी नहीं कहीं ऐसा न हो इसके बीच अज़दहा हो औ निगल जाय येही बातें हो रही थीं कि उसके

मा बाप कपड़े फाड़ते सिर में खाक डालते वहां आ पहुंचे और कूंऐ पर बैठ
के ऐसे दर्द से रोए कि परिन्दे हवा के भी फ़र्याद करने लगे बल्कि पत्थरों के
चे के भी पानी होगये यह हालत देख कर हातम का भी दिल भर आया फि
र दिलासा देने लगा कि खुदा के मर्ज़ी से कुछ चारा नहीं जो उसकी मर्ज़ी।
वे बोले कि ऐ जवान तू सब कहता है लेकिन जो उसकी लाश भी हाथ आवे तो गाड़ कर उ
सकी क़बर ही से अपने दिले बेताब को थोड़ी बहुत तसल्ली दें और सबर करें क्योंकि मुऐ
हुऐ की इतनी हीं निशानी बहुत है चुनांचि हर ऐक की मिन्नत करते हैं बल्कि हजारों रु
पये भी देने को मौजूद हैं लेकिन कोई हमारे हालत बाह पर रहम नहीं कर्ता और नहीं
उतरता आज यह इरादा है कि आपने तईं इस कूंऐ में डालें और उसकी लाश तलाश
करके निकालें दूसरे को क्या परवाह है जो बीराने वास्ते अपनी जान खोवे यह सुनकर
हातम बोला कि तुम खातिर जमा रक्खो मैं अपने सिर को खुदा की राह में हथेली पर
धरे फिरता हूं ये ही आरजू है कि मेरी जान किसी के काम आवे कूंऐ में जाकर तुमा
रे बेटे की लाश ढूंढ लाता हूं तुम मेरे आने तक यहीं मुन्तज़िर रहो यो उन्होंने कहा
ऐ जवान जाने की तो ज़िकर है अपना घर हम येहीं करेंगे हातम बोला एक महीने त
क मेरी राह देखना आया तो बेहतर नहीं तो अपने काम काज मे मशगूल हूजियो
इतनी बात कह कूंऐं में कूद पड़ा गई गोते खाये निदान पावं तह को जा लगे आंखें
खोल दीं न कूंआ हीं नज़र आया न पानी हीं मगर एक मैदान देखाई दिया आगे च
ला एक बाग़ दर्वाजे खुला हुवा नज़र पड़ा बे खटके उसके अंदर गया वहां हर हर
किसम के फूल फूले हुये देखे और दरख्तें खूबसूरत मेवे से लद हुऐ और वह
बाग़ खुशबुयों से ऐसा महक रहा था कि उसका भी दिमाग़ मुअत्तर हो गया ॥ जी
में आया कि ऐसी खुशबू कि न फूलों की है इसपहचानने के लिये हर एक तख
ते की तरफ आता जाता था कि एक जमैअत परियों की किसी जगह बैठी हुई देख
लाई दी और एक तख्त जड़ाऊ पर एक जवान खूबसूरत भी बैठा नज़र आया व
ऐक परी भी निहायत क़बूल सूरत उसके पास बैठी नज़र आई तब हातम थोड़ी
दूर बढ़कर किसी घने दरख्त में छिप रहा औ तमाशा देखने लगा इतने में न
ज़र परियों की उसपर जा पड़ी एकबारगी चीखें मारने लगीं कि है है यह आद
मज़ाद नामहरम कहां से आया फिर जाकर अपने सर्दार से अर्ज़ की कि एक
शख्स आदमी के कौम से दरख्तों में छिपा हुवा खड़ा है यह सुन्ते ही परी ने उ
स जवान से कहा कि तुमारा भाई बंधु और भी एक यहां आ पहुंचा अगर क

हो तो तुम्हारे पास ले आवें वह बोला बहुत बेहतर उस परी ने अपने दो एक मुसा
हबों से कहा कि तुम जा के उसको अच्छी तरह से ले आवो वे जाकर उसे ले आईं
जब नजदीक तख़्त के पहुंचा परी और वह जवान उठ खड़े हुये उसे अपने पा
स बैठा लिया औ अहवाल पूछने लगे कि तुम कौन हो क्या नाम है कहां से आ
ये हो हातम बोला यमन का रहने वाला हूं शाहाबाद से आता हूं हम्माम बाद
गर्द को जाता हूं इत्तिफ़ाक़ इस कूयें गहरे पर आ निकला था कि वहां बहुत से
लोगों को रोते पीटते देखा और ऐ जवान तेरे मा बाप की हालत निहायत तंग
देखकर मेरे आंखों में आंसू भर आये बेइख़्तियार उनके पास जाकर पूछा
कि तुम इस तरह क्यों बिलबिला रहे हो जो देखने वालों की छातियां फटी जाती
हैं वे एक आह भरकर बोले कि इस कूयें में हमारा यूसुफ़ जैसा बेटा गिरके गुम
हो गया है इसलिये हमारे जी डूबे जाते हैं कोई ऐसा नहीं जो खुदा के वास्ते इस कूं
ऐं में जाकर उसकी लाश लावे जब मैंने यह बात सुनी बेइख़्तियार अपने तईं इ
स कूऐं में गिरा दिया यहां तक आ पहुंचा अब मैं नहीं जानता कि उनका बेटा
तू है या और कोई जो याक़ूब के मानन्द अपने बीबी समेत मानन्द ज़लेखा के कि जि
स्के एक जलेबे पर बेटा मों बिक गया होय॥ यह सुनकर उस जवान ने कहा ऐ
भाई मैं उसी का बेटा हूं एक दिन का ज़िकर है इत्तिफ़ाक़न उस कूऐं पर आ निक
ला कि यह परी नज़र पड़ गई वहीं उसकी चाह में दीवाना हो गया और वहीं बैठ ग
या और यह भी बिजली की तरह हर रोज़ अपनी झलक दिखाकर चली आती
थी लेकिन मुझे इतनी देखाभाली से तसल्ली नहीं होती थी आखिर उसकी
ज़ंजीर मुहब्बत ने खैंचकर मेरे तईं इस कूऐं में गिरा दिया फिर सुबह के हवा के
मानन्द इस गुले खूबी को ढूंढता ढूंढता गिरता पड़ता इस बाग़ में आ पहुंचा
वो इसने मेरी बेक़रारी देखकर निहायत मेहरबानी फ़र्माई और बखूबी मु
लाक़ात करी अब बा आराम गुज़रती है हर एक रात (आराम व अशरत में
करती है हातम ने कहा अफ़सोस है तू यहां रंगरलियां मचा रहा है और
वहां तेरे मा बाप का अहवाल तबाह हो रहा है यह क्या इंसाफ़ है वह बोला अ
ब मैं इसके इख़्तियार में हूं यह रुख़सत दे तो जाऊं उनकी तसल्ली कर आऊं हा
तम ने कहा तू थोड़ा सबर कर मैं तेरा अहवाल अभी अर्ज़ करता हूं यह कह
कर परी की तरफ़ मुतवज्जः होकर कहने लगा कि ऐ सरापा नाज़ बेदिलों की
दमसाज़ एहसान और मेहरबानी से दूर है कि इसके मा बाप जुदाई के आग

से जलें और यह यहां खुशी मनावे बेहतर है कि इस जवान को दो तीन दिन
की रुखसत दिजो यह जाकर उस्के छातीसे लगे और आत्मा उन्की ठंढी
करे वह मुसकुराकर बोली कि यहां किसने इसे मना किया है अभी चला जा
य यह आपही यहां आया है मैंने थोड़ा ही इसे बुलाया है इख्तियार इस्का
है जहां चाहे वहां जाय यह सुनकर हातम ने कहा उठ खड़ा हो परीने पर
वानगी दी वह बोला यह परवानगी नहीं बल्कि ताना है रजामंदी यह है
कि मुझसे यह कौल करे कि तूं खातिर जमा रख और अपने घर जा मैं हर
एक हफ्ते में दो तीन बार रात के वक्त तेरे पास आऊंगी और तुझे अपने दिल
से न भुलाऊंगी यह बात सुनके हातम ने सिर नीचा कर लिया बाद एक द
म के परी से फिर कहा खुदा के वास्ते तूं इसपर मेहरबान हो और जो कहता
है सो मानले परी ने त्योरी चढ़ाकर बोली यह चाल हमारे कौम की नहीं जो मैं क
रूं यह फीके चोंचले मुझे नहीं भाते इतनी गर्मी न कीजिये हातम ने कहा अग
र माशूक अब इस गिरफ्तार के हाल पर दुक एक रहम खावे तो मैं कुछ
अर्ज करूं क्योंकि मैंने फलाने फलाने परी की परियों से सुना और मुलाकात
की है और उनकी मेहरबानी और इहसान आशकों के अहवाल पर ऐसी
ज्यादा देखे हैं तुम कहती हो कि हमारे कौम में यह चाल नहीं मैं क्योंकर मा
नूं बल्कि आदमी बेवफा हैं अपनी दोस्ती में वफादार और फर्माबरदार हैं
यह सुनकर उसने मुंह फेर लिया और कहा यह झूठा लपादिया है मुझे जीसे
नहीं चाहता यह तेरी बनावट है जवान बोला जो तुम फर्माती हो सच है इस
समझ के सदके जाइये मैंने घर बार अपना तुमारी खातिर छोड़ा जान से हा
थ धोकर अपने तई इस कूयें में गिराया क्या क्या न सदी उठाकर यहां तक
पहुंचाया तिसपर भी मैं चाहनेवाला न ठहरा ॥ ॥ ॥

॥ बैत ॥

हुई तुमन वाकिफ मेरे हालसे ॥ मैं सदके रहा जान औ मालसे ॥ यह सुनकर प
री बोली ऐसी बातें बहुत सुनी हैं क्या वाही बकरहा है मैं जब जानूं कि मुझे
चाहता है जो कुछ कहूं सो करे वह बेचारा उसी वक्त उठ खड़ा हुवा कि देर क्यों
करती हो जो मंजूर है जल्द फर्मा वो उसने अपने लोगों से कहा कि एक क
ड़ाह में घी भरके चूल्हे पर चढ़ादो जब उसमें घी कड़कड़ावे मुझे खबर करो
उन्होंने वहीं किया जिस वक्त घी खौलने लगा उस वक्त जवान का हाथ पक

उठकर कहा क्यों जी तुम हमें चाहते हो तो इसमें कूद पड़ो जवान ख़ुशी ख़ुशी कुआ
ह की तरफ़ चला चाहता था कि अपनी तईं उसमें गिरा दे कि परी दीवानों की त
रह दौड़ पड़ी और बेतहाशा उसके गले से लिपट गई कि तूं आशक़ सच है मुझ
को यकीन हुवा अब जो कहे सो करूं मुझे सब क़बूल है औ हुक्म किया कि म
जलिस ख़ुशी की तैयार हो उसके फ़र्माने हीं की देर थी सब मौजूद हो गया
नाच राग होने लगा ग़रज़ इसी तरह ऐश औ अशरत औ मेहमानदारी में
एक महीना गुज़र गया और वहां कूऐं के उपर जो लोग बैठे थे दिन गिन रहे थे
औ अपने जी में कह रहे थे कि अगर आज भी वह जवान न निकला तो आप
ने अपने घर चले जायगे निदान ३१ वें दिन हातम ने उठकर उस जवान से कहा
मुझे काम ज़रूर है अब नहीं रह सकता जो तुमने वादा किया है उसको पूरा करो
परी बोल उठी बहुत बेहतर हातम ने कहा तुम क़रार पक्का करो हज़रत सुलेमा
न को दर्मियान दो तब मुझे ऐतबार हो परी ने क़सम खाकर कहा मैं इस कौल से ह
रगिज़ न फिरूंगी तुम ख़ातिर जमा रखो फिर अपने परियों से कहा तुम इन दो
नो जवानों को कूऐं पर पहुंचा आवो ओन्होंने ऐक ही उछाल में उन दोनों को
कूऐं पर बिठला दिया सब लोग देखकर अचम्भे में आगये और उसके मा बा
प दौड़कर हातम के क़दमों पर गिर पड़े ख़ुशी ख़ुशी अपने शहर में दाख़िल
हुऐ हातम की निहायत तकल्लुफ़ से ज़्याफ़त की नाच राग रंग शुरू हो गया
घर घर शादियाने बजने लगे १४ दिन तक हातम को मेहमान रक्खा और परी
भी अपने वादे पर आने जाने लगी निदान १५ वें दिन हातम वहां से रुख़सत
हुवा औ जंगल का रस्ता लिया बाद ऐक मुद्दत के ऐक बस्ती नज़र पड़ी शहर
के बाहर ऐक बुड्ढा खड़ा था हातम पर जो उसकी नज़र पड़ी देखते ही सलाम
किया और कहा ऐ जवान अच्छी तरह से आया उसने भी जवाब सलाम का
देकर ख़ैरआफ़ियत पूछी बाद उसके उसने कहा ऐ मुसाफ़िर आज की रात मे
रे घर में क़दम रंजः फ़र्माइये और आज नमक के शरीक हूजिये तो निहायत
मेहरबानी है हातम ने कहा नेकी का क्या पूछना निदान वह पीर मर्द उसको
अपने घर ले आया ज़्याफ़त बहुत अच्छी तरह से की बाद खाने के बूढ़े ने
पूछा ऐ जवान तेरा क्या नाम है और कहां जायगा उसने कहा हातम नाम
है यमन का रहने वाला हूं हम्माम बादगर्द की ख़बर को जाऊंगा सुनते
ही उसने सिर नीचा कर लिया बाद ऐक साअ़त के सिर उठाकर कहा कि ऐ

अज़ीज़ वह कौन तेरा दुश्मन था जिसने तुझे ऐसी जगह भेजा पहले तो यह है कि
उस्का निशान मालूम नहीं दूसरे जो कोई वहां गया सो गया फिर न फिरा और जो को
ई वहां गया और जाने का क़स्द करे अपने जान से हाथ धोवे ख़ुदा जीते जी किसी को
न ले जावे क्योंकि उस्का रस्ता पहिले मंज़िल से कम नहीं और सुन्ते हैं हारिस कत्तान
शहर कत्तान के बादशाह उस्की सरहद में चौकी बैठाई है कि जो कोई उस हम्माम
की ख़ाहिश करके आवे पहले उसे मेरे पास ले आओ मालूम नहीं उस्के बुलाने की
वजह अपने रूबरू क्या है मार डालता है या उस्को छोड़ देता है यह सुन कर हातम ने
कहा कि हुस्नबानू सौदागर बच्ची पर मुनीर शामी शाहज़ादा आशिक़ हुवा है अ
पना घरबार बरबाद करके उस्के शहर में कारवानेसराय के बीच बैठ रहा है मैंने उस्के
वास्ते यह रंज औ मेहनत अपने ऊपर उठाई है कई बरस से उस्के काम में ख़ुदा की
राह पर फिरता हूँ और उस सौदागर बच्ची को ६ सवाल ख़ुदा के फ़ज़ल से पूरे कर
चुका हूं अब सातवां सवाल हम्माम बादगर्द की ख़बर है सो लेने जाता हूँ देखूं
क़िस्मत क्या दिखावे पीरमर्द बोला शाबाश तुझ पर और तेरे मा बाप पर जो बे
गाने वास्ते अपनी ऐश औ इशरत को छोड़कर मेहनत इख़्तियार की मुसीब
त सही। लेकिन सलाह यह है इस ख़याल मुश्किल को दिल से दूर कर यहीं से फि
र जा उस्से कहा कि वह तिलस्मात है कोई उसे नहीं जानता और उस्की बुनियाद
नहीं मिलती यह बात सुनकर हातम बोला झूठ किस तरह से बोलूं बात क्योंं
कर बनाऊं यह इन्साफ़ नहीं कि वह आशिक़ बेचारा बहुत मुद्दत से दर्द इन्ति
ज़ार के सबब जां बलब है फ़क़त मुलाक़ात की उम्मेद पर दम उस्का ठहर र
हा है क़रीब है कि शर्बते वसाल अपने माशूक़ के हाथ से पिये और अपनी
हयात को ताज़ा करे अफ़सोस है कि इस वक़्त मैं बहाने ढूंढूं और उस्के काम से
मुंह फेर लूं फिर ख़ुदा को क्या जवाब दूंगा क्योंकि जो कोई ख़ुदा के वास्ते कम
र बांधता है झूठ नहीं बोलता और जिन्होंने ख़ुदा के राह में अपना घरबार छो
ड़ा है वे बिना मिले मतलब नहीं फिरे उस जहांदीदः ने कहा ऐ जवान अप
नी जवानी पर रहम कर हरगिज़ उस तरफ़ मत जा क्योंकि वहां का जाना ज
हान से जाना है अगर मेरा कहना न मानेगा तो परेशान होगा जैसे मेंड़क ने
अपनी क़ौम का कहना न माना शर्मिन्दगी खींची हातम ने पूछा उस्की
हक़ीक़त क्योंकर है बूढा कहने लगा कि शाम की तरफ़ एक दर्या था उस्में

बहुतसे मेंडक रहते थे ऐक दिन उनमें से किसी मेंडक ने अपनी कौम से कहा ॥
जी यों चाहता है कि यहां से सफ़र करें किसी और दर्या में जाकर रहें क्योंकि
मुसाफ़रत में फ़ायदे बहुत हैं मुफ़लिस मालदार हो जाते हैं हासिल यह है कि ख़ुदा की दौ
लत नहीं हासिल हुई बेहुनर हाथ पांव हीलाये नहीं आती यह सुनकर उसकी
कौम ने कहा ऐ नादान यह ख़याल बातिल तेरे दिल पर आया है ऐसे इरादे कर हरगिज़ आ
राम न पावेगा मुफ़्त में रंज उठावेगा आख़िर अपने किये पर पछतावेगा उसने न माना
अपने भाई बंद और फ़र्ज़न्द समेत वहां से निकल कर ऐक और दर्या की तरफ़ चला ह
रचन्द आबी जानवरों को ख़ुश्की में चलना बहुत मुश्किल है तिसपर वह उछलता
कूदता ख़ुशी वा ख़ुशी चला जाता था क़ज़ाकार राह में एक तालाब मिल गया उसमें एक
सांप था कि उसने वहां के मेंडक सब खा लिये थे चंद रोज़ से गिज़ा जो न पाई थी भूख
से झुंझला रहा था देखते ही बेइख़्तियार उन पर लपका ऐक ऐक को चुनकर खाया ॥
ज्यों त्यों वह मेंडक आप दर्या के क़दीम में आ पड़ा लेकिन जोरू लड़के बर्बाद गये
उसकी कौम यह हालत देखकर यों ताने देने लगे ऐ नादान यह क्या किया तैने मुफ़
त में अपना घर उजाड़ दिया बारे अहवाल कह कि तुझ पर क्या गुज़री वह बेचारा
बालबच्चों के ग़म का मारा सिर झुकाये और अपने किये पर शरमिंदगी खींचे चुपका
बैठा सबकी बातें सुनता था जितनी वे लानत मलामत करते थे वह दम न मारता था
जवाब देना तो दरकिनार ग़रज़ जो कोई अपने बुज़ुर्गों का कहना नहीं करता उ
सका यही हाल होता है पस ऐ जवान मेरा कहा मान यहीं से फिर जा गर्मी न कर
क्योंकि हम्माम बादगर्द में कोई नहीं पहुंचा तेरा क्यों सिर फिरा है अपना इलाज कर
इन बातों को सुनकर हातम ने जवाब दिया ऐ बुज़ुर्ग जो तू कहता है मेरे ही बेहतरी है
लेकिन जो बात ख़ुदा के वास्ते हो उससे मुंह फेरना ख़ूब नहीं ख़ुदा की मदद से उम्मेद
वार हूं की उस जवान की मुराद मेरे हाथ से बर आवे ख़ुदा के वास्ते जो तू जानता है तो
शहर कत्तान की राह मुझे दिखला दे जो अपनी राह लगूं उस मर्द पुराने ने जो देखा
कि इसका इरादा कामिल है साथ हो लिया और शहर के बाहर जाकर कहा ऐ
मुसाफ़िर दाहिनी तरफ़ का रस्ता यहां से इख़्तियार कर आगे बहुत से शहर
क़सबे मिलेंगे उनके बाद एक पहाड़ नज़र आवेगा उसके नीचे हज़ारों आफ़तें ब
लायें हैं अगर उन से बच निकलेगा तो एक बड़ा जंगल मिलेगा वहां ख़ुदा की कु
दरत नज़र आवेगी थोड़ी दूर जाकर दुराहा मिलेगा बाईं तरफ़ को जाइयो किंव

राह साफ़ है औ सुथरी है शहर कत्तान में पहुंचेगा अगरचे दाहनी तरफ़ की
राह नज़दीक है पर ख़तरे उसमें बहुत हैं हातम बोला ज़िन्दगी बिन कोई जी नहीं
सकता और बे अजल मर नहीं जाता फिर नज़दीक का रस्ता छोड़ कर राह दूर (
क्यों इख़्तियार करूं बुड्ढा ने कहा नहीं सुना है तूने कि बुज़र्गों ने कहा है ॥ बैत ॥

॥ शेअर ॥

चल राह रास्त सो चन हर चन्द दूर है ॥ जोरू न कर तू बेवः अगरचे वह हूर है ॥

गो कि मक़्तूल नहीं है बिन मौत लेकिन तू मुंह में अज़दहे के न जा देख अगर मे
रे कहने पर अमल न करेगा ख़राब होगा ग़रज़ हातम उसको रुख़सत करके आ
परवाना हुवा बाद चन्द रोज़ के एक शहर नज़र आया औ नक़्क़ारों की आवा
ज़ बकसरत सुनी जी में कहने लगा आज इस शहर में क्या किसी के यहां शादी
है कि बहुत से लोग जमा हैं शहर के बाहर बादशाही डेरे खड़े हैं और तंबू कना
तें बहुत से फ़र्श पाकीज़ा सुथरे साफ़ हर एक तरफ़ बिछे हैं जा बजा लोग बैठे
हैं हर एक डेरे के नज़दीक नक़्क़ारे बज रहे हैं मजलिसों में नाच राग हो रहे हैं चू
ल्हों पर देगें खटक रही हैं खाने पक रहे हैं यह कैफ़ियत देखकर पूछने लगा ऐ या
रो सच कहो आज इस शहर में क्या शादी है वे बोले इस शहर की रसम है कि बरस
वें दिन हर एक अमीर व ग़रीब बल्कि बादशाह वज़ीर भी अपनी अपनी लड़
कियों को जो जवान हैं दुलहिन बना के अतर और अरगजे में बसा खीमों में बिठ
ला देते हैं फिर एक बड़ा सांप जंगल की तरफ़ से आता है और एक जवान की
शकल बनकर हर एक डेरों में जाकर उनको देखता फिरता है जो पसंद आती
है उसे ले जाता है हमने उसके दहशत से बेहाई का बुर्क़ा मुहं पर डाल के लाचा
र यह शादी मचाई है देखिये किसकी लड़की पसंद करे औ ले जाय पर हर एक
को यही धड़का है आज नक़्क़ारे बजते देखता है कल छातियां पीटते देखियो
एक दिन की शादी औ सात दिन का ग़म हमको हर साल है बेबस हैं क्या करें ॥
शाम के वक़्त मुक़र्रर वह आवेगा किसी के न किसी के सिर आफ़त लावेगा यह ह
क़ीक़त सुनकर हातम ने अपने जी में कहा कि यह काम जिनका है वह सांप नहीं
फिर उन लोगों से कहा ऐ अज़ीज़ो यह बड़ी बला तुम पर पड़ी है ओन्हों ने कहा
फिर क्या करें इसमें कुछ अपना चारा नहीं ख़ुदा चाहे सो करे ऐसा हम किसू को
नहीं देखते जो ख़ुदा के वास्ते इस आफ़त को हमारे सिर से टाले हातम ने कहा ।

खुदा चाहता है तो इस आफ़त को मैं आज की रात तुमारे सिर से दफ़अ कर्ता
हूं तुम मर्दों की मानिन्द रहो अपने जी में अंदेशा न करो उन्हों ने यह ज़िकर
जा के अपने सर्दारों से किया वे सुनते ही हांथों हाथ उसको बादशाह के पास लेग
ये और हक़ीक़त बयान किया तब बादशाह ने उसे एक कुर्सी पर बिठाकर क
हा ऐ जवान तुझे कुछ मालूम है कि यह क्या आफ़त है हातम ने कहा मैं खूब
जानता हूं वह जिन है जब उनकी वह कौम फ़साद किया चाहती है तब वे मर्दु
म आज़ारी इख़्तियार करते हैं बादशाह बोला ऐ जवां मामर्द अगर यह जि
न तेरे हाथ से मारा जाय या हमारे शहर से दूर हो तो मैं सिपाह और रैयत
समेत तेरी ताबेदारी करूं बल्कि जब तक जीऊं इहसानमंद रहूं हातम ने क
हा मैं जो काम कर्ता हूं और जो क़दम आगे बढ़ाता हूं अपने मौला के राह में
धरता हूं अगर यह भी सब काम करूंगा तो किसी पर इहसान नहीं पर जो
कुछ मैं तुम से कहूं क़बूल करो शाह ने फ़र्माया सिर औ आंखों से फिर हात
म ने कहा जिस वक़्त वह आवे और जिसकी लड़की पसंद करै औ ले चले उस
वक़्त वह उससे कहे कि साहेब तुम ले जाने में मुख़्तार हो पर इतनी बात हमा
री भी सुनो कि हमारा एक बड़ा सर्दार ज़ादा बाद मुद्दत के आज आया है अ
ब हम सब के सब उसके ताबेदार हैं वे कहै उसके इस लड़की को तुम्हारे साथ न
हीं कर सकते अगर तुम्हारे हवाले करें तो बड़ी भूल है क्योंकि तुम गुस्से हो
गे तो एक बरस मे हमारे मुल्क को ख़राब करोगे और जो यह ख़फ़ा होगा तो ऐ
क पल में ख़ाक स्याह कर देगा बल्कि स्सः बादशाह ने तमाम दिन हातम को
अपने पास बैठा रक्खा जब शाम हुई सांप के आने का ग़ुल हुवा लोगों ने हा
तम से कहा ऐ जवान वह मूज़ी आ पहुंचा उसने सुनते ही बादशाह से अर्ज़
की कि टुक ऐसे क मैं भी उसे देखूं फिर उठ खड़ा हुवा खेमे के बाहर निकला तो दे
खता क्या है कि एक अज़दहा आसमान से सिर लगाये हुए चला आता है उ
सके चौड़ाई का ठिकाना नहीं देव भी उसका साम्हना नहीं कर सके आदमी को
तो क्या मक़दूर जो आंख उठाकर देखे जो पत्थर औ दरख़्त उसकी छाती
के तले आता है सो पिसकर सुरमा हो जाता है ॥ हातम ने जो उसको इस श
कल से आते देखा कहा इलाही पनाह तेरी तूं ही इससे नजात देगा निदान व
ह सांप नज़दीक आया और अपनी दुम ऐसी सख़्त करके हिलाई कि

कि आदमी सब के सब सिर झुकाये ज़मीन पर गिर पड़े फिर वह चारों तरफ़ निगाह करके
ज़मीन पर लोट के एक खूब सूरत आदमी बन गया तब सभों ने उठ कर अदब से सलाम
किया और बादशाह उसके आगे आकर अपने खेमे में ले आया एक तख़्त जड़ाऊ पर
बिठलाया वह एकदम बैठ कर उठा और कहने लगा अपनी अपनी लड़कियाँ मुझे दिखला
लाओ बादशाह ने कहा बहुत बेहतर देखिये तब उसने अपने खेमों से निकाल कर
सब सर्दारों और सौदागरों व्यापारियों की लड़कियाँ दिखलाईं पर उसने किसी को पसं
द न किया उलटा फिर बादशाह के खेमे में आया जहां शाहज़ादी बैठी थी वहां
गया और उसको पसंद करके बादशाह से सवाल किया कि मुझे इसी की ख़्वाहिश
है मेरे हवाले करो इस बात को सुनकर बादशाह ने कहा कि एक बड़ा बुज़ुर्ग
ज़ादा कितने दिनों से निकल गया था अब आया है वे हक़्क़ उसके कुछ काम नहीं
कर सकते क्योंकि वह ख़फ़ा होकर एक आन में सत्यानास कर देगा सलाह यह
है कि आप उसको बुलावें वह जो कुछ कहेगा सो हम करेंगे उसने सिर झुका क
र कहा अब तक वह कहां था आज क्योंकर आया अच्छा बुलावो यह तो व
हां कनात के पीछे लग ही रहा था बुलाते ही उसके रूबरू आ खड़ा हुवा जिन ने
पूछा ऐ जवान मैं एक मुद्दत से इस शहर में आता जाता हूं पर तू कभी मेरे नज़र
नहीं पड़ा अब कहां से आ गया सच बतला तू कौन है और किस वास्ते हमारे ता
बेदारों को गुमराह करके इस मुल्क को ख़राब करवाया चाहता है हातम ने कहा
जब तक मैं इस शहर में न था तब तक इन्हों ने तेरा कहा की अब इस मुल्क का
मालिक मैं आया हूं और कारबार यहां का मुझसे इलाक़ा रखता है जो कोई हमारे
बाप दादा की रसमें बजा लाता है बेटी उसी को देते हैं जिन ने पूछा वे क्या हैं बयान कर
हातम ने कहा मेरे पास एक मुहरा है पहले तो उसको घिसकर पिलाता हूं वह बोला
और रसम है तो ले आ मैं पीऊंगा हातम वह मोहरा जो रीछ की बेटी ने दिया था अ
पने जेब से निकाल कर थोड़े से पानी में रगड़ कर उसको हवाले किया जिन न जानता
था कि उसके हक़ में उसका पीना ज़ुल्म है मारे गरूर के बे खबर के पी गया पीते ही त
माम इल्म जिन्नी भूल गया उस पर भी ढिठाई से कहने लगा कि अब कोई और र
सम बाक़ी हो तो उसको भी करने को हाज़िर हूं हातम बोला दूसरी रसम यह है कि एक
गोल में तुम उतरो हम उसका मुंह बांध दें फिर उसके बाहर निकल आवो तब हम खु
शी से इस लड़की को तुम्हारे हवाले करें और जो उसमें से न निकलो तो हज़ार लात औ

ई दो हज़ार हीरे और एक मोती मुर्गाबी के अंडे के बराबर जो परियों के मुल्क में है
मुनहसर थी लें वह ना दान अपने ज़ोर के भरोसे पर फूला हुवा था बेइख्तियार कह
बैठा जल्द लाओ वह मरका कहां है हातम ने एक बड़ी सी गोल मंगवा कर उसके आ
गे धर दिया वहीं वह उसमें उतर पड़ा हातम ने उसके मुंह पर ढकना ढांक मज़बूत बां
ध दिया आज़म पढ़ना शुरू किया और उससे कहा कि अब बाहर निकल उस इसम की ब
रकत से ढकना पहाड़ सा भारी हो गया कितना हीं उसने ज़ोर किया पर निकल न सका
तब तो हातम ने लोगों से कहा अब इसके इस पास उस पास लकड़ियां रखकर आग
भड़का दो उन्होंने वहीं उसके कहने पर अमल किया जिन मैं जला मैं जला पुका
रने लगा पर किसी ने उसकी फ़र्याद न सुनी आख़िर जल कर भस्म हो गया फिर हा
तम ने उन सब लोगों से कहा अब थोड़ी सी ज़मीन खुदवा कर इसको गड़वा कर
अपने घरों में जाकर चैन करो खुदा ने इस बला को तुमारे सिर से दूर किया नहीं तो
क्या जानें तुमारा क्या हवाल होता और वह मूज़ी क्या सलूक करता बादशाह ने यह
हालत देखकर हातम की बहुत तारीफ़ें कीं शहर के रहने वाले सब के सब पावँ पर
गिर पड़े फिर बादशाह ने बहुत सी अशर्फ़ियां और रुपये के तने की किश्तियां लि
बास और जवाहिरात की मंगवाकर उसके हज़ूर रक्खीं उसने कहा मुझे यह कु
छ भी दर्कार नहीं खुदा ने सब कुछ दिया है अगर मंज़ूर है तो फ़क़ीरों को हवाले
करो जो खुदा की खुशी होवे और तुम्हें सवाब होवे क्योंकि जो शख़्स खुदा की
राह में सिर देता है सो मज़दूरी नहीं लेता बादशाह ने उसी घड़ी फ़क़ीरों ग़रीबों
मुहताजों को बुलवाकर उस माल को बटवा दिया हातम को तीन रोज़ तक
मेहमान रक्खा चौथे रोज़ वह रुख़सत होके आगे बढ़ा बाद कितने दिनों के क
ई मुल्क गावँ देखता भालता उस पहाड़ के नीचे जा पहुंचा जिसका ज़िकर उस
बुड्ढे ने किया था हुक्म एक रस्ता कर उसके ऊपर चढ़ा जब उससे गुज़र गया तब
एक बड़ा सा जंगल दिखलाई दिया उसमें तरह बतरह के मेवे लगे थे और खुदा की
कुदरत नज़र आती थी ग़रज़ मेवे खाता हुवा कई रोज़ तक चला गया जब
उससे निकला एक दूसरा नज़र पड़ा वहां खड़ा होकर अपने जी में सोचने ल
गा कि उस बुड्ढे ने कहा था दाहिनी तरफ़ की राह में बहुत सी आफ़तें हैं अ-
तूं उधर से मत जाना इस वक़्त उसके कहने पर अमल किया चाहिये और बां
ईं तरफ़ का रस्ता लिजिये इस ख़याल पर बाईं तरफ़ रवाना हुवा थोड़ी दूर जा

कर उसने यों समझा कि इस राह से जाना कुछ हासिल नहीं बेहतर यह है कि दाह
नी तरफ़ चलूं ख़ुदा मदद करेगा तो कोई बला मेरे साह्मने न आसकेगी व अगर
आ जायगी तो उसकी मदद से रोक लूंगा रस्ता मुसाफ़िरों का साफ़ हो जायगा और
जो मारा जाऊंगा तो भी दाख़िले सवाब ही का होऊंगा यह बात ठहराकर रस्ते
से फिरा औ दाहिनी तरफ़ चला कि एक जंगल बबुर का कांटों से भरा दिखलाई दि
या यह उसमें पहुंचा और क़दम उठाये व लहज़ा रफ़्तार बी थोड़ी सी राह तै की आ
ख़िर दरख़्तों के कांटे से कपड़े टुकड़े टुकड़े हुए बदन लहू लुहान हुवा और ज़मीन
के कांटे से तलवे छिद गये पांव सुज उठे तब बेदम होकर कहने लगा कि वह बुज़ुर्ग
सच कहता था मुझ कमबख़्त ने उसका कहना न माना अपनी ताईं आप मुसीब
त में डाला अंदेशा यह है कि इसके आगे ऐसा न हो और कोई जंगल ख़राब हो तो
वहां पनाह की सूरत क्योंकर होगी ग़रज़ हज़ारों मुश्किलों से वह के तने दिनों के
बाद उस जंगल से निकला और आगे बढ़ा कि छिपकलियों के जंगल में जा पहु
चा वे सब की सब आदमी की बु पाते ही इसके खाने को दौड़ीयां हातम ने देखा
हज़ारों टिकटिकयां चीतें और कुत्ते के बराबर सैकड़ों लूमड़ी औ गीदड़ के मा
निन्द दौड़ीं आतीं हैं डरा और कांपने लगा कि इस बला का आना बेसबब नहीं शाय
द मेरे ही खाने को आतीं हैं लेकिन लाचार हूं कुछ तदबीर नहीं कर सकता इतने में
वें नज़दीक आ पहुंचीं कि एक बुड्ढा दाहिने तरफ़ हाथ के नमूद हुवा और कहने
लगा ऐ जवान बुज़ुर्गों का कहना तूने न माना आख़िर हैरान हुवा हातम बोला
बुरा किया मैंने अपनी तक़्सीर पर शर्मिंदा हूं उस बुज़ुर्ग ने फ़र्माया मुहरा ख़िर्स
की बेटी का निकालकर ज़मीन पर डालदे आफ़त ग़ायब होंगीं उसने उसी वक़्त॥
मुहरे को जेब से निकालकर ज़मीन पर फेंक दिया पहले तो ज़मीन ज़र्द हो गई
फिर काली आख़िर सबज़ होकर सुर्ख़ हो गई छिपकलियां जो दौड़ी आतीं थी
दिवानियां होकर आपस में लड़ मरीं और तीन घड़ी के अर्से में तमाम हो गईं हातम
यह अहवाल देखकर बड़े तअज्जुब में हुवा और कहा कि इलाही इनमें कौन ऐसी दुश्म
नी हो गई जो एक एक को मारकर मर मिटीं यक़ीन है कि इस मुहरे का यह असर है॥
ख़ुदा का शुकर करना चाहिये जिन्ने ऐसे वक़्त में ऐसे बुज़ुर्ग को भेजा उसने मुझको य
ह भेद बताया और इस बलाओं से बचाया नहीं तो मुझको तिक्का बोटी कर डालतीं।
फिर ग़ौर करके देखा तो एक को भी उनमें से जीता न पाया इरादा किया कि मोहरे को

उठाई थी जो ये वहीं ध्यान आया शायद इसके उठाने से वे जी उठें और मुझे खा जा
वें तो जानकी जान जाय और मेहनत की मेहनत बरबाद हो जल्दी न कि यावरि ह
ये यहां तक सबर किया कि उनका मांस चमड़ा गल गया हड्डी पसली निकल आई ॥
तब हातम अपना मोहरा उठा कर आगे चला बाद थोड़े दिनों के एक जंगल अस्थ
धातका मिला हर एक वहां का टुकड़ा उसके पांव को छेद कर पैर की पीठ से पार हो
जाता था ज़खम पड़ जाते थे यह अपने कपड़ों से चिथड़े फाड़ फाड़ कर पैरों में बां
धलेता निदान इसके पांव चलनी होगये तब अपने दिल में कहने लगा कि ऐ हा
तम तेरे बराबर जहान में कोई बेवकूफ़ न होगा क्यों कि उस बुज़ुर्ग ने तुझसे बहुत
मना किया था कि बाबा दाहिनी तरफ़ निहायत बुरा है उधर से मत जाना और ख़ु
दा ने भी हो श कान आंख आदमी को इसी वास्ते दिये हैं कि भले बुरे को पहचाने।
संभल कर चले क़दम सोच कर धरे तू भला चंगा उसको छोड़ कर बाईं तरफ़ गया था
फिर यह क्या कम बख़्ती थी जो उसको छोड़ कर इस तरफ़ आया ख़ैर अब पछता
ने से कुछ फ़ायदा नहीं जो तुझ पर पड़े उसे झेल जिस तरह चला जाय चल ख़ुदा
निबाहने वाला है निदान हज़ार मेहनत और मशक़्क़त से उस जंगल को तै किया फि
र एक जगह बैठ गया पांव से कपड़ा खोल कर जो देखे तो तमाम पांव चलनी हो
गये हैं टुकड़े अस्थधात के हर एक सूराखों में नज़र आते हैं निकालने लगा जब नि
काल चुका पांव पर कपड़ा लपेट लेगड़ाता हुवा चल निकला और अपने जी में
ख़ुश था कि मैंने सब बलायों से छुटकारा पाया पर यह न जानता था कि और भी
आफ़त बड़ी आगे है चंद क़दम उस जंगल से आगे चला था जो वहां की बिच्छू
आदमी की बू पा कर दौड़े केतने उनमें बिल्ली के बराबर और केतने लूमड़ी के बरा
बर थे दुम उनकी गीदड़ कैसी पांव मुर्ग़ कैसे गरदनें तख़्ते के मानिन्द हातम
की निगाह जो उन पर पड़ी सहम कर कांपने लगा और ऐसा घबराया कि सुरत
जाती रही हांथ पांव फूल गये इधर उधर तकने लगा कि वही पीरमर्द मददगा
र फिर आ पहुंचा हांथ पकड़ कर कहने लगा ख़ातिर जमा रख हिरासां मत हो हा
तम बोला ऐ बुज़ुर्ग क्या कहूं मुझको ताक़त नहीं इन बिच्छूओं से क्योंकर मु
क़ाबिला करूं जिनके डंक ऐसे हैं कि अगर पत्थर पर मारें तो वह भी टुकड़े टुकड़े
होजाय उस मर्द बुज़ुर्ग ने फ़र्माया कुछ अंदेशा मत कर वही मोहरा ज़मीन पर
उनके रूबरू डालदे ख़ुदा की कुदरत का तमाशा देख हातम ने हर चंद मोहरे के

निकालने का क़सत किया हाथ ऐसे कांपने लगे कि निकाल न सका आख़िर उसी पी
र मर्द ने निकाल कर उसके हाथ दिया कि ख़ुदा का नाम लेकर ज़मीन पर डालदे हा
तम ने जो उस मोहरे को फेंका वहीं ज़मीन छिपकलियों के जंगल की तरह रंग बदल
ने लगी जबकि लाल हुई बिच्छू भी आपस में लड़ने लगे एक के डंक दूसरे के बद
न फ़र गया हातम खड़ा देखता था कि आपस में लड़के तीन दिन के अरसे में वे भी
तमाम होगये यह भी वहां रहा चौथे रोज़ उस मुहरे को उठा रवानः हुवा थोड़े दि
न के बाद एक शहर बड़ा देखलाई दिया यह उस में दाख़िल हुवा लोगों ने जो उ
से अजनबी देखा पास आकर पूछा ऐ जवान तूं किस राह से आया हातम ने
कहा दाहिने तरफ़ की राह से वे हैरान होकर कहने लगे कि ज़िन्दा क्योंकर बचा
क्या छिपकिलियों और बिच्छूवों औ बबूल के कांटों की मुसिबत अष्टधात के
जंगल और बिच्छूयों की आफ़त तुझपर न पड़ी हातम बोला ऐ अज़ीज़ो मैं इन
बलायों मे गिरफ़्तार हुवा था लेकिन मदद इलाही से छिपकलियों और बिच्छूयों
को ठिकाने लगाया अब उस राह मे सिवाय अष्टधात के टुकड़े और बबूल के कां
टों के कोई जानवर दुःख देने वाला बाक़ी नहीं सौदागर जो वहां उतरे हुए थे इस बा
त को हातम की ज़बानी सुनकर तैयार हुए कि अब इसी राह से चलिये दूर की राह
किस वास्ते इख़्तियार कीजिये क्योंकि यह रस्ता साफ़ होचुका है कुछ डर नहीं अ
गर सौदागर आया जाया करेंगे तो शहर भी आबाद होजायगा आख़िर लाद बांध
कर चलेगये यह ख़बर बादशाह को पहुंची कि सौदागर लोग एक मुसाफ़िर के कहने
पर जिस राह मे अष्टधात और बबूल का जंगल मिलता था उसी रस्ते चलेगये हुक्म
हुवा कि बहुत से हरकारे उनके पीछे पीछे चले जावें राह का अहवाल अच्छी तरह से
दर्याफ़्त करके फिर आवें और हातम को बुलाकर अपने पास रक्खा और कहा
ऐ मुसाफ़िर राह के तसदीये तूने बहुत से उठाये हैं थोड़े दिन यहां दम ले और आराम
कर हमारी सोहबत मे रह फिर जहां चाहियो वहां जाइयो पर मतलब उसका यह था
कि अगर सच्चा है तो बहुत अच्छा नहीं तो सूली दूंगा इस इरादे पर चन्द रोज़ उसको
रक्खा के तने निगहबान तायनात किये कि कहीं चला न जावे और वे लोग जो
राह की ख़बर लेने को गये थे उस क़ाफ़िले के पीछे पीछे लगे गये जगह बजग
ह उसके उतरने की निशानी पाई आफ़त कहीं न देखी जब सौदागर छिपकलियों
के जंगल से सही व सलामत गुज़रे वे फिरे थोड़े दिन के बाद आपने शहर में जाप
हुंचे बादशाह से अर्ज़ की कि जो कुछ इस मुसाफ़िर ने कहा था सब सच्च है अब कोई

आफ़त इस शहर में नहीं रही तब बादशाह ने हर एक तरफ़ इश्तिहार भिजवाया कि फ़
लानी शहर आफ़तों से पाक हो गई जिस्का जी चाहे वे खटके चला आवे और चला जा
वे फिर हातिम की बहुत सी मिन्नत की और कहा ऐ जवान मुझसे गुनाह हुवा है तू माफ़
कर और बहुत सा ज़र और जवाहिर उसके आगे रक्खा हातम बोला कुछ आपका
क़सूर ज़ाहिर में मुझे मालूम नहीं होता क्योंकि जिस रोज़ से तुम्हारे शहर में आया हूं
बहुत आराम से रहा हूं यह क्या सबब है जो तुम इतनी मिन्नत करते हो बादशाह ने
फ़र्माया तुम नहीं जानते कि ज़ाहिर में सलूक करता था और मेहमानों की तरह
रखता था लेकिन कितने लोग तुम्हारे ऊपर पोशीदः तैनात किये थे कि जब तक उस
जंगल की खबर न आवे तब तक कहीं जाने न पावे अगर वह झूठ होता तो शहर से
बाहर तुम्हें सूली दी जाती कि फिर कोई ऐसी अफ़वाह न उड़ावे इस बात को सुन कर
हातम ने अर्ज़ की कि यह तो निहायत इनसाफ़ है बादशाहों का कि सच्चों को सर्फ़
राज़ करें झूठों की गर्दन मारें तुम अबस उज़ुर करते हो मैं ने भी झूठ न कहा था कि पेशा
भले आदमियों का नहीं है और तुम्हारी भी इस बात से मैं आज़ुर्दे नहीं होता क्योंकि
आदिलों को योंहीं चाहिये खुदा तुमको अपनी पनाह में रक्खे मुल्क तुम्हारा हमेशः
तुम्हारे कब्ज़े में रहे और जो कुछ मुझे इनायत हुवा है मेरे किस काम का है क्योंकि
बारबर्दारी नहीं रखता मैं अकेले इसे किस तरह ले जाऊं बादशाह ने फ़र्माया तु
म खातिर जमा रक्खो मैं बारबर्दारी और थोड़े बहुत लोग निगहबानी के वास्ते सा
थ कर दूंगा कि तुम्हारे वतन तक पहुंचा दें हातम ने अर्ज़ की मुझे एक काम नस
ही आगे है जब तक उसे नहीं कर चुकूंगा वतन की तरफ़ मुंह भी न करूंगा जाना तो
एक तरफ़ बादशाह ने पूछा वह कौन सा काम है अगर हम को मालूम हो तो हम
भी उसमें शरीक हों कोताही न करें हातम बोला यह हज़रत की मेहरबानी है
लेकिन मैं सिवा खुदा के किसी से मदद नहीं चाहता पर एक रहबर साथ कर दी
जिये जो शहर कत्तान का रस्ता बतला दे यह भी एहसान से खाली नहीं बादशाह
ने फ़र्माया तुमको उस शहर में क्या काम है उसने कहा मैं ने सुना है कि हम्माम बा
द गर्द उसी ज़मीन के आस पास में है मैं उसके देखने का निहायत मुश्ताक़ हूं
बादशाह ने कहा ऐ जवान इस खयाल को अपने दिल से उठा क्योंकि जो कोई
उसकी तरफ़ गया जीता नहीं फिरा अपने तईं क्यों बला में डालता है वह बोला
जो होनी हो सो हो मुझे जाना चाहिये और वहां की खबर लाना ज़रूर है ग़रज़ हरचं
द बादशाह ने मना किया और नसीहतें कीं पर उसने न माना तब लाचार हो आ

दमी साथ करदिये कि शहर कन्नान की राह पर इस्को पहुंचादें हातम रुखसत हु
वा शहर के बाहर निकलकर रस्ता पकड़ा बाद थोड़े दिनों के एक जगह पर पहुंचा
राह देखलाने वालों ने अर्ज़ की कि हमारी सरहद तमाम हो चुकी यह सरहद श
हर कन्नान की है हमें रुखसत करो गरज़ उनको बिदा करके आगे बढ़ा जब नज़दी
क पहुंचा गिर्द नवाह के लोग इस्को देखकर कहने लगे ऐ जवान किस राह से आ
या है उसने कहा फ़लानी तरफ़ से अगरचे उसमें बहुत सी आफ़तें थीं लेकिन
खुदा ने उस राह को अपने करम से पाक किया आफ़तें दूर कीं मुझे सही सलामत
यहां तक पहुंचाया यह बात सुनके सबके सब खुश हुए हातम शहर कन्नान में
दाखिल हुवा और कारवां सराय में उतरा एक दिन दो मोती बेश कीमत और
दो लाल भारी मोल के कि उसके सानी के सर्कार आली में न थे एक डिबिया में रख
के बादशाह के दौलतसरा पर गया चोबदारों ने अपने दारोगा से कहा कि एक मुसा
फिर किसी शहर से आया है उसने हुज़ूर में जाकर अर्ज़ की हुक्म हुवा कि उस्का
अहवाल तहक़ीक़ करके आवो चोपदारों ने जाकर हातम से पूछा तुम कहां से
आये हो क्या काम तुमारा है उसने कहा मैं सौदागर हूं शाहाबाद से आना हुवा है
उम्मेदवार क़दमबोसी का हूं यह ओन्हों ने अपने दारोगा से कहा उसने जाकर
हुज़ूर पुरनूर में अर्ज़ की कि एक जवान तरहदार सौदागरपेशः शाहाबाद से आ
या है हुज़ूर की क़दमबोसी की आरज़ू रखता है बादशाह ने हुक्म किया कि बु
लालो वह जाकर हुज़ूरे आली में ले आये वह मुजरेगाह में खड़ा होकर आदाब
शाहानः बजा लाया और तारीफ़ करके आगे बढ़ा वह जवाहर जो परियों के स
रहद से लाया था नज़र गुज़राना बादशाह का रंग उस जवाहिर को देखकर मारे
खुशी के दमकने लगा उसे एक कुर्सी जड़ाऊ पर बिठलाया अहवाल पूछा उस्ने
अर्ज़ की कि एक मुद्दत से सौदागरी करता था अब इस दुनिया को हेच समझकर
तिजारत छोड़दी बादशाहों की मुलाक़ात तर्क की मुसाफ़रत इख्तियार की इस श
हर में आकर हज़रत की खूबियां नेक यहांतक सुनीं कि बे इख्तियार दौड़ आ
या क्योंकि ऐसे बादशाह आदिल का देखना भलाई दोनो जहान की और दौल
त हमेशगी की है बादशाह ने उस्की बात चीत सुनके निहायत मेहरबानी से फ़र्मा
या ऐ जवान थोड़े दिन इस मुल्क में अपनी बुदबाश कर और खुश होकर

रहु और हमको अपनी सोहबत से खुश कर यही मेरी नज़र है हातमने सुनकर
अर्ज़ की अगरचे हम लोगों को रोज़गार से ज़भी एक जगह रहना दुश्वार है परन्तु
मसे बादशाह साहेब रनु साफ़ होसल परवर की ख़िदमत में हाज़िर रहना स द न
हसे बेहतर है मैंने दिल और जान से क़बूल किया फिर बादशाह ने पूछा तुम कहां
पर उतरे हो उसने अर्ज़ की कारवाने सरा में यह सुनकर दारोग़ा को हुक्म दिया कि
एक मकान अच्छा साफ़ सुथरे में इनको ठहरावो और बावर्चीं से कह दो कि दोनों वक्त
खाने खात खान खाने के अच्छे पहुंचाया करे और केतने ख़िदमतगार भी काम का
जके लिये मुकर्रर करदो यह कहकर हातम की तरफ़ मुतवज्जह हुऐ कि ऐ जवान हमारी
खुशी इसीमें है कि वहां से उठ औ यहीं रहना इख़्तयार कर हररोज़ हमारी मजलिस
की रोनक बढ़ा और अपनी बातें मीठी से हमारे जी को खुश कर अलक़िस्सा हातम
वहीं आरहा बादशाह से सोहबत गरम की चुनाचेः ६ महीने इसी तरह गुज़र गये॥
निदान हारिश शाह ऐसा उसपर आशिक़ हुवा जो एक दम न देखता तो उसे चैन न प
ड़ता चा बार बुलवा ही लेता ग़रज़ जान और दिल से ज़ियादा दोस्त रखता था और
अक्सर अपने मुसाहिबों से उसकी तारीफ़ करके कहता कि अगर यह मेरे शहर में अ
पना रहना हमेशा इख़्तयार करे तो औक़ात बख़ूबी कटै वे भी यह सुनकर कहते ह
ज़रत बजा फ़र्माते हैं यह मर्द ऐसा ही खुश मिज़ाज औ शीरीं कलाम है इस कारहना
बादशाहों के सोहबत में बहुत मुनासिब है॥ एक दिन का ज़िकिर है हातमने जो हारिश
शाह को बहुत खुश देखा कई लाल औ ज़मुर्रद औ हीरे बेश कीमत फिर नज़र गुज़राने
शाहने फ़र्माया ऐ जवान मैं तेरा दिल से एहसानमंद हूं बार बार मुझे शर्मिंदा क्यों करता है
क्योंकि एक मुद्दत से तू मेरी ख़िदमत में हाज़िर है पर कुछ फ़र्माइश नहीं करता अब
मेरा जी यों चाहता है कि जो कुछ तुझे दरकार हो बेखटके मांग हातम बोला आपकी बदौ
लत सब कुछ मौजूद है किसी बात की कमी नहीं कुछ मुझको दरकार नहीं बादशाह ने
कहा यह कौन बात है मेरा तमाम मुल्क तेरा है जो कुछ तू चाहे अपने ख़र्च में ला या
किसु को दे डाल मुख़्तार है जो चाहे काम कारिंदों से लेने तेरे ताबेदार हैं क्या मजाल जो
उज़र करें हातमने कहा उमर बादशाह की बढ़े सलतनत हमेशा क़ायम रहे मेरे दिल
की आरज़ूऐं सब निकल चुकीं हैं मगर एक बाकी है सो मेरे दम तक दिल से न जायगी
बादशाह ने पूछा वह ऐसी क्या है क्योंकि अगर तू चाहे तो मैं अपनी बेटी भी तेरे ह
वाला करूं मुल्क औ माल तो क्या चीज़ है हातमने सिर झुका कर अर्ज़ की कि हज़रत
के बेटी को मैं अपनी बड़ी बहन जानता हूं यह ध्यान मेरे जी में नहीं लेकिन आरज़ू

औरही है पर उस सोच से मैं अर्ज़ नहीं कर सकता ऐसा न हो क़बूल न करें मैं कहकर
लोगों में शर्मिन्दा होऊं बादशाह फिर मेहरबानी से फ़र्माया ऐ अज़ीज़ मैं तेरा बड़ा
ऐहसानमंद हूं अगर तख़्त बादशाही भी चाहे तो अभी बख़्शदूं सिवाये बेगम के
जो चाहे सो ले तेरा ही है हातम ने हाथ जोड़कर अर्ज़ की यह आप क्या फ़र्माते हैं
वे मेरी बजाय वालद के हैं और तख़्त बादशाही आपको सलामत रहे मेरी अ
र्ज़ कुछ और ही है तब तो हारिस शाह ने कहा भाई ख़ुदा के वास्ते कहो जल्द क
ह मेरा जी उक्ता गया वह क्या है उसने कहा आप कौल दें तो मैं अर्ज़ करूं बाद
शाह ने वोंहीं वचन दिया और क़सम खाई तब हातम ने अर्ज़ की कि हम्माम
बादगर्द के देखने की एक आर्ज़ू है जो हुक्म हो तो उसकी सैर करूं जी की गर्द
धोऊं बादशाह ने जो यह बात सुनी फ़िकरमंद होकर सिर झुका लिया चुप
का हो रहा हातम ने जो बादशाह को इस हालत में फ़िकरमंद देखा पूछा हज़
रत इतनी फ़िकर में क्यों हैं मैं हर तरह से आपका ताबेदार हूं जो आपकी मर्ज़ी
होगी बजा लाऊंगा बादशाह ने सिर उठाकर फ़र्माया ऐ अज़ीज़ क्योंकर ऐसा फ़ि
करमंद न होऊं मुझे कोई तरह के अंदेशे हैं पहले तो मैंने क़सम खाई है कि किसी
को हम्माम बादगर्द की तरफ़ न जाने दूंगा अगर तुझको वहां के जाने की परवा
नगी दूं तो कौल झूठा होता है दूसरे यह कि तुझसा जवान ख़ूबसूरत नेकख़
सलत अपनी जान से हाथ धोवे यह जगह भी अफ़सोस की है तीसरे यह कि जै
सा तू है कोई ऐसा आजतक मेरे पास नहीं आया चौथे यह कि अगर तुझको
रुख़सत करूं दर्द जुदाई क्योंकर सहूं पांचवें यह है अगर परवानगी न दूं तो अ
भी के वचन से झूठा होता हूं यह बादशाहों के हक़ में मुनासिब नहीं क्योंकि अ
गर झूठा मशहूर होऊं तो फिर कोई मेरी क़सम का एतबार न करेगा अ
क्सर सल्तनत के कामों में ख़लल पड़ेगा हातम ने अर्ज़ की अगर ख़ुदा चाहेगा
तो जल्द ख़ैराफ़ियत से आपके ख़िदमत में फिर हाज़िर होता हूं किसी तरह
का अंदेशा ख़ातिर में न लाइये बेखटके मुझे रुख़सत दीजिये क्योंकि मैं इस
काम से मरमक़दूर हाथ उठा नहीं सकता इस वास्ते कि मुनीरशामी शाह
ज़ादा हुस्नबानू बज़ेरख़ सौदागर के बेटी पर आशिक़ हुवा है वह सात सवा
ल रखती है और शाहज़ादा सवाल पूरा न कर सका मैंने उसपर रहम खाकर
अपने ज़िम्मे लिये बल्क कौल दिया कि मैं इसको पूरा किये बिन न रहूंगा चुना

छे ई सवालोंका जवाब दे चुकाहूं अब येही एक सातवां सवाल बाकी रह गयाहै ॥
खुदाके दर्गाहसे तवक्कोर रखताहूं कि वहां भी जापहुंचूं और हम्माम बादगर्द का अ
हवाल तमाम दर्याफ़ कहूं और हस्नबानू से जाकर कहूं और ब्याह उसका उसी शाह
ज़ादेके साथ करवादूं कि एक मुद्दत बाद वह आशक़ अपनी मुराद को पहुंचे इसबा
तको सुनकर बादशाह ने कहा ऐ जवान शाबाश तेरे हिम्मत पर और तेरे मा बाप
पर कि तूने गैरके वास्ते अपनी तईं रंज और मेहनतमें डाला यहांतक कि अपना मर
ना क़बूल किया इसलिये कि उधरका गया हुवा फिर इधर नहीं आया बहुत से शा
हज़ादे और सौदागर बच्चे वहीं जा जाकर खपे सलामत कोई नहीं फिरा मुकर्रर उ
नको भी उसी नेमें जा हो बारे यह कहा कि तूं किस शहर का रहने वालाहै और नाम ते
रा क्याहै उसने कहा वतनमें रायमनहै नाम हातम बटाईका यह सुनतेही हारिश शाह
उठ बग़लगीर हुवा और अपने बराबर उसको बिठाकर कहने लगा निशान बादशाहत
का तेरे पेशानीसे ज़ाहिरहै और नेकनामी दुनियांके पर्दे पर मशहुर है बल्कि और ज़िया
दः होगी यहांतक कि नाम तेरे क़यामत तक रहेगा और जो कोई ऐसा पैदा होगा तो
तेरा सानी कहलावेगा यह कहकर आपने वज़ीर से फ़र्माया कि साम्हान एक हम्माम
बादगर्द के दर्बानको ख़त लिखकर इसके हवाले करो बाद उसके उठ खड़ा हुवा हातम
को गले लगाकर ऐक आह सर्द पुर दर्द से खींची और आब दीदः हुवा कितने लोग सा
थके के रुख़्सत किया जबतक हातम नज़र आया यह रुकरकी बाधे रहा जिस वक़्त आं
खोंसे ओझल हुवा बादशाह तख़्तसे उठकर ग़मज़दों की तरह से महलमें चला गया
और हातम ने शहर से निकलकर जंगलकी राह ली ग़रज़ साथियों से बातचीत कर्ते
हुवा चला जाताथा बाद पंद्र रोज़के हम्माम नज़र आने लगा हातम ने उनसे पूछा य
ह क़िलाहै या पहाड़ क्या देखलाई देताहै ओन्होंने अर्ज़ की ये ही हम्माम बाद वो
जाहै देखनेमें नज़दीकहै पर सात रोज़में पहुंचेंगे यह कहकर आगे बढे सातवें
दिन दर्वाज़े के नज़दीक जापहुंचे हातम क्यादेखताहै वहां एक पहाड़ के गिर्द में
लश्कर बड़ा पड़ाहै पूछा उसने यह फ़ौज किसकीहै साथियों ने अर्ज़ की हम्माम
बादगर्द के दर्बान की। आख़िर हातम उस लश्करमें दाख़िल हुवा और उसके सा
थियोंके जो अपने दोस्त आश्नाथे आपसमें मिले और पूछने लगे कि तुम्हारा आ
ना कैसा कर हुवा उन्होंने कहा इस जवान के साथ बादशाह ने भेजाहै और एक ख़
त भी दर्बानको इसके वास्ते लिखाहै अल्क़िस्सः साम्हान एक कार दे देखने में आया।

साहेब सलामत करके खत हवाले किया वह उठकर गले मिला और खत सिरपर
रखलिया सरनामे पर बादशाह की मुहर देखकर चूमीं बाद उसके खोलकर पढा
तो उसमें यों लिखाथा कि इस जवानके साथ मैंने कौल किया था इसवास्ते इसे भे
जा है अगर तू इसको समझाकर किसी सूरत से उलटा फेर देगा तो हम खुश होंगे
और तूं सरफ़राज़ होगा और जो यह किसी तरह से न माने तो हम्माम में जाने दी
जो पर भरमक़दूर समझाने में क़सूर न कीजियो वहर इसको पढतेही उठखड़ा हु
वा और हातम को बड़ी ताज़ीम से कुर्सीपर बिठलाया शर्तें मेहमानदारी की बखू
बी बजालाया निदान चंदरोज़ मुवाफ़िक़ हुक्म बादशाह के समझाया बुझाया
किया पर पत्थर को जोंक न लगी उनने उन नसीहतों के जवाब में यों कहा तुम इस
ख़याल से सिर उठाओ जबकि मैंने कहना बादशाह का न माना तुम्हारी कब सुन
ताहूं मुझे तसदीया मत दो बेहतर है कि जल्द रुखसत करो सामान ऐरकने जो दे
खा कि यह मेरी नसीहत हरगिज़ नहीं सुनता बिन जाये नहीं रहेगा लाचार बा
दशाह को अर्ज़ी की कि यह जवान अपना हठ नहीं छोड़ता और नसीहत कि
सी की नहीं मानता अब जो हुक्म हो बजा लाऊं बादशाह को जब वह अरज़ी
गुज़री पढकर उसने सिर धुना और आंखों में आंसू भर लाया आखिर लाचा
र होकर लिख भेजा अगर वह राज़ी नहीं होता मुज़ाहम मत हो जाने दो शायद
उसकी उमर तमाम हो चुकी हम्माम का बहाना है वहां तो सामान ऐरक मुन्तज़िर
जवाब का था और हातम को अपने चलने की पड़ रही थी ग़रज़ इधर से औ
उधर से आज कल इसी हैस बैस में फ़रमान बादशाही आपहुंचा कि इसको मत रो
को तरह दो उसपर भी सामान ऐरकने बतौर नसीहत के फिर कहा ऐ अज़ीज़
अब भी कुछ नहीं गया अगर ज़िन्दगी चाहता है तो बाज़ आ नहीं तो पछ
तावेगा बल्कि जान से जायगा हातम ने कहा यह कहना अबस है खुदा के
वास्ते मुझे मांफ़ रख कहीं जाने दे तब लाचार होकर सामान ऐरक उठखड़ा
हुवा हातम को हम्माम के दर्वाज़े पर लेगया वहां भी खड़े होकर बहुत सा स
मझाया पर कुछ काम न आया हातम ने ऐसा दर्वाज़ा अपनी तमाम उमर न
देखा था ज्यों आंख उठाकर ग़ौर की तो मोटे ख़त से उसपर लिखा देखा कि य
ह तिलस्मात कयूमर्स बादशाह के वक़्त में बना है निशान इसका मुद्दतों रहे
गा और जो कोई इस तिलिस्मात में जायगा जीता न निकलेगा वहीं मर रहा

प्यासा हैरान रहैगा और जो किसी की जिंदगी है तो एक बाग़में दाख़िल होगा वहांके मेवे खायगा अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे करेगा पर मक़दूर नहीं जो बाहर निकलसके जो इसलिखेको हातमने पढ़ा दिलमें ध्यान किया कि जो कुछ हक़ीक़त थी दर्वाज़ेपर लिखी पाई अन्दर जाना क्या ज़रूर है चाहता था कि वहांसे फिरे वहीं ख़ातिरमें लाया कि हुस्नबानू जो उस्के अंदरका अहवाल पूछे तो क्या कहूंगा बुशर्मिन्दा होनापड़ेगा अब जो होनी हो सो हो अंदर चला चाहिये फिर लोगोंको रुख़सत किया आप अंदर पैठा दसबार कदम चलकर जो पीछे फिरके देखा तो न लोगों हींको पाया न दर्वाज़ा ही नज़र आया मगर एक जंगल सुनसान मौजूद था और कुछ दिखलाई न हीं दिया फ़िकरमें हुवा कि अभी दसबारह क़दमसे ज़ियादा चलने की नौबत नहीं पहुंची थी दर्वाज़ा नज़रसे ग़ायब हुवा बल्कि उस्की निशानी भी दे खलाई नहीं देती जिसतिसतरह उसको ढूंढिये फिर बाहर निकलिये ग़रज़ तमाम दिन उसी तलाशमें फिरा पर दर्वाज़ा न मिला तब दिलमें कहने लगा हम्माम का बहाना था कि पांव रखते ही अजलके हांथमें पड़ गया अब बिन जान दिये छुटकारा नहीं ग़रज़ शाहिने बांये देखकर चल निकला पर हैरान इधर उधर भटकता फिरता था बाद थोड़े दिनोंके एकतरफ़ का रस्ता पकड़ा थोड़ीदूर गया होगा कि एक आदमी की सूरत नज़र पड़ी यह ख़याल किया कि मुक़र्रर आगे बस्ती हो उसीकी तरफ़ रवाना हुवा क्या देखता है कि वह भी इधर ही को आता है जब नज़दीक आपहुंचा तब उस सूरत मि ल्सआतने सलाम किया और एक आईना बग़लसे निकालकर हातमके हांथमें दिया हातमने उस्कोलेकर अपना मुंह देखा और उससे पूछा कि ह म्माम यहांसे नज़दीक है और क्या तूं हज्जाम है जो आरसी देखाता है उसने कहा अलबत्तः फिर हातमने पूछा तूं हम्माम छोड़कर किधर जाता है वह बोला मैं हम्मामी हूं जिसकिसको देखता हूं लेजाकर हम्माममें नहलाता हूं फिर उम्मेदवार इनामका होता हूं अगर आपभी मेहरबानी फ़र्माइये और मेरे साथ चलकर ग़ुसल करें तो मेरे दिलका मैल जाता रहे आपकी बदौलत कुछ न कुछ पाही रहैगा हातमने कहा बहुत बेहतर मेरेभी बद नपर सफ़रकी गर्दसे मैल जम रहा है चाहता हूं कि इसे छोड़ाऊं और ख़ू

तरह से मलमल कर नहाऊं मगर तू अकेला ही है या और कोई शरीक भी रखता है
उसने अर्ज़ की कि हैं तो बहुतेरे पर आज गुलाम हीं की पारी है गरज़ आगे आगे हातम
म पीछे पीछे नाई खुशी खुशी चले जाते थे दो तीन कोस चले होंगे कि एक गुम्बज़ आ
सामने से लगा हुवा नज़र पड़ा हातम नज़दीक पहुंचा तब वह हज्जाम हम्माम के अंदर ग
या और उसको बुलाया वह ज्यों हीं दाखिल हुवा दर्वाज़ा बंद हो गया उसने घबरा कर जो
पीछे देखा तो ठीक बंद हो गया है पर नज़र आता है इस उम्मेद पर आगे बढ़ा कि जब
चाहूंगा निकल आऊंगा आखिर हम्मामी उसी हौज़ पर ले गया और कहने लगा
कि आप इसमें उतरें तो बदन पर पानी डालूं मैल धो डाऊं हातम ने कहा कि मैं कप
डे उतार लूं तो इसमें उतरूं मगर बे लुंगी यह भी नहीं हो सकता तब हम्माम ने एक लुंगी
साफ़ सुथरी हवाले की हातम ने उसको बांध कपड़े उतारे हौज़ पर रख दिये और आप
उतर पड़ा फिर हज्जाम ने एक जड़ाऊ तश्त गरम पानी से भर कर उसके हाथ में दिया उस
ने सिर पर डाल लिया उसने फिर भर कर इसके हाथ में दिया इसने उसे भी अपने ऊपर उल
ट लिया तीसरे मर्तबः ज्यों हीं सिर पर डाला त्यों हीं एक तड़ाका हुवा हम्माम अंधेरा हो
गया बाद एक दम के अंधेरा जाता रहा तो क्या देखता है कि न हम्माम है न हज्जा
म एक पत्थर का तराशा गुमज़ है उसका तमाम सहन पानी से भरा नज़र आता है
एक दम न गुज़रा था कि पानी पिंडलियों तक आ गया हातम आजिज़ हो कर दे
खने लगा और वह बढ़ कर घुटनों से भी ऊपर पहुंचा तब तो यह घबराया कि इ
सही पानी हर दम बढ़ा जाता है निकलने की सूरत नज़र नहीं आती तो पस मालू
म होता है कि इसमें डूब मरूंगा निदान घबरा कर दर्वाज़ा चारों तरफ़ ढूंढने लगा
और सिर टकराता फिरा पर किसी न पाया इतने में पानी डुबाऊ हो गया यह पैराक
था पैरने लगा और अपने जी में कहने लगा कि हम्माम से जो लोग नहीं निक
लसकते यह भेद है कि तैरते तैरते थक के डूब जाते हैं मैं भी हाथ पाव मरते म
रते डूब जाऊंगा क्योंकि कोई सूरत बचने की नज़र नहीं आती बाहर होना तो
मुश्किल है शायद इसी दिन के लिये मुशेम का अर्थ करता था उसका कहना न माना
अफ़सोस है कि कुमौत मुवा यह कह कर जी को ढाढ़स बांधने लगा कि खुदा
करीम कारसाज़ है इतना मत घबरा दाना की नाव पहाड़ पर चढ़ती है और
जो यों हीं आई है तो भी अच्छा क्योंकि तूने कुछ अपने मज़े के वास्ते यह मुसी
बत नहीं इख्तियार की बल्कि मरते हुवे के जिलाने को अपने जान पर जो लीं

उठाई है चाहिये कि खुश रहे अगर हज़ार जान खुदा की राह में जावे तो जावे कुछ
ग़म नहीं ग़रज़ इसी तरह के बातचीत से दिल को तसल्ली देता था इतने में पानी इ
तना बुलंद हुवा कि सिर उसका गुमज़ में जा लगा और यह निहायत मांदा हुवा
था हाथ पांव शल होगये थे नज़दीक था कि बैठ जाय वहीं एक ज़ंजीर लटक
ती दिखलाई दी हातम ने बेइख़्तियार दोनों हाथों से पकड़ ली कि भला एक साथ
न तो इस मल्लूं इतने में फिर वैसी ही आवाज़ हुई वह गुमज़ के बाहर हो गया अपने
तईं एक जंगल में खड़ा पाया हर तरह से देखने लगा सिवाय मैदान के कुछ दि
खाई न दिया जिसमें खुश हुवा कि बारे उस आफ़त से मैंने नजात पाई और ति
लस्मात से खलासी पाई आगे बढ़ा ग़रज़ तीन दिन तक भटकता फिरा चौथे दि
न एक इमारत आलीशान चमकती हुई नज़र आई आबादी की उम्मेद पर उ
सी तरफ़ चला जब नज़दीक पहुंचा एक बाग़ खुशक़िता देखा जी में सोचने ल
गा कि इस पहाड़ में यह बाग़ किसने बनाया है अलबत्तः इसके नज़दीक कि
सी तरफ़ बस्ती होगी जब नज़दीक पहुंचा दर्वाज़ा खुला पाया चला गया कई
क़दम जो बढ़के फिर कर देखा दर्वाज़े का निशान भी न पाया तब तो फ़िकर में
र हुवा कि यह क्या बला है इतने तसदीये उठाये अब तक इस तिलस्म के न निक
ला आख़िर लाचार होकर एक मकान की तरफ़ रवानः हुवा वहां तरह बतरह
के मेवों से दरख़्त लदे हुए देखे भूखा तो था ही मेवे तोड़ तोड़ खाने लगा जितना
खाता था पेट न भरता था ग़रज़ सो मन के क़रीब खाया पर पेट न भरा लेकिन
कुछ थक गया फिर सैर करता तमाशा देखता एक बारह दरी के नज़दीक जा
पहुंचा उसके नज़दीक बहुत आदमी पत्थर के नंगे मुंगे खड़े थे मगर एक ए
क लंगोट बांधे थे सो भी पत्थर का हैरत में आगया कि यह क्या भेद है इसको
गिरह क्योंकर खोलूं इसी फ़िकर में था इतने में एक तूती ने आवाज़ दी कि ऐ
जवान क्यों खड़ा है यहां जो आया है मगर जान से हाथ धो था है हातम जो सि
र उठाया तो एक तूती पिंजरे में देखी फिर यह इबारत महल पर लिखी पाई कि
ऐ बंदे ख़ुदा इस हम्माम बादगर्द से जान सलामत न ले जायगा क्योंकि यह ति
लस्मात कयूमुर्स बादशाह का है एक ऐज़ का ज़िकर है बादशाह शिकार खे
लता हुवा इस जगह आ निकला था इत्तिफ़ाक़न उसने एक हीरा वहां पड़ा
देखा उठा लिया फिर जो उसको तुलवाया तो एक सौ पैंतीस १३५ मर्ती के वज़न

मैंपाया हैरान होकर मुसाहिबों से पूछा कि इसका सानी मिल सकेगा या नहीं औरों
ने अर्ज़ की हज़रत सलामत हमने तो अपनी उमर भर में न ऐसा देखा है न सुना है
ब उसने कहा लाज़िम है कि इसको इसी जगह रक्खूं कि किसी के हाथ न लगे य
ह बात ठहरा कर यह हम्माम बादगर्द का तिलस्मात बनाया और उस तूती
को वह हीरा निगलवा कर पिंजरे में रखके यहां लटका दिया और [illegible] पर तीर
कमान रख दिई इस वास्ते कि जो कोई इस तिलस्म में दाखिल हो और वह बाहर
निकलने का क़सद किया चाहे तो यह तीर औ कमान उठा ले इस तूती के सिर में
एक तीर मारे अगर लगा तो वह वहीं इस तिलस्मात से बाहर हुवा औ हीरा भी उस
ने पाया नहीं तो पथ्थर को हो जायगा हातम ने उसको पढ़कर फिर औरों की तर
फ़ देखा कि जहां के तहां खड़े हैं हिल भी नहीं सकते अंदेशा किया कि ऐ हातम
अगर तूं इस तिलस्मात से बाहर न निकला तो अपनी जान इन्हीं के [illegible] बेह
तर यह है कि जल्द इन्हीं में मिल जा चुपका हो रह जो अपनी तरं बचावेगा जब
तक जीता रहेगा रंज ही में रहेगा किसी तरह वीर से बाहर न हो सकेगा और मुनीर
शामी तुझ तेरे इन्तिज़ार में तबाह हो गया यह सब उलझेड़े बखेड़े ज़िन्दगी ही के
हैं पस बेहतर यह है कि जीते से हाथ उठा पत्थर हो जा सब फ़िकरों से दूर हो जा
यगा खुदा कारसाज़ है अपने कार करही लेगा यह बातें जी में ठहरा कर कुर्सी
के पास गया और खुदा को याद करके तीर और कमान उठा एक तीर उसे लगा
ही बैठा तूती भड़क गई तीर खता करके पीं जेरकी छत में जा लगा हातम घुटनें
तक पत्थर का हो गया वह जहां बैठी थी वहीं आ बैठी और कहने लगी ऐ जवान
जा यहां से यह मकान तेरे लायक नहीं है हातम उस जगह से उछल कर तीर कमा
न समेत सैकड़ों कदम पीछे जा पड़ा और पांव उसके ऐसे बोझल हो गये थे जो उठा न
सकता था अपनी इस हालत पर आंसू भर लाया और कहने लगा यह क्या हरकत
है कि सख़राबी और मुश्किल से एक मुद्दत में तो यहां तक आ पहुंचा अब ऐड़ि
यां रगड़ रगड़ कर मरना क्या फ़ायदा है इससे बेहतर यह है कि एक तीर और लगा
कर औरों ही पुतलों में शामिल हो जाय सोचकर दूसरा तीर फिर मारा वह भी खाली
गया यह नाभी तक पत्थर का हो गया तूती ने फिर यही बात कही ऐ जवान परे स
रक यह जगह तेरे काबिल नहीं हातम आप से आप [illegible] उछल कर व
हां से परे नज़दीक पुतलों के पहुंचा ज़ार ज़ार रोने और कहने [illegible]

नामुराद कोई नहीं जो तीर मेरा उलटा काम करता है फिर एक आह सर्द दिलपुर्दर्द
से खींची और कहा कि ऐ हातम अपनी मौत आंखों से न देखा चाहिये बेहतर है
कि आंखों पर पट्टी बांध और यह एक तीर जो बाक़ी रह गया है खुदा के भरोसे पर
इसको भी लगा क्योंकि ऐसा जीना मरने से बत्तर है निदान तूती को ताक आंखों पर
पट्टी बांध खुदा का नाम कह के वह भी तीर मारा वहीं तूती के मुंह पर वार कर
गया तूती पिंजरे से बाहर निकल पड़ी इतने में एक आंधी आई घटा उठी बि
जली कड़कने लगी अंधेरा हो गया सुनने से रह गया शोर और गुल ऐसा ब
लंद हुवा कि हातम बेहोश होकर गिर पड़ा किस वहम में कि मैं भी पुतला हो गया
बाद ऐक दम के आंधी हवा हो गई अबर जाता रहा शोर और गुल मौकूफ़ हो
गया सूरज निकल आया हातम ने जो आंखें खोली तो अपने तईं पुतलों के
बराबर पड़े देखा जब खूब होश आया और जी ठहरा हवास दुरुस्त हुऐ तो क्या
देखता है कि न वह हम्माम है न बाग़ न कुर्सी न पिंजरा न तूती मगर हीरा ज़मी
न पर पड़ा तारा सा चमक रहा है हातम उठ खड़ा हुवा और दौड़कर उठा लिया॥
सिजदे शुकर अदा किया वे पुतले भी सब के सब आदमी हो गये हातम को
देखकर कहने लगे ऐ जवान तूं इस जगह क्योंकर सलामत रहा वह बाग़ किधर
गया हम्माम क्या हुवा तब उसने तमाम हक़ीक़त कही वे दौड़कर उसके पांव पर
गिर पड़े और कहने लगे आज से हम सब तुम्हारे गुलाम हो चुके और यह ऐ
हसान जीते जी न भूलेंगे इस बात को सुनकर हातम ने उनकी बहुत सी तसल्ली
और खातिरदारी की और अपने साथ लेकर शहर कत्तान की रवाना हुवा पर
यह तमाशा था कि मैं किस तरफ़ जाता हूं और शहर कत्तान किधर है यह न
जानता था थोड़ी दूर चला था कि वहीं दर्वाज़ा नज़र आया जिस राह से दाखि
ल हुवा था जो उस्से बाहर निकला सामान ऐक का लशकर दिखलाई दिया
यह उधर ही मुतवज्जह हुवा और उस्से जा मिला वह उसको देखते ही उठा निहा
यत खुशी से बग़लगीर हुवा और एक कुर्सी जड़ाऊ पर बिठलाया और बहुत
से लोग साथ करके शहर किन्नान की तरफ़ रवाना किया चंद रोज़ के बाद शहर
में दाखिल हुवा हारिस शाह से मुलाक़ात की बादशाह ने निहायत मेहरबा
नी और नेक [illegible] ई बराबर अपने बैठाया अहवाल पूछा उसने हक़ी
क़त वहां की ज्यों की त्यों अर्ज़ की और हीरा बादशाह के हुज़ूर रख दिया कि

कि हज़ूर की नज़र है लेकिन इतना चाहता हूं कि ऐक बार हुस्नबानू को दिखला
ऊं क्योंकि उसको यक़ीन आजावे फिर ख़िदमत शरीफ़ में भेज दूंगा बादशाह खु
श हुवा और फ़र्माया कि ऐ हातम यह हीरा मैंने तुझी को बख़्शा क्योंकि हम्माम मेरे
सरहद में था लेकिन क़यूमुर्स बादशाह ने हम्माम बादगर्द का तिलिस्मात इसी वा
स्ते बनाया था कि जो ऐसे तोड़ेगा हीरा वही पावेगा और खुदा ने भी तेरे ही वास्ते र
खा था तुझे मुबारक हो हातम सुनकर खुश हुवा और आदाब बजा लाया फिर
अर्ज़ किया कि ऐ बादशाह ये बेचारे जो मेरे साथ आये हैं पत्थर के होगये थे
अकसर इनमें से उमराज़ादे और सौदागर बच्चे हैं बिलफ़ेल मोहताज असबाब
और सवारी के हैं उम्मेदवार हूं कि एक एक घोड़ा और कुछ कुछ असबाब औ
ख़र्च राह हर एक को इनायत हो जो अपने अपने वतन में आराम से पहुंचे ह
ज़रत को दुआ करें बादशाह ने उसके कहने के बमूजिब किया फिर हातम
भी उससे रुख़सत हुवा तब बादशाह ने बहुत से लोग औ असबाब औ सरंजा
म राह का उसके साथ करके निहायत शान और शौकत से रवाना किया हात
म कई महीने के अर्से में बड़े ठाठ से शाहाबाद में दाख़िल हुवा लोगों ने पहचा
नकर हुस्नबानू को ख़बर दी कि वह जवान जो हम्माम बादगर्द की ख़बर को
गया था निहायत धूमधाम से आया है हुस्नबानू ने चोपदारों के मिर्दहे को
भेजा कि मेरी तरफ़ से बाद सलाम के कहो अगर तकलीफ़ न हो तो इसी त
रफ़ चले आवें वह दौड़ा गया और यह पैग़ाम और सलाम हातम को पहुंचा
या वह सुनकर उसके महल की तरफ़ मुतवज्जः हुवा ग़रज़ हुस्नबानू ने अं
दर बुला लिया और ऐक जड़ाऊ कुर्सी पर बिठलाया अहवाल पूछा उसने त
माम हक़ीक़त इन मर्मियों से बयान किया कि वह सुनते ही ठंडी होगई फि
र हीरा भी निकाल कर दिखलाया तब हुस्नबानू ने सिर नीचा कर लिया और
मारे शर्मिन्दगी के पसीने पसीने होकर चुप ही रह गई हातम ने कहा कि मैं
अपना वादा पूरा कर चुका हूं अब तू भी वफ़ा कर उसने आहिस्तगी औ न
र्मी से अर्ज़ किया कि मैं भी तेरी हो चुकी हूं जो चाहे सो कर जिसको चाहे उसे
बख़्श अपने पास रखा चाहता है तो रख मुख़्तार है इस बात को सुनकर
शाहज़ादे ने कहा जो कुछ तू ने कहा मैंने किया जो मैं कहूं सो तू कर सच तो
यह है कि मैंने यह मेहनत और मशक़्क़त अपने वास्ते नहीं खींची बल्कि
खुदा की राह पर मुनीर शामी शाहज़ादे के लिये लाज़िम है कि तू उसे क़बूल कर

क्योंकि वह एक मुद्दत से तेरे जुदाई में रो रहा है और तेरे फ़िकर दर्द से जान
खो रहा है अपने बीमार इश्क़ को शर्बत वसाल पिलाना ही भला है इसमें क़सूर
करना बुरा है हुस्नबानू बोली कि अब तुम मेरे बाप की जगह हो जो मेरे हक़
में मुनासिब जानो सो करो अगर वह मेरे खाविंद होने के लायक़ हो तो मुझे
कुछ उज़्र नहीं यह सुनते ही हातम ने मुनीर शामी शाहज़ादे को कहला
भेजा कि तुम पोशाक बदल सजसजा निहायत ज़र्क़ बर्क़ से मेरे पास-
आवो शाहज़ादा बड़े ठस्से से खुशी ब खुशी आया हातम ने उसको भी
एक जड़ाऊ कुर्सी पर अपने पास बिठाया हुस्नबानू ने जो पर्दे में से झांक
के देखा हज़ार जान से आशिक़ हो गई और नीची निगाहें किये शर्म से
उठकर दूसरे मकान में चली गई हातम भी मुनीर शामी को लिये हुये
कारवानेसराय में आया रात की रात वहां रहा सुबह को हुस्नबानू ने ए
क मकान निहायत आलीशान खाली करवा दिया हातम उसमें मुनीर
शामी समेत दाख़िल हुवा नौबत रखवा दी ब्याह की तय्यारी शुरू हुई
मजलिस खुशी की जमाई बाजे बतौर बादशाहों के बजवाये दूसरे
दिन उधर से मेंहदी भी उसी ठाट से आई सुबह को ब्याह की तय्यारी होने
लगी मकानों के फ़र्श बदले बरातियों ने कपड़े झमझमाते पहने तायफ़े
बहुत से बुलवाये दुरुस्त ठाट रौशनी के मीनाकारी की टट्टियों समेत दु
लहिन के महल तक बंधवाये आतशबाज़ी की चादरें भी ज़ावज़ा क़
रीने से खड़ी करवाईं लाखों ग़ज़्नसितारों के गड़वाये आधी रात गये॥
निहायत तजम्मुल से मुनीर शामी ब्याहने चढ़ा ॥ ❀ ॥

॥ बैत ॥

वह नौशा का घोड़े पर हो नासवार ॥ वह मोती का सेहरा जवाहिर निगार ॥
ठहर कर वह घोड़े का चलना सम्हल ॥ हुमां की वह दोनो तरफ़ मोरछल ॥
वह फ़ानूस आग़ेज़ मुर्रद निगार ॥ कि हो सब ज़मीना तिन्हों पर निसार ॥
हज़ारों तमामी के तख़्ते रवां ॥ और अहले निशात उन पर जिलवे कुनां
वह शहनाइयों की सी हानी धुनें ॥ जिन्हें गोश ज़ुहरा मुफ़स्सल सुनें ॥
अनारों के कसरत से गुलज़ार हुई थी राह फुलझड़ियों की रौशनी से चौ
दवीं रात की चांदनी मात सि तारों की चमक से दिन हो गया था रात ॥
ग़रज़ तमाम आतशबाज़ी की कैफ़ियत रौशनी की कसरत व बरातियों का